आज़ादी का
अमृत महोत्सव

प्रेरणा

2022-23

डॉ.अवधेश कुमार जैन
संपादक

डॉ.जी.पी.चौधरी
प्राचार्य/संरक्षक

शासकीय कमला नेहरु महिला महाविद्यालय दमोह (म. प्र.)

प्राचार्य की कलम से...

अत्यंत हर्ष के साथ महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका प्रेरणा 2022-23 इस आशा और विश्वास के साथ समर्पित कर रहा हूँ,कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय अपने संस्कारों के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर हो।

दमोह जिले का एकमात्र शासकीय कन्या महाविद्यालय विभिन्न शैक्षणिक संकायों कला,वाणिज्य,विज्ञान,गृह विज्ञान एवं कम्प्यूटर छात्राओं के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को बढ़ा रहे हैं।वहीं क्रीड़ा विभाग द्वारा खेलकूद एवं राष्ट्रीय सेवा योजना तथा विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना उन्हें सामाजिक व आर्थिक विकास की राह दिखाने को सतत् प्रयासरत है।

महाविद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं के उत्साह,उमंग एवं लगनशीलता को ध्यान में रखते हुए मुझे महाविद्यालय विकास के प्रति एवं अकादमिक विकास के प्रति प्रेरणा प्राप्त होती है। मुझे लगता है कि मैं उनके हित में यदि कुछ कर सकूँ तो मेरा दायित्व सफल माना जायेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त स्टाफ संपादक मंडल एवं छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाओं सहित।

डॉ.जी.पी.चौधरी
प्राचार्य
शा.कमला नेहरू महिला महाविद्यालय
दमोह (म.प्र.)

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय
दमोह (म. प्र.)

प्रेरणा

2022–23

प्राचार्य/संरक्षक

डॉ.जी.पी.चौधरी

संपादक

डॉ.अवधेश कुमार जैन

प्राध्यापक हिन्दी

संपादक मंडल

डॉ.रेखा जैन

डॉ.मालती नायक

डॉ.आराधना श्रीवास

सम्पादकीय–

अपनी बात

जीवन को प्रेरणा देने वाली,प्राणवान बनाने वाली शक्ति 'शब्द' ही है। हमारे मुख से निकले शब्दों में एक चमत्कार होता है। उसका तत्काल प्रभाव देखने में आता है, और मन पर अमिट प्रभाव पड़ता है। सफलता के लिए आवश्यक है, कि हमारे मन में सदैव लक्ष्य का ख्याल बना रहे और अपने संकल्प को हर समय दोहराहते रहिये। इसे पूर्ण करने के लिए प्रयत्न में जुट जाइये। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है –''उठो जागो और तब तक नहीं रूको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।''जो लोग अपने जीवन में एक लक्ष्य बनाकर अपने जीवन पथ से गुजरते हैं,वे अपनी मंजिल को पा लेते हैं –

मिल जाती है,एक दिन मंजिल जो करता रहे प्रयास।
कुछ भी नहीं असंभव पाना गर खुद पर हो विश्वास।

हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, जिसमें एक ओर स्वाधीनता संग्राम सेनानियों के प्रेरक प्रसंगों से हमारी युवा पीढ़ी में देशभक्ति की नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। वहीं दूसरी ओर आत्मनिर्भर भारत के लिए नए विचारों,नयी योजनाओं का भी विकास हो रहा है।यह पत्रिका प्राध्यापकों,रचनाकारों, छात्राओं सभी के लिए अपनी लेखन प्रतिभा प्रदर्शित करने हेतु एक खुला मंच है।छात्राओं में प्रतिभा की कमी नहीं है,वे अध्ययन के साथ लेखन,खेलकूद,रंगमंच, प्रशासनिक सेवाओं में अपना परचम लहरा रही है।आवश्यकता है,बस अध्यापन के साथ मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और प्रेरणा की।

पत्रिका के प्रकाशन में प्राचार्य डॉ.जी.पी.चौधरी के मार्गदर्शन एवं सहयोग के साथ संपादक मंडल,प्राध्यापकों की कड़ी मेहनत ने कार्य को सुगम बनाया। मैं ह्रदय से आभारी हूँ तथा आशा करता हूँ कि मुझे सदैव सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

डॉ.अवधेश कुमार जैन
प्राध्यापक

संरक्षक/प्राचार्य के साथ संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
1	प्राचार्य की कलम से...	डॉ.जी.पी.चौधरी	कवर पृष्ठ 2
2	संपादक मण्डल	–	–
3	संपादकीय-अपनी बात	डॉ.अवधेश कुमार जैन	–
4	संदेश मुख्यमंत्री	मान.श्री शिवराज सिंह चौहान	04
5	संदेश केन्द्रीय मंत्री	मान.श्री प्रहलाद पटैल	05
6	संदेश उच्च शिक्षा मंत्री	मान.डॉ.मोहन यादव	06
7	संदेश विधायक दमोह	मान.श्री अजय टंडन	07
8	संदेश अध्यक्ष जनभागीदारी समिति	मान.श्री चन्द्रभान पटैल	08
9	संदेश अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा	डॉ.जी.एस.रोहित	09
10	आजादी के 75 वर्षो में भारत का आर्थिक परिदृश्य	डॉ.जी.पी.चौधरी	10
11	भारत रत्न डॉ.एम.विश्वैश्वरैया: आधुनिक भारत के निर्माता	डॉ.पी.एल.जैन	11
12	सौर ऊर्जा क्यों आवश्यक है?	डॉ.रेखा जैन	13
13	शब्दों का मूल्य	डॉ.अरूणा एम.जैन	13
14	जन संपर्क में अभिनव कॅरियर	डॉ.एन.पी.नायक	14
15	सपने बुनना सीख लो	डॉ.डी.के.नेमा	15
16	लघु-शोध	डॉ.के.के.उमाहिया	16
17	पुर्नजागरण आंदोलन में स्वामी विवेकानंद के	डॉ.मुदिता श्रीवास्तव	17
	सामाजिक विचार और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता	–	–
18	वैश्वीकरण और हिन्दी साहित्य	डॉ.अवधेश कुमार जैन	19
19	मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना	डॉ.डी.के.नेमा	20
	एमपी मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2022 :	–	–
20	**Career Choice**	**Dr. Malti Nayak**	21
21	गृह विज्ञान में रोजगार के अवसर	डॉ.आराधना श्रीवास	22
22	विकास की एक अहम की कड़ी:राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	डॉ. असलम खान	24
23	**PROMINENT TOOLS IN SYNTHETIC**	**Dr.Brajendra Singh Kusmariya**	29
	PATHWAYS OF GREEN TECHNOLOGY :	–	29
	MICROWAVE & ULTRASONIC IRRADIATION	–	–
24	किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन	श्रीमती प्रीति वर्मा	33
25	माँ और चिड़ियाँ	पंकज जैन	34
26	चंचल मन	मौसम राजपूत	34
27	लोकतंत्र का व्यापक अर्थ	श्री ब्रजेश मौर्य	35
28	**Major Air Pollutants**	**Shri Deepak Kumar Saini**	36
	and their Harmful Consequences	–	–
29	गृह विज्ञान विषय एक समग्र शिक्षा	श्रीमती सुरेखा बड़ौले	38
30	जलवायु परिवर्तन-वर्तमान संदर्भ में	श्रीमती भारतीय चौरसिया	39
31	ग्लास को नीचे रख दीजिये	श्री दीपक कुमार सैनी	40
32	भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव	श्रीमती जया अहिरवार	41
33	**Qualitative analysis of the COVID-19**	**SMT.NAYANTARA**	42
34	छात्र असंतोष व छात्र राजनीति का शिक्षा व समाज पर प्रभाव	डॉ.संगीता जग्गी	44
35	उच्च शिक्षा व बदलता हिन्दी का स्वरूप	डॉ.ममता संघी	45
36	महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण	डॉ. संतोष भार्गव	46
36	मंजिल से भी खूबसूरत सफर	कौशिल्या लोधी	47
37	वैश्विक मंदी और मजबूत होती भारतीय आर्थिक स्थिति	डॉ. हरप्रीत सिंह कंधारी	48
38	प्रोग्रामिंग (कोडिंग)	रेशू चौरसिया	48

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
39	सहसंक्रमण का प्रबंधन और चुनौतियाँ	डॉ.दिनेश कुमार पटैल	49
40	दोहे	कु.विनीता अहिरवार	49
41	बदलती पारिवारिक व्यवस्था की चुनौतियाँ	डॉ. उमेश कुमार दीपांकर	50
42	दैनिक जीवन में उपयोगी पौधे	डॉ.आभा अग्रवाल	51
43	**EASY BUT DIFFICULT**	Mrs. Anubha Tiwari	52
44	नव निर्माण	श्रीमती शिखा यादव	52
45	**Qualitative analysis of the COVID-19**	**Dr.CHANDRA SHEKHAR RATHORE**	53
46	कोई अर्थ नहीं	श्रीमती सोमी सिंह	53
47	कविता	श्रीमती विनीता बरेले	53
51	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ.अर्पणा गौस्वामी,डॉ.असलम खान	54
52	कम्प्यूटर वक्त की मांग	श्रीमती सपना राजपूत	54
53	स्वामी विवेकानंद केरियर मार्गदर्शन योजना	डॉ.एन.पी.नायक	55
54	मन	डॉ.राजेश पौराणिक	55
55	प्रकृति संदेश	डॉ.हरनाम सिंह राय	56
56	ज्ञान का दीप	श्री रामलाल शर्मा	56
57	संकल्प	श्री हरीश दुबे	56
58	माँ	श्रीमती सोमी सिंह	56
59	आगे बढ़ो	डॉ.शिरीन खान	57
60	खुद में खुद ही काफी हूँ	अंकिता दुबे	57
61	जिंदगी	डॉ.पूजा जैन	58
62	पर्यावरण	रिंकी लोधी	58
63	किताबों की दुनिया	अंशिका ठाकुर	59
64	अध्यापक	पूजा विश्वकर्मा	59
65	जब भारत आजाद हुआ था	काजल सेन	59
66	कैसे अदा करेगें	मोहनी जैन	60
67	देश भक्ति कविता	मुस्कान खान	60
68	बचपन	गोमती सेन	61
69	कालेज लाईफ	गोमती सेन	61
70	शिक्षक	विशाखा लोधी	61
71	**BOOKS**	**Kamini Shukla**	62
72	ऐसा आसमान दो	पूजा साहू	63
73	जब बात हो सम्मान की	निवेदिता तिवारी	63
74	मुझे आगे बढ़ना है..	खुशबू चौरसिया	64
75	पेड़	चंपा अहिरवार	64
76	बचपन	कविता चक्रवर्ती	64
77	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	पूजा श्रीवास्तव	65
78	माँ के विचार	आरती लोधी	65
79	बेहतरीन सुविचार	सृष्टि कुर्मी	66
80	मेरे प्रिय शिक्षक	सृष्टि कुर्मी	66
81	नारी की व्यथा	स्नेहा खटीक	67
82	माँ जीवन का आधार	अंजली अहिरवार	67
83	परवाह पिता की	दीपाली खटीक	68
84	बेटी	साधना लोधी	68
85	बेटियाँ	श्रद्धा राय	68

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.क्र.
86	निश्चित ही सफलता मिल जायेगी	सावित्री कुर्मी	69
87	किताबें	अलका दुबे	69
88	**Importance of computer in our life,**	**Karishma Katare**	70
89	पारिजात	शिवांगी शुक्ला	70
90	तुलसी	मोहनी पटैल	71
91	थोड़ा सा जी लें	अर्चना अहिरवाल	72
92	आ गए तुम	रोशनी अहिरवाल	72
95	जैविक खाद	ममता पटैल	73
96	आप खास हैं	कमला लोधी	74
97	कम्प्यूटर	डॉली अहिरवार	75
98	मतलबी दुनिया	डॉली अहिरवार	75
99	मतदान की अनिवार्यता	स्नेहा खटीक	76
100	बेटियाँ	लक्षिका दुबे	77
101	आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश	साक्षी जैन	80
102	महारानी लक्ष्मीबाई	दीपा विश्वकर्मा	81
103	वायु प्रदूषण	नम्रता राय	82
104	आप भले तो जग भला	कुमकुम असाटी	83
105	पर्यावरण	रूकमन अहिरवाल	83
106	देश भक्ति गीत	ममता पटैल	83
107	संत की वाणी	सोनम नेमा	84
108	शिक्षा	राधा अहिरवाल	84
109	गीत	आयुशी जैन	84
110	नशा एक अभिशाप	आलिया बानो	85
111	हेलमेट पहनने के लिए	रितु लोधी	86
112	स्वच्छ भारत अभियान	महिमा राठौर	87
113	डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम परिचय	रूपाली जैन	87
114	प्रगति की राह पर विज्ञान	रितु जैन	88
115	राष्ट्रीय चरित्र	रजनी लोधी	88
116	ओजोन परत	दीक्षा सेन	89
117	रामायण की शिक्षा का विद्यार्थी जीवन में महत्व	करूणा तिवारी	90
118	**Amazing facts of chemistry**	हर्षिता खरे	91
119	ऐ मंजिल मुझे तेरा ख्याल आया	अर्पणा दुबे	91
120	माँ	आरती लोधी	92
121	अनमोल वचन	सोनम नेमा	92
122	मध्यप्रदेश का भूगोल एक नजर में	मोहनी लोधी	93
123	दैनिक जीवन में रसायन का महत्व	खुशी दुबे	94
124	बहुउद्देशीय नदी-घाटी परियोजना	शिखा राय	95
125	महत्वपूर्ण आविष्कार एवं आविष्कारक	शिवांगी शुक्ला	96
126	एक भारत श्रेष्ठ भारत	मेघा पाण्डेय	97
127	प्रतिवेदन खेल विभाग	कु.प्रिया थापा	98
128	सपनों में उड़ान भरो	सौरभ खरे	98
129	हमारा महाविद्यालय विकास पथ की ओर	डॉ.पी.एल.जैन	99
130	प्रतिवेदन कम्प्यूटर विभाग	डॉ.पी.एल.जैन	99
131	प्रतिवेदन गृह विज्ञान विभाग	डॉ.आराधना श्रीवास	99
132	प्रतिवेदन मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह	डॉ.अवधेश कुमार जैन	100
133	प्रतिवेदन युवा उत्सव	डॉ.रेखा जैन	100
134	प्रतिवेदन आजादी का अमृत महोत्सव	डॉ.अवधेश कुमार जैन	101
135	प्रतिवेदन पुस्तकालय / महाविद्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	श्री डी.पी.मेहरोलिया	102

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश शासन
भोपाल-462004

: संदेश :

प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह द्वारा पत्रिका प्रेरणा का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन के दौरान विद्यार्थियों को अपने शैक्षणिक संस्थान से सामाजीकरण की नयी सीख मिलती है। विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने और जीवन के अपने महत्वपूर्ण विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच मिलता है जो उनके गुणात्मक विकास में सहायक होता है, पत्रिका का प्रकाशन भी एक ऐसा ही प्रयास है।

आशा है पत्रिका विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

(शिवराज सिंह चौहान)

प्रहलाद सिंह पटेल
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं
जल शक्ति राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संस्कृति मंत्रालय : कमरा नं. 501, 'सी'
विंग, शास्त्री भवन नई दिल्ली-110001

: शुभकामना संदेश :

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह, मध्यप्रदेश गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का प्रकाशन कर रही है, जो विद्यार्थियों और शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। साहित्य का समाज और समाज का साहित्य के बिना कोई महत्व नहीं है। साहित्यकार समाज के बाह्य और आंतरिक दोनों घटकों को उद्धृत करता है और इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। जिस साहित्य में ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' की वास्तविकता होती है, वह साहित्य समाज को एक नयी दिशा देता है। साहित्य, समाज में घटित विकृत व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने का काम करता है। मानव निर्मित समाज व्यवस्था में समय-समय पर आने वाले परिवर्तन, समाज के हर पहलू को प्रभावित करते हैं। इसलिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज का चित्रण करता है।

साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से अवगत होना आवश्यक है। साहित्य मानव जीवन का जीता जागता दस्तावेज होता है। अगर हम साहित्य का स्वरूप देखेंगे तो हमें पता चलेगा कि साहित्य में मानवता का स्वर ही प्रमुख होता है। साहित्य ने समाज में मनुष्य के भावों, विचारों एवं कलाओं को महत्व दिया है, जिसमें साहित्य का मूल उेश्य, साहित्य के प्रयोजन, सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् आदि का महत्व होता है।

गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा कि साहित्य शब्द से साहित्य के मिलने का एक भाव देखा जाता है। यह केवल भाव का भाषा-भाषा का, ग्रंथ-ग्रंथ का मिलन नहीं है, बल्कि मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यन्त अंतरंग मिलन भी है, जो साहित्य के अतिरिक्त अन्य से संभव नहीं है।

मैं शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह के सभी सदस्यों और विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके द्वारा वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का प्रकाशन राष्ट्र के उत्थान, उज्जवल भविष्य और राष्ट्र निर्माण में अमूल्य योगदान देने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

आपका

(प्रहलाद सिंह पटेल)

प्राचार्य
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,
जिला दमोह (म.प्र.) 470661

डॉ.मोहन यादव

मंत्री
उच्च शिक्षा विभाग
मध्यप्रदेश शासन
(प्रभारी जिला-राजगढ़ एवं हिण्डौरी)

मंत्रालय : कक्ष क्र. E-216,VB-III
भोपाल-462004
निवास : विंध्य कोठी,भोपाल
फोन नं. :0755-2430757,2430457(निवास)
0755-2708682(मंत्रालय)

: शुभकामना संदेश :

यह अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, दमोह के द्वारा वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा 2022-23'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका विद्यार्थियों की साहित्यिक तथा कलात्मक प्रतिभा को उजागर करने का सशक्त माध्यम होती है। इससे उन्हें विभिन्न विषयों की उपयोगी जानकारी भी मिलती है।

वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(डॉ.मोहन यादव)

प्राचार्य
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,
जिला दमोह (म.प्र.) 470661

अजय टंडन
विधायक
विधानसभा-055 दमोह

कार्यालय एवं निवास :-
टंडन बगीचा,दमोह (म.प्र.)470661
मो.नं. :9425095524,9575800744
E-mail- ajay.tandon04@gmail.com

: शुभकानना संदेश :

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शासकीय कमला नेहरु महाविद्यालय दमोह द्वारा प्रतिवर्षानुसार वर्ष 2022-23 में भी वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में संकलित किये गये लेख समाज,संस्कृति,प्रदेश तथा देश के जन-मानस की प्रगति में सहयोग प्रदान करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

अतः पत्रिका ''प्रेरणा'' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ........

भवदीय,

(अजय कुमार टंडन)

प्राचार्य
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,
जिला दमोह (म.प्र.) 470661

चन्द्रभान पटैल

अध्यक्ष जनभागीदारी समिति
शासकीय कमला नेहरू महिलस
महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

ग्राम लुहर्रा,पोस्ट सरखड़ी (म.प्र.)
तह. पथरिया,जिला दमोह

: शुभकामना संदेश :

मुझे यह जानकर खुशी होती है कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा खेलकूद,एन.सी.सी./एन.एस.एस. सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों में अपनी अग्रणी भूमिका निभाता है। आज शासन ने मुझे इस महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति का अध्यक्ष बनाकर सेवा का अवसर प्रदान किया है। महाविद्यालय निरंतर विकास के सौपान तय कर रहा है मुझे यह विश्वास है कि यह सिलसिला सतत् जारी रहेगा।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक पत्रिका 2022-23 प्रेरणा के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ मुझे विश्वास है कि छात्राओं में साहित्यिक एवं रचनात्मक मूल्यों की स्थापना में पत्रिका अपना बहुमूल्य योगदान करेगी।

भवदीय,

(चन्द्रभान पटैल)

प्राचार्य
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,
जिला दमोह (म.प्र.) 470661

डॉ.जी.एस.रोहित
अतिरिक्त संचालक
उच्च शिक्षा

क्षेत्रीय कार्यालय सागर संभाग सागर
कला वाणिज्य महाविद्यालय परिसर
सागर (म.प्र.) मो. 9977744261

: संदेश :

हर्ष का विषय है कि शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह अपनी वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का प्रकाशन छात्र/छात्राओं में रचनात्मकता का सृजन करने के साथ महाविद्यालय की शैक्षणिक, शैक्षणेत्तर तथा अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियों का दर्पण होगी।

''प्रेरणा'' के उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु समस्त स्टॉफ सहित आपको हार्दिक शुभकामनायें।

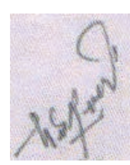

(डॉ.जी.एस.रोहित)

प्राचार्य
शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,
जिला दमोह (म.प्र.) 470661

आजादी के 75 वर्षों में भारत का आर्थिक परिदृश्य

● डॉ.जी.पी.चौधरी
प्राचार्य

भारत आज विश्व की बड़ी आर्थिक महाशक्तियों में से एक है। विश्व के परिदृश्य में भारत सतत् विकास की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है और यह प्रगति, विभिन्न क्षेत्रों में सार्थक दिशा में उठाये गये नीतिगत प्रयासों का परिणाम है। भारत की स्वतंत्रता उसके आर्थिक इतिहास का बहुत बड़ा मोड़ थी जहाँ से देश की अर्थव्यवस्था के पुर्ननिर्माण की शुरूआत हुई थी।

भारत जब स्वतंत्र हुआ तो देश का सकल घरेलू उत्पाद मात्र 2.7 लाख करोड़ था जो दुनिया की कुल GDP का 3% था लेकिन भारत ने सभी चुनौतियों को स्वीकार किया और वित्त वर्ष 2021-22 की जी डी पी 236 लाख करोड़ रूपये से ज्यादा पहुंच गई हालांकि इस बीच सूखा,आर्थिक मंदी एवं कोरोना महामारी समेत कई विपदाओं का सामना देश को करना पड़ा है लेकिन उन्हें पीछे छोड़ते हुये भारतीय अर्थव्यवस्था,विश्व पटल पर एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरी है। चाहे वह कृषि क्षेत्र हो, या उद्योग या फिर सेवा क्षेत्र। अगर वैश्विक आंकड़ों को देखा जाये तो इस समय संयुक्त राज्य अमेरिका (19.48 ट्रिलियन डालर),चीन (12.12 ट्रिलियन डालर),जापान (4.87 ट्रिलियन डालर) व जर्मनी (3.69 ट्रिलियन डालर) के बाद भारत (3.3 ट्रिलियन डालर) पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत ने आर्थिक स्वतंत्रता को अपनाकर निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये पंचवर्षीय योजनाओं के साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा से काम किया। 1951 में शुरू की गई पहली पंचवर्षीय योजना, कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने पर केन्द्रित थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना में, भारत की दीर्घकालिक विकास अनिवार्यताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिये आर्थिक आधुनिकीकरण की नींव रखी जिसने भारी उद्योगों और पूंजीगत वस्तुओं पर ध्यान देने के साथ ही तेजी से औद्योगीकरण पर बल दिया। बावजूद इसके 1960 का दशक भारत के लिये कई आर्थिक चुनौतियों का दशक था जहाँ एक ओर भारत एक बड़े अकाल के कगार पर था वहीं दूसरी ओर 1966 के युद्धों ने देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर बना दिया। संकट से बाहर आने के प्रयास में रूपये का अवमूल्यन हुआ जिसने सामान्य रूप से कीमतों में वृद्धि की

देश की आर्थिक विकास में 1991 की नई आर्थिक नीति अर्थव्यवथा की प्रगति का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। जिसमें देश की अर्थव्यवस्था को पूरे विश्व के लिये खोल दिया। इस नई नीति के तीन मुख्य कदम-निजीकरण,उदारीकरण, वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जिससे भारत की विकास दर,प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई।

आर्थिक प्रगति के एक नये युग की शुरूआत करने के लिये योजना आयोग की जगह नीति आयोग के गठन के साथ ही मेक इन इण्डिया,स्किल इण्डिया और गुड्स एण्ड सर्विसेज टैक्स जैसे आर्थिक प्रयास अर्थव्यवस्था को लगातार मजबूत बना रहे हैं। सरकार,समावेशी विकास पर ध्यान केन्द्रित करने के लिये औद्योगिक कॉरिडोर की स्थापना कर रही है। देश अब बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर से मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी इंफ्रास्ट्रक्चर की ओर बढ़ चुका है।

आज भारत को विश्व की सफल अर्थव्यवस्थाओं में गिना जा रहा है।किंतु यह भी सत्य है कि देश को अभी भी एक लंबा सफर तय करना है और देश के सामने रोजगार सृजन,बढ़ती हुई जनसंख्या,आर्थिक असमानता,राष्ट्रीय ऋण जैसी चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों का सामना करने देश आधुनिक तकनीक तथा अपने संसाधनों के संतुलित उपयोग के जरिये सभी सम्भावनाओं को तलाशने निरंतर प्रयासरत है।

भारत रत्न डॉ. एम. विश्वेश्वरैया : आधुनिक भारत के निर्माता

डॉ.पी.एल.जैन

विभागाध्यक्ष भौतिक विभाग

आधुनिक भारत के विश्वकर्मा, अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले, इंजीनियरिंग में विशिष्ट तकनीकी कौशल के साथ-साथ सामाजिक सरोकार को भी जोड़ने वाले, गुलामी के दौर में अपनी प्रतिभा से भारत के विकास में योगदान देने वाले और भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित, योजनाकार, राजनेता, युगद्रष्टा, इंजीनियर सर डॉ. मोक्षमंडल विश्वैश्वरैया को भारत का ही नहीं अपितु विश्व की महान प्रतिभाओं में गिना जाता है।

भारत में डॉ विश्वैश्वरैया का जन्म दिन 15 सितम्बर अभियंता दिवस Engineer's Day के रूप में मनाया जाता है।डॉ. एम. विश्वैश्वरैया का जन्म मैसूर के कोलार जिले के चिक्काबल्लापुर तालुक में 15 सितम्बर 1860 को एक तेलगू परिवार में हुआ था। पिता श्रीनिवास शास्त्री संस्कृत के विद्वान थे एवं माता वेंकाचम्मा गृहिणी थी। 1880 में बी.ए. की परीक्षा, 1883 की एलसीई एवं एफसीई परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर डॉ. विश्वैश्वरैया ने अपनी योग्यता का परिचय दिया।

इसी उपलब्धि के चलते महाराष्ट्र सरकार ने इन्हें नासिक में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया। उस समय अंग्रेजों का शासन था। अधिकांश उच्च पदों पर अंग्रेजों की ही नियुक्ति होती थी लेकिन उनकी योग्यता और प्रतिभा को देखकर अंग्रेज सरकार उन्हें उच्च पद पर नियुक्त करने से नहीं रोक पाई। दक्षिण भारत के मैसूर को विकसित एवं समृद्धिशाली क्षेत्र बनाने में डॉ. विश्वैश्वरैया की अहम भूमिका रही। कृष्णराज सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल आयल एंड सोप फैक्ट्री, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर समेत कई संस्थान उनकी कोशिशों का परिणाम है। सर विश्वैश्वरैया की दूरदर्शिता के कारण मैसूर में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया और लड़कियों की शिक्षा के लिये पहल की गयी।

डॉ. विश्वैश्वरैया मैसूर के 19वे दीवान थे जिनका कार्यकाल 1912 से 1918 के बीच रहा। 1909 में उन्हें मैसूर राज्य का मुख्य अभियंता नियुक्त किया गया।

कृष्णराज सागर बांध के निर्माण के कारण डॉ. एम.विश्वैश्वरैया का नाम विश्व में बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। कृष्णराज सागर बांध का निर्माण स्वतंत्रता से 40 वर्ष पूर्व हुआ था। इस बांध से कर्नाटक के 1.25 लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होती है विद्युत उत्पादन के साथ ही मैसूर एवं बैंगलोर जैसे शहरों को पेयजल आपूर्ति करने वाला कृष्णराज सागर बांध सर मोक्षमुंडम विश्वैश्वरैया के तकनीकी कौशल और प्रशासनिक योग्यता की सफलता का श्रेष्ठ प्रमाण है।

उस समय विशाल बांधों जैसी संरचनाओं के सिद्धांतों पर ज्यादा अनुसंधान नहीं किया गया था। कृष्णराज सागर बांध के निर्माण में सबसे बड़ी चुनौती कावेरी नदी के पानी को रोकने थी और डॉ. विश्वैश्वरैया के लिये प्रमुख चुनौती बिना सीमेंट के बांध का निर्माण करना था क्योंकि तब भारत गुलाम था और सीमेंट का आयात बहुत महंगी कीमत पर होता था लेकिन डॉ. विश्वैश्वरैया ने जलाशय में पानी को नियंत्रित करने के लिये विशेष तकनीक का प्रयोग किया।

बांध की दीवार की दूसरी तरफ कुंये जैसी गोलाकार संरचनाओं को बनाकर उन्हें स्वचालित दरवाजों से जोड़ा। इन दरवाजों को बांध की दीवार के अंदर स्थापित किया गया। डॉ. विश्वैश्वरैया ने बांध के अंदर उपयोग 171 दरवाजों में से 48 स्वचालि दरवाजे स्वयं विकसित किये थे। प्रत्येक दरवाजे पर दस टन का भार होने के बाद भी ये स्वत: ऊपर नीचे खुलते एवं बंद होते थे।

जब जलाशय का जल अधिकतम स्तर पर होता था तो पानी कुंये में गिरता जिससे कुंये का फ्लोट ऊपर उठता और बेलेंस बार नीचे गिर जाता इससे सभी दरवाजे ऊपर उठ जाते थे और अतिरिक्त पानी बांध स निकलने लगता । जब जलाशय का स्तर कम होता तो कुंये खाली हो जाते बेलेंस बार ऊपर उठ जाता और बांध के सभी दरवाजे बंद हो जाते।

डॉ. विश्वैश्वरैया के द्वारा आविष्कृत यह तकनीक विश्व में पहली बार उपयोग की गयी जिसे बोद में विश्व के अनेक देशों में अपनाया गया। डॉ. विश्वैश्वरैया ने बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में धातुकर्म विभाग, वैमानिक, औद्योगिक दहन एवं इंजीनियरिंग जैसे अनेक नये विभागों को आरंभ करने का स्वप्न देखा। समाज के संपूर्ण विकास के कार्यो के कारण उन्हें कर्नाटक का भागीरथ कहा जाता है।

1918 में डॉ. विश्वैश्वरैया दीवान के पद से सेवानिवृत्त हुये। सेवानिवृत्ति के दस वर्ष बाद भद्रा नदी के बाद आ जाने के कारण भद्रावती स्टी फैक्ट्री बंद हो गयी। फैक्ट्री के जनरल मैनेजर जो एक अमेरिकन थे, उन्होंने फैक्ट्री को बहाल करने के लिये छ: महिने का वक्त मांगा। डॉ. विश्वैश्वरैया के अनुसार यह बहुत अधिक था उन्होंने तुरंत उस व्यक्ति को हटाकर भारतीय इंजीनियरों को प्रशिक्षित कर विदेशी इंजीनियरों के स्थान पर नियुक्त कर बहुत कम समय में काम पूर्ण करवा लिया।

डॉ. विश्वैश्वरैया ने ही पहली बार बांध से पानी के बहाव को कंट्रोल करने के लिये स्टील के दरवाजे लगाकर नये ब्लॉक सिस्टम का आविष्कार किया जा आज पूरी दुनिया में डेम प्रोजेक्ट में प्रयोग होता है। बैंगलोर स्थित HINDUSTAN AERONOTICS तथा मुंबई की PREMIER AUTOMOBILE FACTORY उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है। उड़ीसा की नदियों की बाढ़ की समस्या के निराकरण हेतु उन्होंने एक रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट के आधार पर हीराकुंछ तथा अन्य बांधों का निर्माण हुआ।

किसी बांध को ऊंचा किये बिना ही उसकी भंडारण क्षमता को बढ़ाना–कल्पना से परे है पर डॉ. विश्वैश्वरैया ने पूना के पास स्थित खड़गवासला बांध में ऐसा ही किया था। स्वचालित जल द्वारों का उपयोग सर्वप्रथम पुणे से होकर बहने वाली मुठा नदी की बाढ़ को नियंत्रित करने के लिय खड़गवासला बांध पर कर इनज लद्वारों को अपने नाम से पेटेट कराया।

भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित डॉ. विश्वैश्वरैया एक बार ट्रेन का सफर कर रहे थे रात का समय था। डॉ. विश्वैश्वरैया रात के शांत अंधेरे में ट्रेन के डिब्बे की खिड़की से सिर टिकाकर सो रहे थे। अचानक उनकी नींद खुली और उन्होंने अपने सिर के ऊपर लटक रही खतरे की जंजीर को खींच दिया। ट्रेन के कर्मचारी, सहयात्री और अन्य यात्रियों ने सोचा शायद उन्होंने नींद के झोंके में चेन खींची है और सभी यात्री गुस्से में चिल्लाने लगे। तब उन्होंने कहा – ''ट्रेन ट्रेक में कुछ मीटर आगे क्रेक है यदि ट्रेन उसके ऊपर से गुजरती तो दुर्घटना हो सकती थी।'' लोगों ने कहा – लोगों ने कहा – ''आप मजाक कर रहे हैं, अंधेरी रात में चलती ट्रेन में बैठे–बैठे आप को कैसे पता चला।''

डॉ. विश्वैश्वरैया ने पहले रेलवे के कर्मचारियों को ट्रेक चेक करने के लिये कहा।

सभी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब देखा कि ट्रेन के रूकने से थोड़ा आगे ट्रेक पर एक गहरा क्रेक था यदि ट्रेन वहां से गुजरती तो अवश्य ही दुर्घटना घट जाती।

लोगों ने उनसे पूछा कि आपको इस बात का पता पहले ही कैसे चल गया।

डॉ. विश्वैश्वरैया ने बताया कि सोते हुये ट्रेन और ट्रेक की आवाज सुनाई दे रही थी मगर अचानक ही आवाज बदल गयी। पटरी और ट्रेन के पहिये कम कम्पन से होने वाली आवाज में अचानक आये बदलाव से उन्हें ट्रेक में आगे क्रेक का पता चल गया।इस तरह डॉ.एम. विश्वैश्वरैया के इस अविश्वसनीय निरीक्षण ने उस दिन कितने लागों की जान बचायी। अपनी शताब्दी पूरी करने के बाद भी डॉ. एम. विश्वैश्वरैया पूरी तरह से स्वस्थ थे। समय के पाबंद एवं विचारों में पूर्ण स्वस्थ थे। एक सौ दो वर्ष की आयु में भी वह काम करते रहे। उन्होंने कहा –''जंग लग जाने से बेहतर है, काम करते रहना उनसे जब एक बार उनके दीर्घायु होने का रहस्य बताने को कहा गया।'' तब उन्होंने हंसकर उत्तर दिया – ''जब बुढ़ापा मेरा दरवाजा खटखटाता है तो मैं भीतर से जबाव देता हूँ कि विश्वैश्वरैया घर पर नहीं है और वह यानि बुढ़ापा लौट जाता है। जब बुढ़ापे से मेरी मुलाकात ही नहीं हो पाती है तो वह मेरे पास कैसे आ सकता है।''

14 अप्रैल 1962 को इस महान आत्मा ने संसार को अलविदा कहा और अपने कार्यो से अमरत्व प्राप्त कर लिया।

सौर ऊर्जा क्यों आवश्यक हैं ?

डॉ.रेखा जैन
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग

सौर ऊर्जा वह ऊर्जा है जो हमें सूर्य से प्राप्त होती है और तापीय या विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। सौर ऊर्जा अक्षय और प्रदूषण मुक्त ऊर्जा है जब सूर्य का प्रकाश एक फोटोवोल्टिक सेल पर पड़ता है तो यह एक इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली उत्पन्न करता है और विद्युत ऊर्जा रासायनिक प्रक्रिया में बैटरी में संग्रहित होती है।

सौर ऊर्जा संयंत्र की रखरखाव लागत बहुत कम है। सोलर पैनल की मदद से बरसात के मौसम में भी बिना रूके बिजली की आपूर्ति की जा सकती है। सौर ऊर्जा का उपयोग करने के कुछ नुकसान जैसे पैनल और बैटरी की प्रारंभिक स्थापना लागत बहुत अधिक है।

अगर सोलर पैनल खराब होता है तो उसे बदलना पड़ता है और यह पर्यावरण को रासायनिक रूप से प्रदूषित करेगा। सौर ऊर्जा का उपयोग करने के कुछ नुकसान जैसे पैनल और बैटरी की प्रारंभिक स्थापना लागत बहुत अधिक है। भले ही कुछ समस्याएं हैं पर सौर पैनल हमारे पैसे के साथ साथ पर्यावरण को भी बचाएगा।

भारत में सौर ऊर्जा हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन भारत सरकार के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। भारत में सौर ऊर्जा को काफी महत्व मिल रहा है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण हाल ही में घोषित हुआ गुजरात का मोढ़ेरा गांव जो भारत का पहला सूर्य ग्राम घोषित किया है। यह सूर्य मंदिर के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध मोढ़ेरा अब 100 मीसदी ऊर्जा का उपयोग करने वाला गांव बन चुका है। यानि यह गांव अपनी जरूरत की बिजली का उत्पादन खुर सौर ऊर्जा के जरिए कर रहा है। यहां हर घर की छत पर सोलर पेनल लगा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सौर ऊर्जा का भविष्य हमारे देश में उज्ज्वल है।

शब्दों का मूल्य

डॉ. अरुणा.एम.जैंन
विभागध्यक्ष इतिहास

शब्दों की ताकत सभी ने मानी है। शब्द यदि सही समय पर सही बात के लिए सही तरीके से प्रस्तुत हों तो 50 प्रतिशत सफलता तय हो जाती है। जिन्हें शब्दों का प्रयोग करना आता है वे सफलता के प्रति आश्वस्त रहते है। एक राजा के अधीनस्थ न्यायाधीश इस बात के लिए जाने जाते थे कि वे शीघ्र न्याय कर देते थे। राजा भी उन पर बहुत भरोसा करते थे। जल्दी न्याय करने के चक्कर में कई बार उनके फैसले गलत भी हो जाते थे। पर यह बात राजा तक नहीं पहुँच पाती थी।

एक बार एक कवि का कोई मुकद्मा न्यायाधीश की अदालत में पहुंचा। न्यायाधीश ने जिरह सुनी और तत्काल फैसला कवि के विरूद्ध दे दिया और उन्हें सजा सुना दी। कवि ने कहा ''सजा देने से पहले मेरी दो पंक्तियां सुन ले।''न्यायाधीश ने अनुमति दे दी। तब कवि ने कहा –''सुण हाकिम संग्राम, आंधो मत हो यार। औरों को दो चाहिजे, यारे चाहिजे चार।।''

हे हाकिम संग्राम (न्यायाधीश) न्याय की कुर्सी पर बैठकर आपको सारे पक्षपात, आपसी संबंध और रिश्तेदारियाँ भूल जानी चाहिए। आपकी जिम्मेदारी अब दो गुनी है। दलीलों को गहराई से समझें। कहीं चूक न हो जाए अन्यथा आपका न्याय अन्याय में बदल जायेगा। न्याय की सत्ता पर बैठकर आप अंधे न बनें। सामान्य व्यक्तियों को तो दो आँखें चाहिए पर आपके पास चार आँखें होनी चाहिए। दो से आप बाहरी जगत को देखें तथा दो आँखें आपको अपने भीतर का विवेक, न्याय की गहराइयों को देखने के लिए होनी चाहिए।

चार आँख की बात सुनकर न्यायाधीश समझ गए कि इशारा क्या है और जब बात दोबारा सुनी गयी, तो कवि निर्दोष साबित हो गए। शब्दों ने न्यायाधीश को भीतर तक हिला दिया था। शब्दों का उपयोग धन की तरह बहुमूल्य रूप से करना चाहिए।

कहावत है – ''बातन हाथी पाईए, बातन हाथी लाल''

जनसंपर्क में अभिनव कॅरियर

डॉ. एन.पी.नायक
विभागाध्यक्ष (वाणिज्य)

आज के वैश्विक दौर में जनसंपर्क एक महत्वपूर्ण कारक बनता जा रहा है। किसी भी संस्थान के प्रभावकारी और सुनियोजित संचालन में तथा संस्थान के अस्तित्व निर्धारण के तारतम्य में जनसंपर्क बहुत अनिवार्य हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के इस व्यापक युग में चाहे बात व्यक्ति विशेष के प्रचार-प्रसार की हो अथवा किसी सरकारी, अर्द्धसरकारी या निजी या फिर कोई सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षिक, सभी प्रकार की संस्थाओं के लिए जनसंपर्क प्रमुख विधा बनकर सामने आ रहा है। जनसंपर्क अधिकारी उक्त सभी बातों से संबद्ध होता है। कार्पोरेट जगत में कई बार अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने में जिस माध्यम की आवश्यकता होती है, उस माध्यम की पूर्ति जनसंपर्क अधिकारी का पढ़ करता है।

जनसंपर्क अधिकारी के लिए पी.आर.ओ. शब्द रूढ़ हो गया है। पी.आर.ओ. का अर्थ पब्लिक रिलेशन ऑफीसर होता है। अर्थात पीआरओ वह व्यक्ति होता है जो अपनी कार्यरत संस्था के लिए समस्त हितों की पूर्ति करता है तथा पब्लिक क्षेत्र में संस्था के स्थापन के लिए अत्यंत जागरूक दृष्टि से कार्य करता है। इस अर्थ में पीआरओ का कार्य उपयोगी होने के साथ ही रूचिकर भी है। जनसंपर्क अधिकारी अपनी संस्थान की सभी खूबियों को अर्थात् संस्था की गुणवत्ता, कामकाज का ढंग, विश्वसनीयता तथा प्रगति विषयक जानकारियाँ न केवल व्यक्ति दर व्यक्ति संपर्क कर उन्हें प्रसारित करता है बल्कि इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनों के लिए अपनी कार्यरत संस्था के संबंध में समाचार बनाने का काम भी करता है।

:: जनसंपर्क अधिकारी का व्यक्तित्व ::

जनसंपर्क अधिकारी आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। वह रचनाशील व्यक्ति होता है तथा अभिव्यक्ति का महारत हासित किये होता है। उसकी कार्य पद्धति में दबाव के समय में सही निर्णय लेने के साथ ही निर्णयों को अमली जामा पहनाने की दक्षता भी आती है। नये-नये लोगों से मिलना और उनके व्यापारिक व्यवहार स्थापित करने की योग्यता उसमें होती है। इसी प्रकार अन्य कंपनियों से भी वह सीधी ओर स्पष्ट वाणी से पारदर्शी व्यवहार बनाता है। उसमें अपूर्व संभाषण शक्ति होती है। जिसकी वजह से वह सृजनात्मक विचार प्रस्तुत करने के साथ ही सदैव गतिशील बना रहता है। जनसंपर्क अधिकारी संयमशील होता है। उकसे पास दूरदर्शिता होती है। उसमें पारस्परिक मिलन सरिता की तीव्र भावना होती है।

:: जनसंपर्क अधिकारी हेतु योग्यता :: वर्तमान वैश्विक युग में व्यापार की दृष्टि से विभिन्न भाषाओं के संज्ञान रखने वाला व्यक्ति कुशल जनसंपर्क अधिकारी बन सकता है। कम से कम आज के समय में हिन्दी के साथ अच्छी अंग्रेजी का ज्ञान उसके पास होना चाहिए। हिन्दी व अंग्रेजी के साथ यदि अन्य प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान भी यदि है तो वह श्रेष्ठ जनसंपर्क अधिकारी बन सकता है। अतएव भाषाई ज्ञान के साथ-साथ कार्पोरेट जगत में चलने वाले उतार-चढ़ाव की जानकारी में कुशाग्र होना भी पीआरओ की आवश्यक अर्हता है।

: **शैक्षिक योग्यता ::**किसी भी विषय से स्नातक करने के उपरांत विद्यार्थी मास कम्युनिकेशन/पब्लिक रिलेशन/मैनेजमेंट या एडवरटाइजिंग में मास्टर डिग्री या डिप्लोमा कोर्स कर इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। उक्त पाठ्यक्रम करने के उपरांत पब्लिक रिलेशन/कार्पोरेट कम्युनिकेशन/कार्पोरेट अफेयर्स/बड़ी कंपनियों के एक्सटर्नल अफेयर्स डिपार्टमेंट में स्वतंत्र रूप से पब्लिक रिलेशन कंसल्टेंट का काम कर सकते हैं। इसके विभिन्न सरकारी एजेंसियों, सेल्स, मैनेजमेंट, कंसल्टेंट आर्गेनाइजेशन, ट्रेवल एंड टूरिज्म ऑर्गेनाइजेशन, इवेन्ट मैनेजमेंट तथा बड़े एन.जी.ओ. आदि में भी पब्लिक रिलेशन

ऑफीसर या कंसल्टेंट के रूप में काम कर इस क्षेत्र में शिखर पर पहुँच सकते हैं। जनसंपर्क संबंधी ज्यादातर पाठ्यक्रम पत्रकारिता या जनसंचार संस्थानों द्वारा
भी संचालित किए जाते हैं। पाठ्यक्रम संबंधी कार्य के अतिरिक्त प्रतिष्ठित जनसंपर्क प्रतिष्ठानों में व्यावहारिक अनुभव या प्रशिक्षण भी महत्वपूर्ण होता है। जनसंपर्क से जुड़े पाठ्यक्रमों में मीडिया ऑफ पब्लिक रिलेशंस, प्रोडक्शन एवं मीडिया टेक्निकल, कम्युनिकेशन आदि प्रमुख घटक है। आमतौर पर इन पाठ्यक्रमों की अवधि एक से दो वर्ष होती है। वैसी भी जनसंपर्क अधिकारी के लिए पाठ्यक्रम से ज्यादा उसके अपने अनुभव महत्व रखते हैं। उसे मीडिया के तौर-तरीकां की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों में प्रचार, प्रसार और संपर्क की शिक्षा तो दी ही जाती है, साथ ही प्रभावी पाठ्यक्रम हाउस जनरल, बुलेटिन, पत्रिकाएँ, वार्षिक रिपोर्ट, फोल्डर आदि तैयार करने तथा प्रकाशित कराने का भी ज्ञान दिलाते हैं।
:: जनसंपर्क में स्नातकोत्तर उपाधि/डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करने वाले प्रमुख विश्वविद्यालय/मीडिया संस्थान इस प्रकार है :: एम.बी.ए. इन पब्लिक रिलेशन एंड मास कम्युनिकेशन पाठ्यक्रम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर में उपलब्ध है।

जनसंपर्क, विज्ञापन और प्रबंधन में एम.ए. पाठ्यक्रम माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल में उपलब्ध है।जनसंपर्क और विज्ञापन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली में उपलब्ध है।जनसंपर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में उपलब्ध है।
जनसंपर्क में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ जर्नलिज्म कम्युनिकेशन, पुणे में उपलब्ध है।
जनसंपर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम डॉ. बी. आर. अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, जुबली हिल्स, हैदराबाद में उपलब्ध है।

प्रेरणात्मक कविता

सपने बुनना सीख लो

डॉ.डी.के.नेमा
प्रशासनिक अधिकारी

सपने बुनना सीख लो
बैठ जाओ सपनो के नाव में, मोके की ना तलाश करो।
सपने बुनना सीख लो।।
खुद ही थाम लो हाथों में पतवार माझी का ना इंतजार करो
सपने बुनना सीख लो।।
पलट सकती है नाव की तकदीर, गोते खाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
अब नदी के साथ बहना सीख लो, डूबना नहीं तैरना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
भंवर में फंसी सपनों की नाव अब पतवार चलाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
खुद ही राह बनाना सीख लो, अपने दम पर कुछ करना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।
तेज नही ंतो धीरे चलना सीख लो, भय के भ्रम से लड़ना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।

लघु-शोध

डॉ.के.के.उमाहिया प्राध्यापक,वाणिज्य

अपने भैया जी नकल करके हायर सेकेण्डरी पास कर गये,बी.एस.सी. प्रायवेट कॉलेज से उत्तीर्ण होकर प्राणी शास्त्र से एम.एस.सी. अंतिम वर्ष में कीड़े की प्रवृत्ति पर लघु शोध लिखा। सारांश यह था, एक कीड़ा चार टांगों वाला पकड़ा, एक पैर तोड़ दिया, और कहा चल,कीड़ा धीमी गति से चक्कर काटने लगा। उन्होंने निष्कर्ष लिखा-तीन पैर होने पर वह नाचने लगा। एक पैर और हटा दिया, कहा चल, कीड़ा धीमी गति स `चल पड़ा, निष्कर्ष लिखा दो पैर होने पर कीड़ा आलसी हो जाता है, तीसरा पैर अलग होने पर वह गोल गोल घूमने लगा, निष्कर्ष लिखा एक पैर होने पर कीड़ा कामचोर हो जाता है। चौथा पैर भी भैया जी ने तोड़ दिया और कहा चल, अब कीड़ा निढाल था कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा था। भैया जी ने अंतिम निष्कर्ष निकाला, चारों पैर गवाने के बाद कीड़ा बहरा हो जाता है, और कुछ घंटों बाद बहरा होने के कारण मर जाता है।

भैया जी अब डॉक्टर बन गये। एक मरीज पैरों में दर्द का इलाज कराने पहुंचा, उन्होंने एक पैर को नीला देखा, कहा इसमें जहर फैल गया है,पैर काटना पड़ेगा। मरीज तैयार हो गया एक पैर काट दिया। महीने भर बाद बैसाखी की सहायता से वह भैया जी के पास फिर पहुंचा, कहा अब इसमें भी दर्द हो रहा है, पैर देखकर भैया जी ने कहा इस पैर में भी जहर का असर हो गया है, इसे भी काटना पड़ेगा। मरता क्या न करता, दूसरा पैर भी कटवा दिया। तीसरी बार मरीज लुंगी पहने क्लीनिक पहुंचा। कहा अब घुटने में दर्द है। भैया जी ने गहन जांच करते हुये कहा, अब समझ में आया तुम्हारे पैरे नीले क्यों थे। जिन्हें जहर समझ कर काटना पड़ा। दरअसल तुम्हारी लुंगी कलर छोड़ रही है। आइंदा पक्के कलर वाली लुंगी पहनना वरना कोई अनाड़ी नौसिखिया डॉक्टर तुम्हारे घुटने भी काट देगा।

''पैसा''

पैसा एक ही भाषा बोलता है,
अगर तुमने आज मुझे बचा लिया,
तो कल मैं तुम्हें बचा लूंगा।
भले ही मैं ऊपर साथ नहीं जाऊंगा,
पर जब तक मैं नीचे हूँ
तुझे बहुत ऊपर लेके जाऊंगा।।

''समय''

समय न लगाओ तय करने में,
कि आपको क्या करना है।
वरना समय तय कर लेगा कि
आपका क्या करता है।।

''समझदार लोग उस जगह हमेशा चुपचाप रहते हैं,
जहाँ दो कौड़ी के लोग अपना गुणगान करते हैं।''

पुर्नजागरण आंदोलन में स्वामी विवेकानंद के सामाजिक विचार और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

डॉ.मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव
सह.प्राध्यापक समाजशास्त्र

''मैं ऐसे ईश्वर में विश्वास नहीं करता जो स्वर्ग में तो मुझे आनंद देगा पर इस जगत में मुझे रोटी भी नहीं दे सकता।''

स्वामी विवेकानन्द भारत की महान आत्मा थे, जिनके प्रति वर्तमान पीढ़ी ऋणी है और भावी पीढ़ी सदैव ऋणी रहेगी। उनके जीवन और चिंतन ने गांधी, तिलक, विपिनचंद्रपाल, लाजपत राय, अरविंद घोष, नेहरू सभी को प्रभावित किया। सामाजिक जड़ता और धार्मिक मूढ़ता को दूर करने का उन्होंने वैसा ही प्रयास किया जैसा किसी तालाब के सड़े हुए पानी को साफ करने के लिये किया जाता है।

हम भ्रमों विसंगतियों और विभाजनों के दौर में जी रहे हैं भारतीय समाज में परिवर्तन की गति जितनी तेज है उतनी इससे पहले कभी न रही। केवल शहरी भारत ही नहीं, ग्रामीण भारत भी अकल्पनीय रूप से बदल रहा है सवाल यह है कि हम सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक और यहाँ तक कि साभ्यतिक रूप से भी कहां पहुंच रहे हैं ? पुरानी व्यवस्था आंखों से ओझल होती जा रही है और नई व्यवस्था बहुत अराजक नजर आ रही है परंपरागत और आधुनिक भारत का अंत-संघर्ष नजर आता है ऐसे में आज स्वामी जी के विचार प्रासंगिक परिलक्षित होते हैं।

भारतीय सामाजिक कुरीतियाँ और विवेकानंद-

स्वामी जी अपने को सच्चा समाजवादी कहते थे। वे दो अर्थो में समाजवपादी थे एक तो उन्होंने उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों के शोषण की भर्त्सना की तथा दूसरे उन्होंने देश के सब निवासियों के लिये समान अवसर के सिद्धांत का भी संवर्द्धन किया।

स्वामी विवेकानंद सामाजिक संगठन और सामाजिक मामलों में धर्म को घुसेड़ना पसंद नहीं करते थे और इसी कारण वे जात-पात सांप्रदायिक और छुआछूत तथा सब तरह की विषमताओं के विरूद्ध थे। तत्कालीन भारतीय समाज की पतनोन्मुख दशा देखकर विवेकानंद के असह्य कष्ट होता था। उन्होंने भारत के पतन के प्रमुख कारणों को ढूँढ़ा और उनके निराकरण पर बल दिया। पतन के कारण थे- छुआछूत, श्रद्धा का अभाव,अंग्रेनियत और पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति के प्रति अत्यधिक आकर्षण,बेईमानी,शारीरिक विकास की उपेक्षा छात्र-भावना का पतन और कुछ सीखने के प्रति उदासीनता भय ग्रंथी अथवा स्वयं को हीन-मानने की मनोदशा,मौलिकता तथा साहस की कमी,आलस्य,संकीर्ण दृष्टिकोण, धर्म की उपेक्षा और दुर्बलता और पिछड़ापन।

स्वामी विवेकानंद के हृदय में गरीबों और दलितों के लिए असीम सहानुभूति थी। इस दृष्टि से वे गांधीजी के अग्रवाहक थे। वे सबसे बड़े समाजवादी थे जो अमीर और गरीब के भेद को ठुकराकर पद-दलित को सीने से लगाने का संदेश देते थे और अपने कर्ममय जीवन में अपने मिशन में उन्होंने ये कर दिखाया। विवेकानंद ने शिक्षितों को इन शब्दों ने चुनौती दी - ''जब तक करोड़ो लोग भूख और अज्ञान के गोते खा रहे हैं तब तक मैं हर आदमी को एक विश्वास घातक मानता हूँ जिसने उनकी गाढ़ी कमाई के पैसे से शिक्षा पाई है और अब उन्हीं पर कोई ध्यान नहीं देता।''

विवेकानंद ने बाल-विवाह की भर्त्सना की और घोषित किया''जिस प्रथा के अनुसार अबोध बालिकाओं को पाणिग्रहण होता है उसके साथ मैं किसी प्रकार के संबंध रखने में असमर्थ हूँ।''विवेकानंद ने बाल-विवाह के दुष्परिणाम को स्पष्टतया सामने रखा और कहा कि ''बाल-विवाह में असामयिक संतानोत्पत्ति होती है और अल्पायु में संतान धारण करने के कारण हमारी स्त्रियों अल्पायु होती है उनकी दुर्बल और रोगी संतान देश में भिखारियों की संख्या बढ़ाने का कारण बनती है।''

स्वामी विवेकानंद ने प्रचलित जातिवाद को देश और समाज के लिये आत्मघातक मानते हुए कहा कि जातिभेद केवल एक सामाजिक विधान है जिसकी उपयोगिता भूतकाल में चाहे जो भी रही हो,वह भारतीय वायुमंडल में दुर्गन्ध फैलाने के अतिरिक्त कुछ नहीं करती। जाति-भेद का नाश तभी संभव है जब लोग अपने खोए हुए सामाजिक व्यक्तित्व को पुन: प्राप्त करेंगे। जातिप्रथा के विनाश के बारे में विवेकानंद की दृष्टि बहुत पैनी थी। उन्होंने भांप लिया कि आधुनिक प्रतिस्पर्धा के युग में जाति-विचार अपने आप नष्ट होता जा रहा है उसका नाश करने के लिए किसी धर्म विज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

विवेकानंद स्त्री–पुरूष समानता के पक्षधर थे। स्वामी जी का यह अडिग विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी स्त्री–जाति का पूरा सम्मान करना चाहिए। जो देश जो राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते वे कभी उन्नति नहीं कर सकते और न भविष्य में ही कर सकेंगे। हमारी प्राचीन मान्यताओं में नारी को शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही अधिकतर प्राप्त थे फलस्वरूप मैत्रेयी, और गार्गी जैसे विदुषी स्त्रियां पैदा हुई। स्त्रियों को शिक्षित बनाये बिना उनका विकास किसी भी हालत में संभव नहीं है उन्होंने स्त्रियों को धार्मिक और चरित्र संबंधी शिक्षा देने पर बल दिया। स्वामी जी के कारण स्त्रियों में सबल साहस और आत्मविश्वास मुखरित हुआ। वे परमुखापेक्षी स्त्री की अपेक्षा साहसी उदार धार्मिक और कर्तव्यनिष्ठ महिलाओं को सामाजिक जीवन का संबल मानते हैं।

विवेकानंद का विचार था कि भारत की दयनीय स्थिति का मूल कारण अशिक्षा है। वे अंग्रेजों द्वारा प्रचलित की गई शिक्षा पद्धति के कटु आलोचक थे क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा पद्धहित केवल क्लर्को का निर्माण करने वाली शिक्षा है। इसके स्थान पर वे गुरूकुल शिक्षा पद्धति के समर्थक थे। वे शिक्षा में धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन को अनिवार्य बनाने के पक्ष में थे। उनका मूल लक्ष्य एक विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का निर्माण करना था। इस धार्मिक शिक्षा से शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय भी कम होगा, साथ ही अंधविश्वास और रूढ़ियों को समाप्त करने में भी सहायक होगी। हमारी पतनावस्था हमारे अज्ञान और अंधविश्वास के कारण है, शिक्षा को इन पर विजय प्राप्त करती है।

भ्रमों और अंतर्संघषों के इसी परिदृश्य में स्वामी जी का जीवन और दर्शन उन सभी सवालों पर रोशनी डालता है जो आज हमारे सामने मुंह खोले खड़े हैं यकीन नहीं होता कि उन्होंने महज 39 वर्षो का जीवन किया था इतनी कम अवधि में हैं उन्होंने भारतीय जीवन से लेकर वैश्विक मनुष्य से संबंधित अनेक आयामों को इतनी गंभीरतापूर्वक स्पर्श किया था कि उन्हें भारत का ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का गुरू कहने को जी चाहता है।

स्वामी जी इतनी दृढ़ता के साथ अपने समाज में व्याप्त सभी सभी बुराईयों को उजागर करते थे। चाहे स्त्रियों, शूद्रों और अस्पृश्यों के साथ होने वाला अन्याय हो, चाहे वंचितों और शोषितों के प्रति धनाढ़यों द्वारा किया जाने वाला भेदभाव हो, चाहे, नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण की अनिवार्यताओं से वंचित शिक्षा प्रणाली हो या चाहे पश्चिम के सम्मुख भारतीय जनमानस में पैदा कमतरी का बोध हो, स्वामी जी ने अदम्य क्रांति दृष्टि का परिचय देते हुए हिंदू समाज में व्याप्त इन सामाजिक दोषों का मनसा–वाचा–कर्मणा रेखांकित किया।स्वामी जी दूसरे धर्मो की कमियों को रेखांकित करने से भी कभी नहीं कतराते थे। वर्ष 1983 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में उन्होंने जो ऐतिहासिक भाषण दिया था, उसने आध्यात्यिकता के वास्तविक अर्थो को हमारे सामने उद्घाटित कर दिया था। साथ ही उन्होंने हमं यह भी बताया था कि सच्ची धर्मनिरपेक्षता कबे क्या मायने हैं। जो आज देश और दुनिया दोनों के ही लिए समान रूप से प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1.	गुप्ता एम.एल. एवं शर्मा डी.डी.	–	समाजशास्त्रीय विचारों आधार, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा,
2.	सक्सेना बी.के.	–	आधुनिक भारतीय सामाजिक एक राजनीतिक चिंतन
3.	नई दुनिया	–	12 जनवरी 2013
4.	पत्रिका	–	9, 10, 12 जनवरी 2013

वैश्वीकरण और हिन्दी साहित्य

डॉ. अवधेश कुमार जैन
प्राध्यापक

साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। जिस प्रकार सूर्य की किरणों से जगत में प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार साहित्य के अध्ययन से समाज में चेतना का संचार होता है। महज कुछ दशकों से भारत ही नहीं पूरे विश्व में यह बात बड़े जोर-शोर से कही जा रही है कि वैश्वीकरण की बदौलत एक नयी दुनिया उभर रही है। एक 'ग्लोबल-विलेज' की अवधारणा अपना मूर्त रूप ले रही है। आज भारत ने साफ्टवेयर तथा तकनीकी सेवा उद्योग में वैश्विक स्पर्धा के नियमों की नई इबारत लिखी है। विकास की प्रक्रिया हालाँकि पूरी रफ्तार पर है, किंतु विकासशील से पूर्ण विकसित स्थिति में पहुँचने का लक्ष्य अभी दूर है। यह तेज समय भारत के लिए जहाँ एक ओर उत्साह वर्धक है, वहीं दूसरी ओर हमें अनेक चुनौतियों से जूझना भी है।

साहित्य के अपने सरोकार होते हैं, वह इन स्थितियों-परिस्थितियों से अपने को कैसे अलग रख सकता है। यह सच है कि साहित्य में मानवीय संवेदना की केन्द्रिय उपस्थिति रही है। पर आज वैश्वीकरण, निजीकरण और बाजारीकरण के बीच से सिर उठाते उपभोक्तावाद के दौर में और मूल्यहीनता के वातावरण में इस मानवीय संवेदना और जीवन मूल्यों की रक्षा किस प्रकार हो-यह आज का सबसे ज्वलंत प्रश्न है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि वर्तमान दौर साहित्य के लिए चुनौतियों भरा है। वैसे तो सामाजिक विकास के क्रम में साहित्य के लिए पहले भी अनेक चुनौतियाँ आती रही हैं, पर आज के विकट समय में यह चुनौती सबसे भयावह है।

वैश्वीकरण ने विश्व स्तर पर विचारों, घटनाओं एवं सूचनाओं हेतु एक मंच तैयार कर दिया है, जिससे सामाजिक परिस्थितियों में अनचाहा बदलाव आया है, जिससे साहित्य भी उसी ओर मुड़ गया। साहित्य की सभी विधाओं पर इसका असर देखने मिल रहा है, क्योंकि आज मुख्य मुद्दा ही बदल गया है। परिवर्तन भले ही प्रकृति का नियम हो, लेकिन आज उसने मानवीय मूल्यों को भी बदल दिया है। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत और विदेश में मूलभूत अंतर है। विदेशी संस्कृति, धर्म और दर्शन के मुकाबले भारत में धर्म व्यापक है। संस्कृति, समाज और दर्शन सभी धर्म के हिस्से हैं, जीवन में जो आचरण होता है, वह कहीं न कहीं धर्म से जुड़ा हुआ होता है। अत: भारतीय साहित्य को इस दृष्टि से समझना आवश्यक है।

आज बाजारवाद ने हमारी जीवन शैली और संवेदना दोनों को प्रभावित किया है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि बड़ी से बड़ी दुर्घटना पर भी हम चुप्पी साध लेते हैं। तटस्थता संवेदन हीनता का ही पर्याय है। आज समकालीन साहित्य से सिर्फ प्रेम ही नहीं गायब हो गया है, बल्कि दुनिया को बदलने के सुंदर सपने भी कहीं खो से गये हैं। उसका स्थान लिया है शहरी विभ्रम, नकली आधुनिकता, चर्चित चेहरों को बहुतायत, दरकते विवाह संबंध आदि ने। बहुत से लोगों की मान्यता है, कि पुरानी लोक पर चलकर अब साहित्य अपना भविष्य सुरक्षित नहीं रख सकता। इसके चलते साहित्य में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। नई-नई कथायें जन्म ले रही हैं। इसी के साथ नारी चेतना और दलित-विमर्श आज के अनिवार्य विषय हैं, क्योंकि इसके पीछे मुक्ति की आकांक्षा है। 'आदमी की निगाह में औरत'/राजेन्द्र यादव, 'अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य'/ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'जीवन की तनी डोर : ये स्त्रियाँ'/नीलम कुलश्रेष्ठ ऐसे ही सार्थक प्रयास हैं।

समकालीन साहित्य की मूल चिंता अपने समय और परिवेश के सच को उसकी व्यंजनात्मक स्थिति में समझना है। वहीं दूसरी ओर आज के समय में पठनीयता की समस्या अर्थात संप्रेषण की समस्या है। यदि रचनाकार लोक से जुड़ने की अपेक्षा लोकप्रियता से जुड़ जाये तो साहित्य में गंभीरता की क्षति होगी। आज समाज को टुकड़ों में बांटने वाला साहित्य नहीं चाहिए, बल्कि जोड़ने वाले साहित्य की आवश्यकता है। वहीं रचनाकार भी चाहता है कि उसके सराहक इन सब बातों के प्रति सजग बने और उसी स्तर पर उसकी रचनाओं को समझे और सराहे।

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना
एमपी मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2022 :

डॉ.डी.के.नेमा
सह.प्राध्यापक वाणिज्य

यह योजना मध्य प्रदेश के युवाओं को अपने कारोबार को शुरू करने और आगे बढ़ाने के लिए ऋण की सुविधा प्रदान करेगी। इस योजना के माध्यम से सरकार युवा वर्ग को ऋण प्रदान करेगी जिससे युवा वर्ग अपने रूचि के अनुसार उद्योग को शुरू कर सकते हैं। इस योजना के माध्यम से युवा वर्ग को नौकरी के पीछे भागने की बजाय अपना ही उद्योग स्थापित करने का प्रोत्साहन दिया जाता है। इस "MP Mukhyamantri Swarojgar Yojana" को मध्य प्रदेश सरकार ने 1 अगस्त 2014 को शुय किया था। इस योजना का लाभ प्रदेश के सभी नागरिक उठा सकते हैं।

एमपी मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2022 के लाभ एवं विशेषताएं

इस योजना से प्रदेश के नागरिकों को ऋण उनके रोजगार को खोलने के लिए मिलेगा, ताकि वो पढ़े लिखे युवाओं को रोजगार दे सकें।

इस योजना के कारण प्रदेश की आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा और राजस्व भी प्राप्त होगा।

मध्य प्रदेश राज्य की बेरोजगारी की दर में भी गिरावट आएगी।

इस योजना का लाभ सभी वर्ग के लोग प्राप्त कर सकते हैं।

एमपी मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2022 का लाभ कौन–कौन उठा सकता है?

पात्रता की शर्ते

सबसे पहले आवेदक मध्य प्रदेश का स्थाई निवासी होना अनिवार्य है।

आवेदक कम से कम पांचवी पास होना चाहिए।

आवेदन कर्ता की उम्र 18 से 45 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

आवेदक आयकर दाता नहीं होना चाहिए।

इसके अलावा आवेदक किसी भी बैंक या वित्तीय संस्था आदि से डिफाल्टर घोषित नहीं होना चाहिए।

इस योजना का लाभ केवल एक बार ही उठाया जा सकता है।

Important Documents Required for MP Mukhyamantri Swarojgar Yojana

आधार कार्ड

पासपोर्ट साईज फोटो

जन्म प्रमाण पत्र

निवास प्रमाण पत्र

पहचान पत्र

शैक्षणिक योग्यता की मार्कशीट या पांचवी कक्षा का रिपोर्ट कार्ड

आय का प्रमाण पत्र

आवेदन प्रक्रिया :–

आवेदक द्वारा एमपी ऑनलाईन पोर्टल के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में अवयस्क सहपत्रों सहित ऑनलाईन आवेदन जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र में प्रस्तुत करना होगा।

सभी प्राप्त आवेदन पंजीबद्ध किया जाएगा। पूर्ण/अपूर्ण आवेदन की सूचना 15 दिनों के अंदर आवेदक को जानकारी दे दी जाएगी।

आवेदक द्वारा प्रस्तावित गतिविधि की जनरल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (सामान्य परियोजना प्रतिवेदन) तैयार कर आवेदन के साथ संलग्न की जावेगी।

Career Choice

Dr. Malti Nayak
HOD, English

Choosing the right career path is one of the most crucial decisions that a student encounters after his board examination. More often student are well versed with the Prospects of their respective choices while very often students simply ends up being a part of the rat race. Many join coaching centers merely for the sake of popularity or to follow the studious candidates.

Clarity of thoughts at this juncture plays a vital role in helping the students trudge along the right career path. An early and constructive exposure, timely guidance and conseling and identifying once area of interest and expertise will help in shaping a fruitfull and rewarding career. Professional career counsellors also help in listing out the aptitude tests that a candidate must appear for, once the candidate's interest & career indination is identified.

There are some few steps that can help to develop a right approach towards competitive exams. The first step is that although self study is the key to a sound preparation, an additional guidance that is based on indepth analysis and knowledge of the given subject matter is always beneficial, for the student. Hence enrolment in a coaching institute should be done only after careful analysis of the credibility of the followings-

(a) Faculty
(b) Demo class
(c) Study material
(d) Question Bank
(e) Batch wise schedules
(f) Students Strength distribution

Secondly before registering yourself for the exam, it is important to know the syllabus pattern and the range of concepts that will be dealt with. Understanding the marking scheme for various topics, nature of the questions, Mcqs etc will serve as an important guidelines towards the exam that you decide to attempt.

Thirdly Bruch up with your basics first ! Revisiting your basics will help in attempting the comlex questions with more clarity. Based on your preparation at this stage you can plan a mind map for the rest of the syllabus.

Fowrthly interact with the previous toppers for the first hand information. This interaction will not only help you in making the right decision but will also present several useful point to remember about studing in the right manner and choosing the right institute for your career advancements. Finaly gallop towards your dreams with guidance, hard work and dedication.

गृह विज्ञान में रोजगार के अवसर

डॉ.आराधना श्रीवास
सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान)

वर्तमान समय में गृहिणी को घर के साथ–साथ रोजगार की भी आवश्यकता होती है। आधुनिक समय में औद्योगीकरण व नगरीकरण के कारण वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो गई। प्रत्येक परिवार के जीवन दर्शन में परिवर्तन आने से परिवार के सदस्य उत्पादक कार्यो की अपेक्षा उपभोग को अधिक महत्व देने लगे हैं, इसके परिणामस्वरूप जीवन स्तर उन्नत हो गया है व गृहिणी को इस उन्नत जीवन स्तर बनाए रखने के लिए पति के साथ–साथ आर्थिक क्षेत्र में भी योगदान देना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। आज स्त्री भी पुरूष के साथ–साथ कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में कार्य करती है। गृह विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम को भी इस प्रकार बनाया गया है कि गृहिणी घरेलू क्रियाओं को सुचारू रूप से करने के साथ–साथ कछ रोजगार भी कर सके।

व्यवसाय का चुनाव – व्यवसाय का चुनाव रूचियों तथा योग्यताओं के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय के लिए कुछ विशिष्टताओं की आवश्यकता होती है,जिनमें ईमानदारी,समय की पाबंदी तथा व्यवसाय के प्रति लगन प्रमुख है। किसी भी विशिष्टता की कमी से व्यवसाय में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है।

रोजगार के क्षेत्र – गृह विज्ञान की शिक्षा अनेक व्यवसाय के मार्ग खोल देती है। छात्राएँ अपनी रूचि के आधार पर किसी भी व्यवसाय का चयन कर सकती हैं।

1. बालवाड़ी शिक्षिका – गृह विज्ञान प्रशिक्षण प्राप्त छात्राएँ बालवाड़ी शिक्षिका बनकर छोटे–छोटे शिशुओं में प्रारम्भ में अच्छी आदतों का निर्माण कर सकती हैं। उसे शिशुओं के सामान्य विकास व मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान होता है जिससे वह उनकी उम्र के अनुरूपउचित मार्गदर्शन दे सकती हैं। यदि उसे किसी अन्य विद्यालय में बालवाड़ी शिक्षिका के पद पर नौकरी मिलती है तो कर सकती है अन्यथा वह स्वयं की निजी बालवाड़ी भी प्रारम्भ कर सकती है। वर्तमान समय में कई कार्यरत महिलाओं के सामने अपने छोटे शिशुओं के कार्य समय में रखने की समस्या हाती है। अत: ऐसी माताओं के 6 माह से 3 वर्ष तक के बच्चों हेतु वह झूलाघर खोल सकती हैं। इस हेतु वह कुछ नर्सरी खिलौने, एक कमरा, छोटा बिस्तर व एक आया का प्रबन्ध करके झूलाघर प्रारम्भ कर सकती है। गृह विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्राएँ निश्चित ही बच्चों का अच्छा मार्गदर्शन कर सकती है व उनके चरित्र निर्माण में सहायक हो सकती है।

2. समाज सेविका – गृह विज्ञान प्रशिक्षित छात्रा समाज सेविका बनकर समाज में फैली कुरीतियों को मिटाकर स्वस्थ वातावरण निर्मित कर सकती है। वह कुछ शिक्षित महिलाओं को एकत्र कर एक संगठन बना सकती है।

3. प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशक – गृह विज्ञान का अध्ययन प्राप्त गृहिणी या छात्रा प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। ऐसी प्रौढ़ महिलाएं जिन्हें दिन में कार्य या रोजगार के कारण पढ़ाई का समय नहीं मिलता उन्हें शाम या रात्रि में भी पढ़ा सकती है।

4. पोषण विशेषज्ञ – गृह विज्ञान में आहार एवं पोषण पर भी अध्ययन किया जाता है। इस विषय में स्नातकोत्तर अध्ययन

भी किया जाता है। गृह विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्रा पोषण विशेषज्ञ के रूप में नौकरी कर सकती है या निजी कार्य कर सकती है। वह विभिन्न संस्थाओं जैसे– अस्पतालों, स्कूलों, होटलों, रेस्टोरेंटों आदि में पोषक विशेषज्ञ का कार्य कर सकती हैं।

5. आन्तरिक सज्जा विशेषज्ञ – गृह विज्ञान में आन्तरिक सज्जा विषय पर भी अध्ययन किया जाता है। गृह विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्रा एक अच्छी आन्तरिक सज्जा विशेषज्ञ बन सकती है। वह कई विभिन्न क्षेत्रों में जैसे–पुष्पसज्जा, रांगोली, अल्पना, सजावटी वस्तुएँ निर्मित करना, रंग योजना करना, अपुनयोगी वस्तुओं से सजावटी वस्तुएँ बनाना, फर्नीचर योजना बनाना, नक्शा बनाना, कमरों की सजावट करना, भूमि स्थल सज्जा करना आदि क्षेत्रों में परामर्श के दे सकती हैं।

6. गृह विज्ञान शिक्षिका – गृह विज्ञान शिक्षा प्राप्त छात्रा गृह विज्ञान शिक्षिका बनकर गृह विज्ञान का ज्ञान अन्य छात्राओं को दे सकती हैं। स्वयं भी कई प्रशिक्षण कक्षाओं का सफल संचालकर कर सकती हैं, जैसे पुष्प सज्जा प्रशिक्षण, पाक–कला प्रशिक्षण, आन्तरिक सज्जा प्रशिक्षण, सजावटी वस्तुओं का निर्माण सिलाई, कढ़ाई, बुनाई प्रशिक्षण, बेकरी प्रशिक्षण, भोज्य पदार्थ संरक्षण आदि के द्वारा भी छात्राओं को विभिन्न क्षेत्रों में निपुण कर सकती हैं।

7. ग्राम सेविका – गृह विज्ञान में अध्ययन प्राप्त छात्रा ग्राम सेविका का कार्य भी सफलतापूर्वक कर सकती हैं। वह ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा दे सकती है, परिवार नियोजन की जानकारी दे सकती है।, आरोग्य, स्वच्छता रोगों से बचाव के टीकों आदि की जानकारी दे सकती हैं।

8. स्व–रोजगार – वर्तमान में सरकार द्वारा बेरोजगारी समस्या से निपटने हेतु कई प्रयत्न किये जा रहे हैं। सरकार द्वारा शिक्षित व्यक्तियों को स्व–रोजगार हेतु ऋण दिया जाता है। गृह विज्ञान शिक्षण प्राप्त छात्राएँ भी इस प्रकार का ऋण लेकर स्वयं का रोजगार प्रारम्भ कर सकती हैं।

9. शोध कार्यकर्ता – गृह विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त छात्रा शोध कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर सकती हैं। वह गृह विज्ञान विषय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान करके नई–नई जानकारियाँ प्राप्त कर सकती हैं।

वर्तमान में गृह विज्ञान विषय के क्षेत्र में भी कई प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा छात्राएँ अनुसंधान व शोध कार्य कर सकती हैं वह कई विभिन्न प्रयोग कर सकती हैं।

10. रेडियो कलाकार – अन्य कार्यक्रमों की तरह ही रेडियो पर महिलाआं और बच्चों के कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमां में भाग लेकर आहार पोषण स्वास्थ्य, बाल विकास, गृह प्रबन्ध आदि सभी क्षेत्रों में ज्ञान का प्रसार कर व्यवसाय प्राप्त कर सकते हैं।

गृह विज्ञान में करियर की अपार संभावनाएँ हैं। गृह विज्ञान से रोजगार की राह आसान हो जाती हैं। गृह विज्ञान का करियर आज की प्रगतिशील व आधुनिक विचारों वाली महिला के लिए एक आदर्श करियर के रूप में ह। जिनके पास सौंदर्य बोध है, समकालीन कला की समझ है और आधुनिक हाउसकीपिंग को लेकर जिज्ञासा भी है।

विकास की एक अहम कड़ी : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

डॉ असलम खान

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है। इसकी महत्वता अधिक इसलिए है कि यह विकास के सभी कारकों को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। सन् 1600 को ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना ने भारत देश की संस्कृति, सभ्यता, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर इन सभी को पश्चिमी सभ्यता से अंग्रेजी रीति रिवाज नीति आदि से बदतर बताते हुए भारतीयों को इनके अनुसार जीने रहने आदि के अनुसार जीवन यापन करने के लिए बाध्य किया गया। इनका समय-समय पर विरोध हुआ आजादी के लिए कई आंदोलन हुए, हजारों लाखों स्वतंत्रता सेनानियों ने प्राणों की आहूति देकर भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। आजादी उपरांत भारत सरकार ने सभी प्रकार के परिवर्तन किये और अपने संविधान, आयोग, नीति आदि के अनुसार भारतीयों के जीवन जीने एवं विकास के पथ पर देश को आगे बढ़ाने का कार्य किया गया उसी क्रम में शिक्षा नीति का लागू होना अपने आप में एक बड़ा कदम है। भारत में आजादी के बाद 3 शिक्षा नीतियां बनाई जा चुकी हैं पहली शिक्षा नीति 1968 में, दूसरी शिक्षा नीति 1986 में, जिसे 1992 की मैं मोडिफाइड किया गया था जिसे हम कहीं कहीं 1986/92 नीति भी पढ़ते हैं।

चूंकि हम जानते हैं कि प्रथम शिक्षा नीति जो 1968 में आयी थी के अध्यक्ष श्री दौलत सिंह कोठारी तथा 1986 में आयी शिक्षा नीति जिसे 1992 में संशोधित किया गया था के अध्यक्ष श्री आचार्य राममूर्ति जी थे। वर्तमान में आई नई शिक्षा नीति 2020 के अध्यक्ष श्री के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में बनाई गई। तीसरी शिक्षा नीति छम्झ नई शिक्षा नीति 2020 है जिसे कैबिनेट के द्वारा जुलाई 2020 में पारित किया गया।

कहते हैं कि किसी देश में कोई बड़ा बदलाव करना हो तो सबसे पहले उस देश की शिक्षा नीति को बदलना चाहिए। पूरी दुनिया में शायद इससे बड़ा परामर्श या विचार विमर्श कभी नहीं हुआ होगा,इतना बड़ा नवाचार दुनिया के लिए उदाहरण है, जब किसी नीति पर देश के कोने-कोने के अभिभावकों से,छात्रों से,अध्यापकों से,विशेषज्ञों से,शिक्षाविदों से,राजनीतिज्ञों से, जनप्रतिनिधियों से यहां तक कि 1 लाख 25 हजार ग्राम समितियों से विचार विमर्श किया गया हो। तब कहीं जाकर तीसरी शिक्षा नीति छम्झ नई शिक्षा नीति 2020 है जिसे कैबिनेट के द्वारा जुलाई 2020 में पारित किया गया और लागू हुई।

यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि 34 साल बाद शिक्षा नीति में परिवर्तन हुआ था। अब तक भारत की शिक्षा 10+2 की पद्धति पर चलती थी, जिसमें दसवीं तक सभी विद्यार्थियों को एक समान परीक्षा देनी पड़ती थी तथा दसवीं के बाद 11वीं से विषय का चयन या स्ट्रीम का चुनाव करना पड़ता था। लेकिन नई शिक्षा नीति में यह पूरी प्रक्रिया बदल गई है यह 5+3+3+4 में परिणित हो गई है।

आज की व्यवस्था में यदि किसी छात्र ने 4 साल इंजीनियरिंग कोर्स करने के बाद या 6 सेमेस्टर पढ़ने के बाद किसी कारण बीच में आगे पढ़ाई न की तो छात्र की पढ़ाई का कोई महत्व नहीं है और छात्र का अध्ययन बेकार हो जाता है। पर नई शिक्षा नीति मल्टी इंटर एंड एग्जिट कॉन्सेप्ट पर आधारित है और इस शिक्षा नीति में छात्र का कोई भी साल बर्बाद नहीं होगा। प्रथम साल पढ़ाई पूरी करने में सर्टिफिकेट, दूसरी साल में डिप्लोमा, तीसरी साल में डिग्री एवं 4 साल में डिग्री के साथ शोध का प्रमाण पत्र दिए जाएंगे, साथ ही साथ क्रेडिट बैंक सिस्टम लागू होगा जिसमें डिजिटल लाकर के माध्यम से वह क्रेडिट लमा करेगा और अगली आने वाली परीक्षा में या अंत में वह क्रेडिट अंक डिग्री में जोड़कर मिल जाएंगे।

नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य :-

- सत्र 2035 तक सेकेंडरी स्कूल में 100 प्रतिशत नामांकन कराना (वर्तमान में 56.5 प्रतिशत हैं)
- उच्च शिक्षा विभाग में 50 प्रतिशत नामांकन करना (वर्तमान में 26.3 प्रतिशत है)
- 30 छात्रों पर एक शिक्षक की विचारधारा पर काम किया जाएगा
- सकल घरेलू उत्पाद जी0डीपी0 का 6 प्रतिशत खर्च शिक्षा पर होगा (जो कि वर्तमान में 4.43 प्रतिशत है)
- उच्च शिक्षा में 3.5 करोड़ नई सीटें जोड़ी जाएंगी।
- 2040 तक हर जिले में विश्वविद्यालय होगा।
- 2020 तक स्कूल से दूर रहे दो करोड़ बच्चों को फिर से मुख्यधारा में जोड़ना है।

- 2025 तक 100 प्रतिशत प्राथमिक साक्षरता पर बल दिया जाएगा।
- उच्च शिक्षा में जी.ई.आर. को 2035 तक 50 बढ़ाया जाना है।
- नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत जी.ई.आर. के साथ पूर्व विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना है।

नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिंदु :-

- नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत जी.ई.आर. के साथ पूर्व विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना है।
- पुरानी शिक्षा नीति में 3 भाषाएं होती थी जो लागू रहेंगी किंतु वर्तमान नीति NEP में कम से कम इन तीन भाषाओं में से 2 भाषाएं भारतीय होंगी।
- New Education Policy 2020 (NEP) में रिसर्च को बढ़ावा दिया जाएगा।
- उच्च शिक्षा पहले ग्रांट बेस्ड (Grant Based) पर आधारित थी अर्थात ग्रांट की मदद से संचालित होती थी परंतु नई शिक्षा नीति में इसे लोन बेस्ड (Loan Based) बनाया गया।
- कॉमन एंट्रेंस एग्जामिनेशन के माध्यम से छात्रों को कॉलेज में प्रवेश दिया जाएगा यह परीक्षा NTA (National TestAgency) के माध्यम से कराई जाएगी जो साल में 2 बार होगी। यदि किसी छात्र के हायर सेकेंडरी में अंक कम हैं तो वह इस परीक्षा के माध्यम से कॉलेज में प्रवेश ले सकता है किंतु अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रम जैसे मेडिकल इंजीनियरिंग कोर्सेस की परीक्षाएं इसमें शामिल नहीं होगी।
- छात्रों के रिपोर्ट कार्ड परीक्षा अंकों के साथ उसके व्यवहार, अनुशासन, विभिन्न गतिविधियों, विषय, सेवा भाव आदि पर दिए जाएंगे। रिपोर्ट कार्ड को 360 डिग्री एसेसमेंट के आधार पर बनाया जाएगा जिसमें छात्र का मूल्यांकन इसके सहपाठी, विषय शिक्षक के अलावा छात्र स्वयं कर सकेगा। रिपोर्ट कार्ड में छात्र की अन्य गतिविधयों पर भी बल दिया जायेगा इसमें भी अंक दिए जाएंगे।
- ट्यूशन और कोचिंग द्वारा रट लगाने की परंपरा समाप्त की जाएगी।
- New Education Policy 2020 (NEP) के अनुसार जिस विषय में आप कमजोर हैं तो उसकी चॉइस भी दी जाएगी जिसमें एडवांस या उससे नीचे लेवल का आप विकल्प का चयन कर सकते हैं।
- नई शिक्षा नीति में एम फिल डिग्री को खत्म कर दिया गया।
- विदेशी यूनिवर्सिटी को भारत में खोलने के लिए अनुमति दी जाएगी।
- 2020 तक 4 साल की B.ed डिग्री होगी जो 12वीं पास के बाद इंटीग्रेटेड B.ed कोर्स के माध्यम से की जाएगी।
- हर कॉलेज को मल्टीडिसीप्लिनरी बनाया जाएगा जिसमें हर विषय का अध्ययन होगा और इनमें ऑटोनॉमस पद्धति लागू होगी।
- समग्र विकास कार्ड के साथ मूल्यांकन प्रक्रिया में पूरी तरह सुधार, सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की प्रगति पर पूरी नजर रखी जाएगी।
- नई शिक्षा नीति में सभी राज्यों को लागू करना अनिवार्य नहीं होगा राज्य इसमें अपने अनुसार बदलाव कर सकती है।
- किताबों का बोझ कम होगा। ज्ञान ज्यादा पद्धति पर नई शिक्षा नीति आधारित होगी और रटंत विद्या नहीं होगी, छात्रों की नीव पर बल दिया जाएगा।
- संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया जाएगा इसे स्कूलों एवं महाविद्यालय में अध्यापन कार्य किया जाएगा।
- कक्षा छठवीं से व्यवसायिक शिक्षा शुरू होगी।
- स्कूलों में शैक्षणिक धाराओं, पाठ्यतर गतिविधियों और व्यवसायिक शिक्षा के बीच खास अंतर नहीं होगा।
- क्म से कम पांचवीं कक्षा तक मात्र भाषा या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई होगी।
- समग्र विकास कार्ड के साथ मूल्यांकन प्रक्रिया में पूरी तरह सुधार, सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की प्रगति पर पूरी नजर रखी जाएगी।
- पढ़ने लिखने और गणना करने की बुनियादी योग्यता पर जोर दिया जाएगा।
- 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की आंगनवाड़ी प्री स्कूलिंग के साथ नए 5+3+3+4 स्कूली पाठ्यक्रम लागू

होगा।

Education Policy 2020 (NEP) में स्ट्रीम सिस्टम खत्म होगा। पहले साइंस का विद्यार्थी आर्ट एंड कॉमर्स का विषय नहीं पढ़ पाते थे लेकिन नई शिक्षा पद्धति में वह अब ऐसा कर पाएगा। स्टीम सिस्टम खत्म होगा इसके लिए अलग-अलग विषयों का एक पूल तैयार किया जाएगा और छात्र को उस पूल के अनुसार पढ़ाई करनी होगी।

- अब तक 10+2 के फार्मेट में स्कूल शिक्षा चला करती थी लेकिन नई शिक्षा नीति में इसको 5+3+3+4 में बदल दिया गया।
- स्कूलों एवं कॉलेजों में संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया जाएगा।
- आईआईटी में कला एवं Humanties के विषय भी पढ़ाए जाएंगे।
- देश के छात्र कालेज में प्रवेश हेतु कॉमन एप्टिट्यूड टेस्ट दे पाएंगे।
- यदि छात्रों के 12वीं के अंक कम आते हैं तो छात्र कॉमन एप्टीट्यूड टेस्ट Common Aptitude Test देकर उसके नंबर12वीं में जोड़कर कॉलेज में एडमिशन ले पाएंगे।
- संगीत व योग जैसे विषयों पर महत्व दिया जाएगा।
- कॉलेज और स्कूल एक निश्चित शुल्क से अधिक नहीं ले पाएंगे।
- कॉलेज में छात्र अलग-अलग विषय पर अध्ययन कर सकते हैं इस व्यवस्था को मल्टी एंट्री एंड मल्टी एग्जिट व्यवस्था कहा जाता है छात्र जिस विषय की पढ़ाई करना चाहेंगे तो कर सकेंगे और छोड़ना चाहंगे तो छोड़ सकेंगे।
- उच्च शिक्षा में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट बनाया जाएगा इसके तहत छात्र एक साथ एक से ज्यादा कोर्स करना चाहते हैं तो कर सकेंगे यदि छात्र उस कोर्स को पूरा कर दूसरा कोर्स करना चाहते हैं तो कर सकेंगे इसमें डिजीलॉकर के माध्यम से यह सारा कार्य संचालित होगा।

नई शिक्षा नीति की संरचना :-

तीसरी शिक्षा नीति NEP नई शिक्षा नीति 2020 है जिसे कैबिनेट के द्वारा जुलाई 2020 में पारित किया गया यह शिक्षा नीति निम्न नियम पर आधारित हैं -

नीति की संरचना का सूत्र 5+3+3+4

(1) 5 फाउंडेशन स्टेज 5 वर्ष :-

फाउंडेशन स्टेज को दो पार्ट में बांटा गया है

प्री प्राइमरी स्टेज - इस स्टेज में 3 वर्ष की पढ़ाई होगी जैसे वर्तमान शिक्षा पद्धति नर्सरी, एलकेजी, यूकेजी की पढ़ाई होती है ये कक्षाएं आंगनवाड़ी मे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित की जाएंगी।

प्राइमरी स्टेज - इस स्टेज में 2 साल की पढ़ाई होगी पहली एवं दूसरी के 2 साल में बच्चों को खेलकूद की गतिविधियों व अन्य गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी।

प्रीप्राइमरी स्टेज - 3 वर्ष (1 Year Ner + 1 Year LKG + 1 Year UKG)

प्राइमरी स्टेज - 2 वर्ष (1 Year 1st Class + 1 Year IInd class)

नई शिक्षा नीति 2020 की फाउंडेशन स्टेज में निम्न बातों पर बल दिया गया है :-

- इस स्टेज में 5 वर्ष की पढ़ाई फाउंडेशन स्टेज मानी जाएगी।
- इसका करकुलम NCERT द्वारा तैयार किया जाएगा।
- इसमें बच्चों की नीव मजबूत की जाएगी।
- किताबें कम होगी किताबों का बोझ कम होगा।
- खेल खेल में बच्चों को सिखाया जाएगा।

(2) 3 प्रीपेरिटरी स्टेज 3 वर्ष :-

1 Year IIIrd Class

1 Year IVth Class

1 Year Vth Class

नई शिक्षा नीति 2020 की प्रीपेरिटरी स्टेज में निम्न बातों पर बल दिया गया है :-

- छात्रों का परिचय विज्ञान, कला, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों से कराया जाएगा।
- अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता नहीं रहेगी इसे केवल विषय के तौर पर पढ़ाया जाएगा।
- स्कूलों का अंग्रेजीकरण का दौर समाप्त हो जाएगा।
- पंचवी कक्षा तक की पढ़ाई मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा और राष्ट्रीय भाषा में होगी।
- कक्षा तीसरी से पांचवीं तक छात्रों को भविष्य के लिए तैयार किया जाएगा।
- प्रीपेरिटरी स्टेज में 3 साल की पढ़ाई होगी।

(3) 3 मिडल स्टेज 3 वर्ष :-

1 Year Vth Class
1 Year VIIth Class
1 Year VIIIth Class

नई शिक्षा नीति 2020 की मिडल स्टेज में निम्न बातों पर बल दिया गया है :-

- इस स्टेज में 3 साल की पढ़ाई होगी।
- छठवीं में छात्रों को कंप्यूटर की कोडिंग सीखने का मौका मिलेगा इससे वह कम उम्र में कंप्यूटर चिप्स, मोबाइल आदि बना सकेंगे और चीन देश की तर्ज पर छात्र कंप्यूटर के क्षेत्र में आगे बढ़ पाएंगे।
- छात्रों को तय पाठ्यक्रम के आधार पर पढ़ाया जाएगा।
- छठवीं कक्षा से छात्रों को इंटरशिप का मौका मिलेगा अगर किसी छात्र को किसी विषय में रूचि है तो वह दक्षता हासिल करना चाहता है तो वह इंटरशिप के माध्यम से दक्षता हासिल कर सकता है।

(4) 4 सेकेंडरी स्टेज 3 वर्ष :-

1 Year IXth Class
1 Year Xth Class
1 Year XIth class
1 Year XIIth Class

नई शिक्षा नीति 2020 की सेकेंडरी स्टेज में निम्न बातों पर बल दिया गया है :-

- छात्रों में विषय के प्रति गहरी समझ पैदा की जाएगी।
- बड़े बड़े लक्ष्य तय करने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाएगा।
- छात्रों की विश्लेषण क्षमता को भी बढ़ाया जाएगा।
- छात्राओं की क्षमता पर ध्यान दिया जाएगा।
- रटने की तुलना में समझने की क्षमता पर बल दिया जाएगा।
- बोर्ड परीक्षा में उत्तर छात्र अपनी मनपसंद भाषा में लिख पाएंगे।
- 10वीं एवं 12वीं बोर्ड होगी लेकिन इनकी अहमियत को कम कर दिया जाएगा।
- प्हले 11वीं कक्षाओं में विषय का चुनाव होता था अब नौवीं कक्षा में विषय का चुनाव होगा।
- नवमीं कक्षा से 12वीं कक्षा की पढ़ाई सेमेस्टर पर आधारित होगी 1 साल में दो परीक्षाएं होंगी दोनों सेमेस्टर के अंक को जोड़कर परीक्षा परिणाम तैयार किया जाएगा।

(5) स्नातक पाठ्यक्रम की संरचना :-

विद्यार्थी को स्नातक स्तर प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष में निम्नानुसार विषय का अध्ययन करना अनिवार्य होगा :-

- एक मुख्य विषय मेजर
- एक गौण विषय माइनर
- एक वैकल्पिक विषय ओपन इलेक्टिव
- एक व्यवसायिक पाठ्यक्रम का विषय (कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम) वोकेशनल
- अनिवार्य के विषय में आधारपाठ्यक्रम (योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम) फाउंडेशन कोर्स
- इंटरशिप/परियोजना/शिक्षुता/कम्यूनिटी इंगेजमेंट में से कोई एक

क्रमांक	विषय एवं उसका प्रकार	प्रश्नपत्र/प्रश्नपत्र वार क्रेडिट/विषय वार एवं कक्षावार क्रेडिट				स्नातक के विषय वार कुल क्रेडिट
		प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	चतुर्थ वर्ष	
	पाठ्यक्रम का स्तर	Certificate	Diploma	Degree	Deg. With Research	
1	मुख्य विषय मेजर	2x6=12	2x6=12	2x6=12	2x6=12 2x4=8 Total=20	56 क्रेडिट
2	गौण विषय माइनर	1x6=6	1x6=6	1x6=6	2x4=8	28 क्रेडिट
3	वैकल्पिक विषय ओपन इलेक्टिव	1x6=6	1x6=6	1x6=6	....	18 क्रेडिट
4	व्यवसायिक पाठ्यक्रम का विषय (कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम) वोकेशनल	1x4=4	1x4=4	1x4=4	....	12 क्रेडिट
5	अनिवार्य के विषय में आधार पाठ्यक्रम (योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम) फाउंडेशन कोर्स	2x4=8	2x4=8	2x4=8	....	24 क्रेडिट
6	इंटरशिप/परियाजेना/शिक्षुता/कम्यूनिटी इंगेजमेंट में से कोई एक	1x4=4	1x4=4	1x4=4	2x6=12	24 क्रेडिट
कुल विषय/ कुल क्रेडिट	नोट :– (प्रायोगिक परीक्षा एवं आंतरिक मूल्यांकन अतिरिक्त होगा)	40 कुल 08 प्रश्न पत्र होंगे	40 कुल 08 प्रश्न पत्र होंगे	40 कुल 08 प्रश्न पत्र होंगे	40 कुल 08 प्रश्न पत्र होंगे	160 कुल 32 प्रश्न पत्र होंगे

(6) स्नातक चतुर्थ वर्ष में अध्ययन के विषय :–

- तीन मुख्य प्रश्न पत्र
- शोध प्रविधि, स्नातक शोध प्रबंध

इंटरशिप/परियोजना/शिक्षुता/कम्यूनिटी इंगेजमेंट में से कोई एक

इस प्रकार नई शिक्षा नीति 2020 रोजगार के नए नए दरवाजे खोलेगी। छात्रों को अपनी पसंद के विषय के चयन की सुविधा के साथ–साथ उनको प्रशिक्षण की व्यवस्था की बाद इस नीति में की गई जो कहीं न कहीं शासकीय सेवा क्षेत्र में अलावा अशासकीय क्षेत्रों में अध्ययन पूरा कर चुके छात्रों को रोजगार के लिये सहायक होगा। इस प्रकार प्रदेश की बेरोजगारी के साथ–साथ देश की बेरोजगारी भी कम होगी। युवा वर्ग को रोजगार मिलने से कहीं न कहीं सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी,राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी, जीवन स्तर उच्च होगा आदि इसी प्रकार विकास के कारकों में वृद्धि का क्रम चलता रहेगा और भविष्य में यह नीति विकास को बढ़ाने के लिए और अधिक कारगर सिद्ध होगी।

PROMINENT TOOLS IN SYNTHETIC PATHWAYS OF GREEN TECHNOLOGY : MICROWAVE & ULTRASONIC IRRADIATION

Dr.Brajendra Singh Kusmariya
Assistant Professor,Chemistry

Scientists must design safer and cleaner approaches to manufacture the products need by mankind.

INTRODUCTIONThe term "green chemistry" is defined as "the invention, design and application of chemical products and processes to reduce or to eliminate the use and generation of hazardous substances." Green Chemistry can diminish the need for other approaches to environmental protection. Ideally, the application of green chemistry principles and practice renders regulation, control, clean-up, and remediation unnecessary, and the resultant environmental benefit can be expressed in terms of economic impact.

Green Chemistry is an effort towards eliminating pollution by making chemical products that do not harm either our health or the environment and by using production processes that reduce or eliminate hazardous chemicals, Green Chemistry prevents pollution at it's source rather cleaning up the mess later.

It is high time that the chemists start thinking about chemical process in the same way i.e. instead of finding wys to dispose off the waste produced during the process, the later should be modified in a way that no waste is produced. Scientists must design safer and cleaner approaches to manufacture the products we need.

Green Chemistry with its 12 principles would like to see changes in the conventional ways that were used for decades to make synthetic organic chemical substances and the use of less toxic starting materials. Green Chemistry would like to increases the efficiency of synthetic methods, to use less toxic solvents, reduce the stages of the synthetic routes and minimize waste as far as practically possible. Prof Paul Anastas (father of Green Chemistry) and Prof John Warner have postulated 12 principles for practicing Green Chemistry.

1. Prevention : It is better to prevent waste than to treat or clean up waste after it has been created.
2. Atom Economy
3. Less Hazardous Chemical Syntheses
4. Designing Safer Chemicals
5. Safer Solvents and Auxiliaries
6. Design for Energy Efficiency
7. Use of Renewable Feedstock.
8. Reduce Derivatives.
9. Catalysis
10. Design for Degradation
11. Real-time analysis for Pollution Prevention
12. Inherently Safer Chemistry for Accident Prevention

The use of microwave radiation has become a widerpread and convenient

method for heating food and beverage in modern society due to the energy efficient and volumetric heated observed with microwave radiation. The use of microwave or dielectric heating in chemistry has been limited, however, with most applications occurring in organic chemistry. The fast and volumetric heating of organic reactions has lead to extraordinary reaction rate enhancements. In recent year microwave assisted organic reaction has emerged as new tool in organic synthesis. Important advantage of this technology include highly accelerated rate of the reaction, Reduction in reaction time with an improvement in the yield and quality of the product. Microwave chemistry is applicable in various industries such as the biotechnology, pharmaceuticals, petroleum; plastics, chemicals etc. and major applications have been developed in the field of analytical chemistry and chemical synthesis. Due to the successful development of commercial instrumentation, microwave dielectric heating is now being increasingly applied in chemical reactions.

In the coordination and organometallic chemistry, the microwave-assisted synthesis in not developed such sufficiently as for the preparation of inorganic compounds, composited and materials or in the organic synthesis, where microwave heating can be considered as a common preparative tool. However, during the last decade a considerable growth of related reports has been registered. The most number of reports corresponds to MW-reactions of the N-, N,O-, and M,S- containing ligands with sources of meral ions. Microwave method has been proved to be a successful method in Synthesis of ceramic products, Polymer Cemistry etc.

Ultrasonic is the branch of acoustics, which consists of high frequency wave beyond the audible range of human ear. These are generally sound waves. Ultrasounds are mechanical waves with frequencies higher than 20 KHz. The propagation space of the ultrasoung is named as ultrasonic field. Applications of ultrasonic irradiation are playing and increasing role in chemical processes, especially in cases where classical methods require drastic conditions or prolonged reaction times. Ultrasoubnd irradiation enables many chemical reactions to proceed, even with some reactions which could not be carried our under conventional condition. The use of ultrasound in organic transformations is well known because it can enhance the reaction rate and can alter selectivity performance of the reaction. Ultrasonic irradiation has been increasingly used in organic synthesis in last three decades. Comparing with traditional methods, the method is more convenient and easily controlled. A large no. of organic reactions has been carried our in higher yield, shorter reaction time and milder condition under ultrasound irradiation.

- A rapid and environmentally benign method for the coupling of 2-naphthols is described using copper(II) acetylacetonate under microwave irradiation in dry media.
- Studies have been carried our in comparative manner between conventional and microwave synthesis of some transition metal complexes containing 2-amino-5-methylthiazole moiety.
- Microwave method was used for induced synthesis and characterization of semiconducting 2-thiophencearboxaldehyde metal complexes.

- Microwave synthesis method was developed for the synthesis of a series of cyclometalated platinum complexes with long chain B-diketone ancillary ligands, with this the reaction time was greatly reduced from 32 h to several minutes.
- Ultrasonic method was used for-Ultrasound mediated Green synthesis of Hexa-hydro Triazines.
- Choline chloride.ZnCl2: green, effective and reusable ionic liquid for synthesis of 7-amino-2. 4-dioxo-5-pheny1-2, 3, 5-tetrahydro-1 H-pyrano [2, 3-d] pyrimidine-6-carbonitrile derivative.

ADVANTAGES

Microwave is simple, convenient, fast, high yielding, efficient and environment friendly synthetic methodology. Microwave synthesis is considered as a "green technology, principally since many organic reactions can be carried out in solvent-free conditions. Mircowave radiation has proved to be a highly effective heating source in chemical reactions. Microwaves can accelerate the reaction rate, provide better yields and uniform and selective heating, achieve greater reproducibility of reactions and help in developing cleaner synthetic routes.

Practically in all reports, main attention of researchers is paid to extreme fastness of MW assisted reactions in comparison with classic protocols. The same reactions in the MW-field take place in 10-100 times more rapidly. Moreover, higher or comparable yields are frequently reported. Sometimes the MW-route leads to products., which it is impossible to get via traditional routes, for instance preparation of several metal cluster complexes.

Sonochemistry is one of the green chemistry research area in which molecules undergo a reaction due to the application of powerful ultrasonic radiation. The ultrasound irradiation is a powerful technique for establishing unique chemical and physical conditions, such as a local increase in temperature of several thousands of Kelvins and pressure by several bars by which reaction proceeds. This method has several advantages such as higher atom economy, energy efficiency, environmental friendly, waste and hazards minimization etc.

DISADVANTAGES

Temperature measurement under microwave conditions, particularly for the reaction is dense and solvent-less medium is difficult. Heating in microwave cavities is based upon the ability of some liquid and solids to absorb and transform electromagnetic energy into hear. When a strongly conducting material is exposed to microwave irradiation. Microwaves are largely reflected from its surface. So the material is not effectively heated by microwaves, in response to the electric field of microwave radiation, electrons move freely on the surface of the material, and the flow of electrons can heat the material through a resistive heating mechanism. While, in the case of insulators microwaves can penetrate through the material without any absorption, losses or heat generation. They are transparent to microwave. Passage of microwave radiation which is electromagnetic in nature can give rise to absorption of microwave energy and heat generation due to the so called dielectric heating

mechanism.

Hat force control is difficult. Water evaporation occurs. Therefore, its applications have been limited to small-scale use in laboratories and have not been extended to the production level.

In ultrasonic synthesis changes in the environment, such as temperature, pressure, humidity, air turbulence, and airborne particles affect ultrasonic response.

REMARKS

In 21st century the main objective is to develop environmental friendly and pollution free techniques; microwave and ultrasonic irradiation both fir into this profile. So many advantages and superiroty over conventional methods make these techniques prominent tools o green technology.

REFERENCES

1. PT Anastas, JC. Warner Chemistry : Theory and Practice. Oxford University Press, New York, 1998.
2. V.K. Ahluwalia, Alpha Science Int'I Ltd., 280 pp., 2007.
3. J.A. Ahn., D.H. Chang, Y.J. Park, Y.R. Yon, A. Loupy, C.H. Jun, Advanced Synthesis & Catalysis, 348, 1+2, 55-58, 2006.
4. Anjali Jha, Shabana Yashmeen and D N Kumar, Int. J Pharm Bio Sci Oct; 4, 4, (P) 197-204, 2013.
5. AJ, Berteaud, JC, Badot, J. Microwave Power, 11, 351-320, 1976.
6. VV Dabholkar and FY Ansari, Indian Journal of Chemistry, 48B, 1759-1761, 2008.
7. H. M. Meshram, G.S. Reddy, Indian Journal of Chemistry, Section B : Organic Chemistry Includin Medicinal Chemistry, 42B, 10, 2615-2617, 2003.
8. A.P. Mishra, Raendra K. Jain, Journal of Saudi Chemical Society, DOI : 10.1016/j.jscs.2011.09.013. 2011
9. A.P. Mishra, A. Tiwari, Rajendra K. Jain; Adv. Mat. Lett. 3, 3, 213-219, 2012.
10. K.J. Luo, L.I. Xu, X.Q. Wei, M.G. Xie, Q. Jiang, Huaxure Yanjiu Yu Yingyong, 19, 9, 991-993, 2007.
11. Ashish K Singh, Sudhish K Shukla, Mumtaz A. Quraishi. J. Mater, Environ. Sci. 2, 4, 403-406, 2011.
12. Dileep Kumar Yadav, M.A. Quraishi, J. Mater, Environ. Sci. 5, Y, xxx-xxx, 2014.
13. G. Roussy and J.A. Pearce, Foundations and Industrial Applications of Microwave and Radio Frequency Fields, John Wiley & Sons. 1995, Chichester-New York-Brisbane-Toronto-Singapore.
14. Rafael Martinez-Palou, J. Mex. Chem. Soc., 51, 4, 252-264, 2007.
15. J.T. Li, W.Z. Yang, S.X. Wang, S.H. Li, T.S. Li, Ultrason, Sonochem. 9, 237, 2002.
16. T.J. Mason, Advances in Sonochemistry, JAI Press 1990, London.
17. A. Loupy, Ed. Microwaves in Organic Synthesis; Wiley-VCH Verlag Gmbh & Co, 2002 Weinheim, pp 1-73.

किशोरों में तनाव और उसका प्रबंधन

श्रीमती प्रीति वर्मा
सहायक प्राध्यापक–गृह विज्ञान विभाग

प्रस्तावना

आजकल की भाग दौड़ भरी जिंदगी में लोगों का जीवन तनावपूर्ण होता जा रहा है व्यक्ति अपनी जिंदगी जीने के बजाय अपनी जरूरतों को पूरा करने के पीछे भाग रहे हैं और जब वह जरूरतें पूरी नहीं होती तो वह तनाव ग्रसित हो जाते हैं। आज हर आयु वर्ग तनाव का सामना कर रहा है–बच्चों में अपने स्कूलों में अच्छे अंक लाने का तनाव, वयस्कों में अपने परिवार की सुख सुविधाओं को पूरा करने का तनाव और वृद्धावस्था में अकेलापन दूर करने का तनाव होता है।

इन सभी आयु वर्ग में से सबसे ज्यादा किशोर वर्ग तनाव का सामना कर रहे हैं, वह एक तो अपने शारीरिक बदलाव को समझने में परेशान रहते हैं एवं उसके एवं उसके बाद परिवार द्वारा लगाई गई रोक टोक से उन्हें लगता है कि उनसे उनकी आजादी छीनी जा रही है जिससे किशोर अधिक तनाव में आ जाते हैं। इसके साथ ही साथ उन्हें अपना कैरियर संभालने का भी तनाव रहता है, जिसके कारण उनके अंदर अंर्तद्वंद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

किशोरावस्था एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें बहुत अधिक उथल पुथल पाया जाता है। मनोवैज्ञानिक दशा के कारण लड़के लड़कियां विपरीत यौन में रूचि लेने लगते हैं। इस आयु के किशोरों में यौन संबंधी व्यवहारों की रोकथाम बहुत कम हो पाती है, किशोरावस्था में अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याऐं उत्पन्न होती हैं जो उसके व्यवसाय समायोजन, यौन आदि से संबंधित होती है जो उसके व्यक्तित्व विकास को भी प्रभावित करती है और इन सब में समायोजन होने के कारण किशोरों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

किशोरों में तनाव का कारण किशोरों में तनाव का प्रमुख कारण उनके अंदर का अंर्तद्वंद होता है जो अपने परिवार से साझा नहीं कर सकते हैं। वह अपने शरीर में हो रहे बदलाव के बारे में अपने माता पिता से बात करने में हिचकिचाते हैं एवं घर के बाहर अपने दोस्तों से पूंछते हैं जिसके कारण वह कभी कभी गलत आदतों में पड़ जाते हैं एवं माता–पिता द्वारा रोक टोक उन्हें पसंद नहीं आती एवं ज्यादा आक्रामक व्यवहार अपना लेते हैं। अपने भविष्य को लेकर चिंता एवं अपने माता–पिता की आशाओं पर खरा उतरने की चिंता भी किशोरों को तनाव से ग्रसित कर सकती है। किशोर का सपना कुछ और बनने का होता है परंतु माता–पिता अपनी इच्छानुसार विषय लेने के लिए बच्चों पर दबाव देते हैं जिसके कारण किशोर में अत्यंत तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और अपनी परेशानी किसी से कह नहीं पाते एवं अपने आपको परिवार से अलग करने लगते हैं और

- अकेले रहना ज्यादा पसंद करते हैं।
- तनाव के लक्षण
- व्यक्ति धूम्रपान एवं शराब का सेवन अधिक करने लगता है
- ज्यादा घुटने हिलाना
- हर काम में हड़बड़ाना
- अकेले रहना पसंद करना
- नकारात्मक बातें ज्यादा करना
- समाज में अलग अलग रहना
- हमेशा सोचते रहना
- हंसी मजाक पसंद न करना
- डरा डरा रहना
- ज्यादा गुस्सा करना

किशोरों में तनाव दूर करने के सुझाव

तनाव किशोर के जीवन में बहुत प्रभाव डालता है एवं माता–पिता की भूमिका इस उम्र में बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। इस अवस्था में माता–पिता का कर्तव्य है कि वो अपने बालक या बालिका को उनके शरीर में हो रहे बदलाव के बारे में खुलकर

बात करे जिससे उनको सही जानकारी मिल सके, जिससे वो अपने शारीरिक बदलाव से भयभीत न हो और न ही किशोर अपनी जिज्ञासा को पूरी करने हेतु किसी गलत व्यक्ति की सहायता लें। माता–पिता को समय समय पर उनके दोस्तों से भी संपर्क करते रहना चाहिए जिससे पता चलता रहे उनका पुत्र या पुत्री किसी गलत संगत में तो नहीं आ रहे हैं।

माता पिता को अपने बच्चों से मित्रता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए जिससे बच्चे अपनी परेशानी खुलकर माता पिता को बता सकें। माता–पिता को अपने बच्चों के लिए उसका कैरियर चुनने के लिए पूरी आजादी देनी चाहिए जिससे वह मन पसंद भविष्य का चुनाव कर सकें। माता–पिता को अपनी इच्छा अपने बच्चों के ऊपर नहीं थोपनी चाहिए जिससे बच्चे तनाव मुक्त रहें।

निष्कर्ष किशोरावस्था बहुत ही सुंदर अवस्था है जिसमें एक बालक अपने बाल्यावस्था से निकलकर किशोरावास्था में प्रवेश करता है इस आयु में किशोर का आयु वर्ग में बदलाव के साथ साथ उसका वातावरण एवं उसका व्यवहार में भी बदलाव आते हैं, नये नये मित्र बनते हैं एवं इसी आयु वर्ग में वह अपने कैरियर का चुनाव करता है कि भविष्यमें उसे क्या बनना है। परिवार के सभी सदस्य किशोर की समस्या को समझन का प्रयास करें।

इस समय किशोर पर इतनी पाबंदियां ना लगायें कि उसे अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना पड़े और ना ही बहुत ज्यादा आजादी दें कि वह गलत संगत में पड़ जाये। परिवार ही एक ऐसी जगह है जिसमें परिवार का हर सदस्य अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है, अत: परिवार का वातावरण मैत्रीपूर्ण बनाये रखें एवं सभी सदस्य को अपनी बात कहने का पूरा अधिकार दें जिससे सभी सदस्य आपस में मिल जुल कर रहें एवं तनाव को दूर रखने का प्रयास करें।

संदर्भ –

- डॉ. शशि प्रभा जैन मानव विकास परिचय शिवा प्रकाशन इंदौर
- मुकेश जैन दिन लाईफ मंत्र 18/05/2020
- आशीष तनवर, अवेयरनेस 29/04/2020

माँ और चिड़ियाँ

संकलित कविता

श्री पंकज जैन
अतिथि विद्वान

''एक सकोरा
मैंने भी लगाया है धर में,
अच्छा लगता है,
चिड़ियों को पानी में,
अठ खेलियाँ करते देखना
चूँ–चूँ की तान
आपस में
लपट–झपट, उछल कूद
इनकी हर–क्रियाकलाप
विभोर करते हैं मन को,

बहुत गहरा रिश्ता है,
चिड़ियाँ और मेरी माँ के बीच
माँ दाने डालती है
और चिड़ियाँ निडर हो,
बरामदे तक आकर
चुन लेती हैं दाने–दाने
मैंने देखा है, कई बार आकर
बैठ जाती है माँ की गोद में
जैसे जानती हों
सदियों से
चिड़ियाँ सच में अब भी
कितना करीब हैं इंसानों से
बस इंसान नही हैं
जिन्होंने दूरियाँ पैदा कर लीं''

चंचल मन

मौसम राजपूत
एम.एच.एस.सी.तृतीय सेमेस्टर

मन भी कितना चंचल होता है
कभी इधर भटकता कभी उधर
चहुओर अपनी दृष्टि रखता
कभी किसी के दिल से पूछे
मन में किसके क्या चल रहा
वो तो समझ नहीं पाता
कभी मन में खुशी होती
कभी आत्मग्लानि से भर जाता
मन की भाषा वो ही जाने
कब किसकी वो सुनता है
कभी शांत लहरों की तरह
कभी उथल पुथल करता है
यही तो मन की कहानी

लोकतंत्र का व्यापक अर्थ

श्री ब्रजेश मौर्य
सहायक प्राध्यापक राजनीतिशास्त्र

एक लंबे समय तक लोकतंत्र का तात्पर्य शासन के एक प्रकार से ही लिया जाता था जबकि लोकतंत्र का अर्थ उससे कहीं अधिक व्यापक होता है। यह मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ा हुआ होता है। लोकतंत्र के अर्थ को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं।

राज्य के प्रकार रूप में लोकतंत्र – लाकतंत्र को वास्तविक रूप में जनता के प्रति उत्तरदायी बनाने के लिए यह आवयक है कि जनता ना केवल अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करें वरन अपने प्रतिनिधियों पर व्यवहार में नियंत्रण भी रखें और अंतिम रूप में महत्वपूर्ण राजनीतिक नियमों का निर्णय जनता द्वारा ही किया जाए।

सामाजिक व्यवस्था के प्रकार के रूप में लोकतंत्र – समानता की घोषणा भर कर देने से ही व्यवहार में सभी व्यक्ति समान नहीं हो जाते हैं। समाज के प्रकार के रूप में लोकतंत्र से उस समाज का ज्ञान होता है। जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति का मूल्य व्यक्ति रूप में ही होता है और जाति, रंग, लिंग, संपत्ति और धर्म के भेद के बिना सभी व्यक्ति समान समझे जाते हैं तथा समान अधिकार एवं अवसर का उपयोग करते हैं।

आर्थिक व्यवस्था के प्रकार के रूप में लोकतंत्र – वर्तमान समय में अर्थ ने मानव जीवन में बहुत अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है और साधारणतया मानव के सभी कार्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अर्थ से ही संचालित होते हैं। आर्थिक व्यवस्था के प्रकार के रूप में लोकतंत्र का तात्पर्य आर्थिक समानता की स्थापना से है। सभी व्यक्तियों को आवश्यक रूप से आर्थिक न्यूनतम प्रदान किया जाना चाहिए और उद्‌योगों के प्रबंध के संबंध में प्रजातंत्रात्मक धारणा को अपनाया जाना चाहिए।

जीवन का विशिष्ट दृष्टिकोण – प्रजातंत्र राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का एक प्रकार ही नहीं है। वरन यह तो जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण भी है। इसके अंतर्गत मनुष्य का एक विशेष प्रकार का स्वभाव तथा सामाजिक व्यवहार होना चाहिए। सबके हृदय में क्षमा, सहिष्णुता, सेवा, परोपकार, विरोधी के दृष्टिकोण के प्रति आदर भव मानवीय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान और समझौते की प्रवृत्ति विद्‌यमान हो। प्रजातंत्र में सभी व्यक्तियों द्वारा दूसरे के प्रति वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा व्यवहार व अपने प्रति करता है।

कई बार हम लोकतंत्र का प्रयोग सरकार से अलग संगठनों के लिए करते हैं जरा इन कथनों पर गौर कीजिए।

''हम लोगों का परिवार काफी लोकतांत्रिक है जब भी फैसला करना होता है तो हम सभी साथ बैठकर आपसी सहमति से फैसले लेते हैं। फैसले में मेरे विचारों का भी उतना महत्व होता है जितना मेरे पिताजी का।''

''मुझे वह शिक्षक नापसंद है जो कक्षा में छात्रों को बोलने और सवाल पूछने की इजाजत नहीं देते हैं। मैं तो ऐसा शिक्षक पसंद करता हूं जो लोकतांत्रिक मानसिकता का हो।''

''एक नेता और उसके परिवार के लोग इस पार्टी के सारे फैसले करते हैं। वह क्या लोकतंत्र की बात करेंगे।''

लोकतांत्रिक फैसले का मतलब होता है। उस फैसले से प्रभावित होने वाले सभी लोगों के साथ विचार विमर्श के बाद और उनकी स्वीकृति से फैसला लेना यानी जो बहुतशक्तिशाली ना हो उसका भी किसी फैसले में उतना ही महत्व होना जितना किसी बहुत शक्तिशाली का। यह बात सरकार या परिवार पर भी लागू होता है और किसी अन्य संगठन पर भी।

इस प्रकार वर्तमान समय में लोकतंत्र का अर्थ शासन व्यवस्था का एक विशेश रूप ही नहीं है। वरन इसका तात्पर्य राज्य के एक प्रकार, सामाजिक जीवन के प्रकार, आर्थिक व्यवस्था के प्रकार, जीवन के एक ढंग और फैसले लेने के प्रकार से भी है। वस्तुत: लोकतंत्र मानवीय सभ्यता और व्यक्ति के व्यक्ति रूप में महत्व पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है। जिसका उद्‌देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के इन विभिन्न क्षेत्रों में अधिकाधिक समानता की स्थापना करना और एक सहयोगी समाज की रचना करना है।

Major Air Pollutants and their Harmful Consequences

Deepak Kumar Saini
(Assistant Professor, Botany)

Air Pollution has become a major environmental risk for the human health. The substrances which cause air pollution are known as air pollutants. They can be solid particles, liquid droplets, or gases and can be of man-made and natural origin. According to WHO, major air pollutants are atmospheric particulate matters, O3, SO2, Nox, and airborne heavy metals such as Hg, Pb etc. Due to the increase of harmful pollutants level in air, all countries agreed to select "Air Pollution" the theme of "2019 World Environment Day". Initially we were worried about the soil, water, forest etc, but now the polluted air has become a great concern.

As we know air is the most important component of our biosphere. We can survive for many days without food, few dayus withour water but only a new minutes without air. Therefore, air is extremely essential for the existence and continuance of life on the earth. Average amount of air breathing by an adult is 15 kg in 24 hours while water and food used by the adult is only 2.5 and 1.5 kg, respectively which are very less in comparison the the air. Unfortunately, now-a-days air pollution is a universal problem and thousands of people suffer from this, every moment.

Globally 92% population is affected with the hazards of air pollution. India is a great victim of air pollution. A big number of polluted citied of the world are located in India. Presently we are focusing on development at the cost of destruction of our planet. Deforestation, industrialization and increasing population are main culprit to enhance the air pollution on the globe. Increased number of vehicles on roads is also changing the composition and quality of our ambient air. The burning of diesel, petrol and other fossil fuels produces CO2 and CO, Burning of plastic material and agricultural wastes are also big sources of air pollutants.

Air pollutants are threats to our ecosystem and create very harmful effect on terrestrial roadside plants. Affected plants show many common effects, such as, decrease in chlorophyll content, reduction in the rate of photosynthesis and plant growth. Air pollutants affect the plant at morphological, physiological and biochemical levels. SO2, NOx and O3 gas pollutant produce oxy-radicals in plants. These oxyradicals disrupt the cell organelles membranes and reduce the amont of chlorophyll pigments. Deposition of dust on foliar surface causes reduction in plant growth by interfering gaseous exchange through stomata, reduction in leaf area and number due to decrease in leaf production rate and increase in senescence. Air pollutants along with water pollutants demage the plant leaf structures and cause a heavy loss in crop production.

The particulate matters and some gases influence the quality of the air we breathe. Incomplete combustion of coal, diesel or other fossil fuels, can lead to the formation of toxic substances in air. In human beings, long term effects of air pollution are serious. One third of death from stroke, lung cancer and heart disease are due to air pollution. The inhabitants of polluted areas come in the contact of various types of respiratory infections and inflammations and suffer from respiratory diseases. Microscopic are pollutants penetrate deep into our respiratory and circulatory system, damageing our lungs, heart and brain.

Air pollution is a fifth major health-risk factor in the world. Approximately, 7 million people die every year from exposure to fine particles present in polluted in polluted air that lead to the diseases such as stroke, heart disease, lung cance, chronic obstructive pulmonary diseases and respiratory infections, including pneumonia. In chidren, air pollution causes asthma and mental disability. The particulate matters are small enough to penetrate the capillaries present in lungs and enter into the blood circulation causing serious lungs and heart diseases. Exposed person the these particulate matters show most prevalent clinical symptoms of burning eyes, dry mouth, sore throat, persistent cough, wheezing, chest tightness and limited physical activities due to breathing problems. The particulate matters may be responsible for asthma or premature death in aged peoples with pre-existing disease such as chronic obstructive pulmonary disease.

In the race of development we are going away from our nature. First we lose our water and now next are air. India is a great market of water purifier and now it is of air purifier also. Air pollution is closely linked to climate change. The main driver of climate change is fossil fuel combustion which is also a major contributor to air pollution.

Control measures to reduce air pollution :-

- Promote plantation of trees on roadside.
- Avoid burning of dry leaves and other agricultural wastes, instead it may be composted.
- Discourage crackers at Diwali, New Year's Eve and other festivals.
- Introduction of stringent emission standards for diesel commercial and old commercial vehicles and promote CNG operated and hybrid fuel vehicle.
- Introduction of green belt between the industrial area and the receptor area of city.
- Public awareness program should be launched to educate the people regarding harmful effects of the air pollutants.

गृह विज्ञान विषय एक समग्र शिक्षा

श्रीमती सुरेखा बड़ौले
सहायक प्राध्यापक (गृह–विज्ञान)

गृह–विज्ञान शिक्षा का छात्राओं की व्यक्तिगत में महत्वपूर्ण योगदान होता है। गृह–विज्ञान की शिक्षा एक महिला को पूर्णता प्रदान करती है। दिन–प्रतिदिन में उत्पन्न होने वाली संस्थाओं का समाधान भी इसके ज्ञान द्वारा सम्भव है। जिससे परिवार में सुख और सन्तोष की अनुभूति होती है।

गृह–विज्ञान विशेषज्ञों के अनुसार – ''यह शिक्षा नारी मनोवैज्ञानिक अभिवृत्तियों को भी सन्तुष्टि प्रदान करती है।''

नारी के सर्वांगीण सन्तुलित विकास में गृह–विज्ञान की शिक्षा इतनी उपयोगी है, कि डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, कला, व्यवसाय आदि अन्य क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को भी गृह–विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान होना चाहिए। पारिवारिक जीवन की स्थितियों में सुधार लाने हेतु तथा घर को स्वच्छ, सुखी बनाने के लिए यह शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

गृह–विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. राजमल देवदास के शब्दों – ''गृह–विज्ञान की शिक्षा प्राप्त एक लड़की–आदर्श पोषक विशेषज्ञ प्रबन्धन, डॉक्र, नर्स, मनोवैज्ञानिक, बैकर, टेलर, माली, गवर्नेस, शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री, गृह प्रबंधक, गृह सज्ञाकारा, साथी एवं सामाजिक कार्यकर्ता बनती है।''

इन सबसे ऊपर वह एक स्नेहमयी पत्नी एवं माँ भी होती है। संसार का कोई भी कार्यक्षेत्र इतना बहुआयामी नहीं है।

गृह–विज्ञान शिक्षा छात्राओं की व्यक्तिगत उन्नति में सहायक हो सकती है :–

(1) गृह–विज्ञान शिक्षा के द्वारा महिला घर एवं बाहर के कार्यो को पूर्ण आत्मविश्वास एवं वैज्ञानिक तरीके से कर सकती है।

(2) गृह–विज्ञान शिक्षा में मनोविज्ञान के अन्तर्गत पारिवारिक सम्बन्धों में दृढ़ता प्रदान करती है एवं परिवार में प्रसन्नता ला सकती है।

(3) गृह–विज्ञान शिक्षित महिला बजट–नियोजन एवं निर्णय प्रक्रिया का ज्ञान रखती है, इसके द्वारा यह परिवार के सदस्यों को सीमित साधनों से कुशलता पूर्वक घर की व्यवस्था कर सकती है।

(4) गृह–विज्ञान शिक्षा द्वारा महिला नवीनतम उपकरणों के प्रयोग द्वारा श्रम, समय तथा धन की बचत करती है तथा कार्य सरलीकरण विधियों को अपनाकर श्रम समय एवं शक्ति बचाकर परिवार एवं समाज को लाभान्वित करती है।

(5) गृह–विज्ञान शिक्षा के द्वारा महिला परिवार के बच्चों का पालन–पोषण विधियों का सहयोग लेकर उचित प्रकार से बच्चों का विकास करके समाज और राष्ट्र में योगदान दे सकती है।

(6) गृह–विज्ञान शिक्षा के द्वारा महिला घर को इनोवेटिव एवं रचनात्मक तरीके से कम बजट में सजा सकती है।

(7) गृह–विज्ञान शिक्षा के द्वारा महिला वस्त्रों की सिलाई कढ़ाई एवं डिजाइन कर परिवार में धन की बचत कर सकती है।

(8) गृह–विज्ञान शिक्षा द्वारा व्यक्तिगत उन्नति हेतु नये रोजगार के अवसर प्रदान करती है। इसमें पोषणविद्, पत्रकार, ड्रेस डिजायनर, टी.वी. कलाकार, सज्ञाकार एवं शिक्षिका बन सकती है।

(9) गृह–विज्ञान शिक्षा की सहायता से महिला स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ कर सकती है। बुटिक, बेकरी, घर पर पाक, कला, सिलाई, हस्त शिल्प, पेंटिंग बनाना, गुड़िया बनाना स्वयं का एन.जी.ओ. प्रारम्भ करना आदि कर सकती है।

जलवायु परिवर्तन – वर्तमान संदर्भ में

श्रीमती भारती चौरसिया सहायक प्राध्यापक(भूगोल)

प्रस्तावना :– हमारी पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जो जीवन प्रदान करती है। पृथ्वी ही एक ऐसी जलवायु प्रदान करती है जिससे मानव का जीवन सुगम रहता है। मानव ने स्वयं के जीवन को सुखमय बनाने के लिये जीवाश्म ईंधन का नियंत्रित होहन किया है, वन को काटा, भूमि का अधिक उपयोग किया जिसके परिणामस्वरूप कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि हुई। वैश्विक तापन, वर्षण, वायु के प्रारूप में परिवर्तन ने वैश्विक जलवायु परिवर्तन की शुरूआत की है। यदि वैश्विक तापन 150 सेल्सियस सीमित करना है तो समाज के समस्त पक्षों में तीव्र एवं अभूतपूर्व बदलाव की आवश्यकता होगी।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये द्वितीयक संदर्भ आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिसमें वैश्विक स्तर पर आईपीसीसी की रिपोर्ट से एवं भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की रिपोर्ट से द्वितीयक आंकड़ों को संग्रहित किया गया है।

परिणाम :– समुद्री जल स्तर में वृद्धि होने से समुद्री जीवन भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होगा। उच्च उत्सर्जन परिदृश्य के कारण ''शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता'' से 4 से 11 प्रतिशत की गिरावट आई है। अगर वैश्विक तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से कम पर सीमित है तो भी प्रवाल भित्तियां गंभीर रूप से संकट ग्रस्त होगा। परमाफ्रास्ट में वायुमंडल में कार्बन की तुलना से 2 गुना अधिक कार्बन मौजूद है। इससे जलवायु परिवर्तन की गति अधिक तीव्र होती है। यूरोप और उत्तरी एशिया जैसा निम्न हिम आवरण वाले ध्रुवी के वाइट स्थित क्षेत्रों में वर्ष 2100 तक उनके वर्तमान हिमनाद द्रव्यमान की तुलना में औसत 80 प्रतिशत से अधिक क्षति होने की संभावना है। अधिक मात्रा में हित आवरण पिघलने से मुद्र जल का अधिकांश भाग अनाकृत हो जाता है परिणामस्वरूप सूर्यातम जल में अधिक गहराई तक वंश करता है और सूर्य ऊष्मा जनित गर्म जल से और अधिक हिम आवरण पिघलने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है तथा हिम अनविधों की मात्रा में कमी आती है। भारत में वर्ष 1951 से वर्ष 2015 के मध्य विशेष रूप से गंगा के मैदान एवं पश्चिमी घाट में स्थित क्षेत्रों में मानसूनी वर्षा 6 की गिरावट आई है। स्थानीय स्तर पर सूखा पड़ने की दर से भी काफी वृद्धि हुई है।

इस समस्त जलवायु प्रतिकूल क्रियाओं का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन, एरोसोल, भूमि उपयोग परिवर्तन,वैश्विक तापन के कारण हिमनाद पिघलन, सतही तापन वृद्धि उष्णकटिबंधनीय चक्रवातों की तीव्रता में वृद्धि है।विश्व के अधिकांश विकसित देश उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा के ऊपरी क्षेत्र में है। उत्तरी क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति, तकनीकी विकास तेजी से विस्तारित हुआ है। अन्य राष्ट्र अल्प विकसित एवं विकासशील अवस्था से है जहाँ आधारभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो रही हैं यह सबसे पहले जलवायु पविर्तन से प्रभावित होगा। भूमि तथा जल की अत्यंत कमी से प्रवासित होने वाले पुरूषों को हिंसा के उच्च स्तर वाले क्षेत्रों में शारीरिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण यौन तथा लिंग आधारित हिंसा, शिक्षा संबंधी अन्य बाधाएं एवं धरेलू कामकाज करने में समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। विनाशकारी चक्रवाती में वैश्विक स्तर पर वृद्धि होने से सतही तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि से चक्रवाती वर्षो की मात्रा में कम से कम 7 प्रतिशत की वृद्धि होगी।

महासागरों में जल स्तर की वृद्धि होने के अनेक कारण हैं। पिछले 21 वर्षो में समुद्री जल के 50 प्रतिशत वृद्धि के लिये महासागरों के गर्म होना उत्तरदायी है। वैश्विक तापन के कारण पर्वतीय हिमनाद औसत गति से भी तीव्र गति से पिघल रहे हैं। जिसके कारण अपवाद और समुद्री वाष्पीकरण के बीच असंतुलन हो रहा है तथा समुद्री जल स्तर में ही वृद्धि हो रही है। ग्रीनलैंड एवं अंटार्कटिका की हिम चादरों में वर्तमान में समुद्री जल में 66 मीटर वृद्धि करने की क्षमता है। इसके कारण ज्वार, तूफान, भूकंप, भूस्खलन, एल तीनों के कारण भी समुद्री जल में वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष :– वाटनार तंत्र एक कार्बन बाजार की स्थापना करता है जो राष्ट्रों को अतिरिक्त उत्सर्जन कटौती के विक्रय की अनुमति देता है। कार्बन बाजार प्रणाली का मुख्य उद्देश्य सस्ते तरीके को प्रस्तुत करता है। कार्बन मुख्य निर्धारण ग्रीन

हाउस गैस उत्सर्जनों की बाह्य लागतों को वसूल करती है। 2019 तक 49 राष्ट्र अधिकार क्षेत्रों को शामिल करने के लिये 64 कार्बन मूल्य निर्धारण की गई है। साथ ही व्यवसायों के लिये निम्न कार्बन निवेश की योजना बनाने और नवाचार को प्रोत्साहित करने में भी सहयोग करता है। विगत 2 वर्षो में विकसित देशों ने जो जलवायु उपलब्ध कराया है उसका अनुमोदन कॉप 24 में किया गया। विकसित देशों की प्रतबद्धताओं के लिये बाजार दर के ऋण और निर्यात द्धण जैसे वित्तीय साधनों कब लेखांकन की समस्याएं भी प्रमुख रही। जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर एवं चिंताजनक समस्या के समाधान के लिये समस्त विश्व को एक साथ एवं विभेदीकृत रूप में कार्य करना होगा। समस्त राष्ट्रों को जलवायु परिवर्तन संधियों जैसे – पेरिस समझौता,जलवायु वित्तीय,नवीन तकनीक इत्यादि का प्रतिबद्ध रूप में पालन करना चाहिए। साथ ही सतत विकास की संकल्पना को व्यवहारिक रूप में अंगीकृत करना चाहिये। जलवायु परिवर्तन से समस्त विश्व प्रभावित होगा परन्तु समस्त विश्व के लिये उत्तरदायी नहीं है। अत: इसे रोकने के लिये भी विकसित देशों को अधिक योगदान देना होगा।

ग्लास को नीचे रख दीजिये

श्री दीपक कुमार सैंनी सहा.प्राध्यापक

एक प्रोफेसर ने अपने हाथ में पानी से भरा एक गिलास पकड़ते हुए कक्षा शुरू की। उन्होंने उसे ऊपर उठा कर सभी स्टूडेंट्स को दिखाया और पूछा, आपके हिसाब से गिलास का वजन कितना होगा?

50ग्राम...100ग्राम...125ग्राम...स्टूडेंट्स ने उत्तर दिया।

जब तक मैं इसका वजन ना कर लूँ मुझे इसका सही वजन नहीं बता सकता, प्रोफेसर ने कहा, पर मेरा सवाल है, यदि मैं इस ग्लास को थोड़ी देर तक इसी तरह उठा कर पकड़े रहूँ तो क्या होगा?

कुछ नहीं...स्टूडेंट्स ने कहा।

अच्छा, अगर मैं इसे मैं इसी तरह एक घंटे तक उठाये रहूँ तो क्या होगा? प्रोफेसर ने पूछा,

आपका हाथ दर्द होने लगेगा, एक स्टूडेंट ने कहा,

तुम सही हो, अच्छा अगर मैं इसे इसी तरह पूरे दिन उठाये रहूँ तो क्या होगा?

आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपके मांसपेशियों में भारी तनाव आ सकता है, लकवा मार सकता है और पक्का आपको अस्पताल जाना पड़ सकता है...किसी छात्र ने कहा, और बाकी सभी हंस पड़े...

बहुत अच्छा, पर क्या इस दौरान गिलास का वजन बदला? प्रोफेसर ने पूछा,

उत्तर आया नहीं

तब भला हाथ में दर्द और मांशपेशियों में तनाव क्यों आया?

स्टूडेंट्स अचरज में पड़ गए,

फिर प्रोफेसर ने पूछा, अब दर्द से निजा पाने के लिए मैं क्या करूँ?

ग्लास को नीचे रख दीजिये! एक छात्र ने कहा,

बिल्कुल सही! प्रोफेसर ने कहा।

जीवन की समस्याएं भी कुछ इसी तरह होती हैं, इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिये और लगेगा कि सब कुछ ठीक है, उनके बारे में ज्यादा देर सोचिये और आपको पीड़ा होने लगेगी, और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिये और ये आपको Paralyze करने लगेंगी, और आप कुछ नहीं कर पायेंगे।

अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों और समस्याओं के बारे में सोचना जरूरी है, पर उससे भी ज्यादा जरूरी है दिन के अंत में सोने जाने से पहले उन्हें नीचे रखना। इस तरह से,आप Stressed नहीं रहेंगे, आप हर रोज मजबूती और ताजगी के साथ उठेंगे और सामने आने वाली किसी भी चुनौती का सामना कर सकेंगे।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड-19 का प्रभाव

श्रीमती जया अहिरवार सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र

कोविड–19 महामारी का प्रभाव समस्त विश्व के साथ साथ भारत पर भी बहुत विनाशकारी रहा है इस महामारी ने केवल लोगों के स्वास्थ्य पर ही नहीं बल्कि सामाजिक आर्थिक गतिविधियों पर भी अपना प्रभाव डाला है मार्च 2020 में जिस गति से कोविड–19 महामारी अपने पैर पसार रही थी उसने समस्त विश्व के देशों को अपनी समस्त सामाजिक एवं अधिकांश आर्थिक गतिविधियों पर रोक लगाने पर मजबूर कर दिया। महामारी के बढ़ते हुए प्रसार को रोकने के लिए विश्व के लगभग 162 देशों की सरकारों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं, यात्राआं को बंद करने एवं लॉकडाउन के उपाय को अपनाया जिसका प्रभाव विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ा जिससे भारत भी अछूता नहीं रहा है भारत की अर्थव्यवस्था कोविड से पहले ही मंदी की मार झेल रही थी। कोरोना वायरस के कारण इस पर और दबाव बढ़ गया था।

सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार वित्त वर्ष 2020 की चौथी तिमाही में भारत की वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिशत रह गई। कोरोना महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडाउन होने के कारण कई सरकारी व्यवसाय और उद्योग प्रभावित हुए।

लॉकडाउन का सबसे ज्यादा प्रभाव असंगठित क्षेत्र पर पड़ा है हमारी अर्थव्यवस्था का लगभग 50 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद असंगठित क्षेत्र से ही प्राप्त होता है ऐसे में लॉकडाउन के कारण में क्षेत्र काम नहीं कर पा रहे थे जिससे उनकी कमाई बंद हो रही थी कोविड–19 के प्रभाव के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, व्यापार कृषि उद्योग, मोटर वाहन, इलेक्ट्रॉनिक उद्योग, यात्रा परिवहन और पर्यटन जैसे प्रमुख उद्योग भी बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं।

भारत में पर्यटन और आतिथ्य उद्योग सेवा क्षेत्र के विकास में एक मुख्य साधन के रूप में उभरा है भारत में सांस्कृतिक एवं परिस्थिति की विविधता, ऐतिहासिक विकास व प्राकृतिक मनोरम स्थान देश भर में फैले हुए जिसमें पर्यटन के विकास की उल्लेखनीय क्षमता है भारत में पर्यटन उद्योग में उत्तरोत्तर वृद्धि देखने को मिल रही थी।

किन्तु कबोविड–19 के कारण विदेशी और स्थानीय पर्यटकों द्वारा बड़ी संख्या में अपनी यात्राओं को खुद किया गया। जिसके कारण जनवरी से फरवरी के बीच इनबाउंड और आउटबाउंड दोनों पर्यटन में लगभग 67 प्रतिशत व 52 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके अतिरिक्त मनोरंजन, खेल उद्योग भी कोविड–19 से प्रभावित हुए हैं खेल जगत की कई स्पर्धाएं रद्द कर दी गई। कोविड–19 महामारी ने सभी उद्योगों व्यवसायों क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डाला इसने देश की पहले से ही सुस्त अर्थव्यवस्था को और अधिक आर्थिक दबाव में लाकर खड़ा कर दिया जिससे उबरने के लिए और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकार को अपने प्रयास और तेज करने पड़ेंगे।

संदर्भ –

(1) orfonline.org कोरोना से भारत में पैदा हुई चुनौतियाँ

(2) nert.org/ प्रवीण कुमार, डॉ. जया शर्मा

(3) विकिपीडिया

(4) आर्थिक समीक्षा 2021–22

Qualitative analysis of the COVID-19

NAYANTARA
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF BOTANY

Abstract

In December 2019, an outbreak of coronavirus disease 2019 (COVID-19), caused by a novel severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2), occurred in Wuhan City, Hubei Province, China. On January 30, 2020 the World Health Organization declared the outbreak as a Public Health Emergency of International Concern. As of October 2, 2020. 3,48,36,028 laboratory-confirmed and 10,33,330 deaths have been reported globally. Perceived risk of acquiring disease has led many governments to institute a variety of control measures. In this literature review, the causative agent, pathogenesis and immune responses, diagnosis, treatment and management of the disease, control and preventions strategies, how long does covid-19 immunity last and post corona effect in recovered patients are all reviewed.

Introduction

Coronavirus Diseases (COVID-19), a respiratory disease characterized by fever, fry cough, and fatigue, and occasional gastrointestinal sysmptoms. The disease has excalated in China and further spread to almost all countries in the world affecting the global economy severely.

Discussion

SARS-CoV-2 is a member of the family Coronaviridae and order Nidovirales. The genome size of cornaviruses ranges from approximately 26 to 32 kilobases, one of the largest among RNA viruses.

They are transmitted from one host to another host, depending on the coronavirus species, by either an aerosol, fomite, or fecal-oral route. Person-to-person transmission is thought to occur among close contacts mainly via respiratory droplets produced when an infected person coughs of sneezes. Fomites may be a large source of transmission, as SATS-CoV has been found to persist on surfaces up to 96 h and other coronaviruses for up to 9 days. Pregnant women who developed COVID-19 in late pregnancy suggested COVID-19 did not leas to substantially worse symptoms than in non-pregnant persons and there is no evidence for intrauterine infection caused by vertical transmission. Data shows that the older person and person with comorbidities are likely to develop severe symptoms compared to healthy young person and the

children. Mortality rate among person younger than 20 years is very less. Globally Case fatality ratio is approximately 3.

The hos immune system response to viral infection by mediating inflammation and cellular antiviral activity is critical to inhibit viral replication and dissemination. Howeverm excessive immune responses together with lytic effects of the virus on hos cells will result in pathogenesis. Studies have shown patients suffering from severe pneumonia, with fever and dry cough as common symptoms at onset of illness. Some patients progressed rapidly with Acute Respiratory Stress syndrome (ARDS) and septic shock, which was eventually followed by multiple organ failure and about 10% of patients have died. ARDS progression and extensive lung damage in COVID-19 are further indications that ACE2 might be a route of entry for the SATS-CoV-2 ad ACE2 is known abundantly present on ciliated cells of the airway epithelium and alveolar type II (cells pulmonary cells that synthesize pulmonary surfactant) in humans.

Currently, no vaccination has been approved for public use. There is a huge rush among nations across the globe to immunise their citizens against coronavirus. There are 191 COVID-19 vaccines under development around the world right now, and 41 of them are under different stages of clinical trials, according to the World Health Organization.

While there is no confirmed research or study to confirm how long the immunity lasts after infection but still several have confirmed that antibodies can last for a least 3 months. There are also signs that immunity could last much longer.

Several promising vaccines are in development, but intil they're available, we must use tools like physical distancing and mask-wearing to keep transmission down.

Conclusions

The current COVID-19 pandemic is clearly an international public health problem. There have been rapid advances in what we know about the pathogen, how it infects cells and causes disease, and clinical characteristics of disease. Due to rapid transmission, countries around the world should increase attention into disease surveillance systems and scale up country readiness and response operations including establishing rapid response teams and improving the capacity of the national laboratory system and health care system, spreading mass awareness on social distancing and wearing mask etc.

छात्र असंतोष व छात्र राजनीति का शिक्षा व समाज पर प्रभाव

डॉ. संगीता जग्गी
अतिथि विद्वान(राजनीति विज्ञान)

भारत की सर्वाधिक गंभीर समस्याओं का छात्र असंतोष व छात्र राजनीति रहा है। शैक्षणिक व राजनीतिक परिदृश्य में इस विषय को हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। छात्र आंदोलन राज्य सरकारों के पतन का कारण रहे हैं और उन्होंने केन्द्र सरकार को अपनी भाषाई नीतियों को संशोधित करने हेतु बाध्य किया है। छात्र सक्रियता के कारण व समस्याओं के कारण कई बार अकादमिक संस्थान बाधित व कई बार बंद भी हुआ है। छात्र असंतोष व आंदोलन को ऐतिहासिक संदर्भ में स्थापित करते हुए तथा वर्तमान में छात्र सक्रियता के विषयों पर सावधानी पूर्वक विश्लेषण करके ही हम छात्र असंतोष की जड़ों को समझ सकते है। तथा दूर कर सकते हैं।

छात्र पूरी तरह से समाज का एक भाग है, विशेष तौर पर आधुनिक भारत में जहाँ स्वतंत्रता के बाद राजनीति उन्मुख कुछ भी प्रभावशील आंदोलन हुए हैं छात्र सक्रियतावाद का संदर्भ महत्वपूर्ण है। आज भी छात्रों का एक बड़ा वर्ग समाज के दबावों के अधीन है जो हमारे समाज में विपरीत प्रभाव डालते हैं। प्रभावशाली प्रगति की नीतियों के बावजूद भी भारत भी भी कई अभावों का समाज बना हुआ है।

विश्वविद्यालय छात्रों के लिए कालेज अध्ययन की स्थितियाँ तथा शिक्षा प्राप्ति के बाद उपयुक्त रोजगार के संबंध में चिंताजनक स्थिति हमें डराती है।

उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद भी एक उपयुक्त रोजगार के लिए लंबा इंतजार करना पड़ता है जो कभी कभी जीवन पर्यंत चलता है। अनेक छात्रों की स्थितियाँ स्तरहीन है। अधिकांश कालेज छात्रों को अध्ययन के लिए आवश्यक न्यूनतम स्तर की जीवनयापन परिस्थितियां तक उपलब्ध नहीं है। शिक्षा प्रणाली स्वयं भी छात्रों के जीन को सीधे प्रभावित करती है और छात्र क्षत्रियतावाद की प्रकृति एवं स्वरूप पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारतीय शिक्षा अकादमिक स्तर पर वृद्धि के उच्च स्तर पर है। अत्यधिक भीड़ तथा उच्च शिक्षा में फैलती हुई नौकरशाही भी एक ज्वलंत समस्या है।

भारतीय विश्वविद्यालय एक महत्वपूर्ण राजनीति संस्थान बन चुके हैं और उच्च शिक्षा का राजनीतिकरण छात्र समुदाय पर प्रभाव डालता है। देश के विभिन्न संस्थानों में स्थानीय, प्रांतीय अथवा राजनीतिक मुद्दे परिसरों में छाए रहते हैं। 1965 में तमिलनाडु में भाषाई आंदोलनों तथा 1968 एवं 1971 में विभिन्न चुनाव अभियानों में छात्रों की संलिप्तता परिसरों पर राजनीकि घटनाओं के प्रभावों को सिद्ध करती है। भारत की अधिकांश छात्र अनुशासनहीनता असंगठित प्रकृति वाली है जो अपनी परिस्थितियों तथा व्यापक समाज के प्रति छात्रों की प्रतिक्रियाओं को प्रतिबिंबित करती है।

इसी तरह छात्रों में असंतोष का बढ़ता कारण रोजगार परक कौशल का अभाव है। तकनीकी शिक्षा के विद्यार्थियों में रोजगार परक कौशल का अभाव देखा जा सकता है। विभिन्न कमेटियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कौशल अंतराल की पहचान करने और उनमें रोजगारपक्रता के पाठ्यक्रमों को प्रस्तावित करने का सुझाव दिया है। इनमें से कुछ है – (1) इंडस्ट्री इंस्टीट्यूट स्टूडेंट ट्रेनिंग स्पोर्ट (2) लान्ग टर्म स्टूडेंट इंडस्ट्री प्लेसमेंट स्कीम (3) इंडस्ट्रियल चैलेंज ओपन फोरम (4) इंडस्ट्रियल फिनिशिंग स्कूल्स।

यह सत्य है कि स्वतन्त्रता के पश्चात उच्च शिक्षा का तीव्र गति से विकास हुआ है। परंतु विस्तार के साथ–साथ वर्तमान में गुणात्मक सुधार की ओर ध्यान कम दिया गया है। यही कारण है कि छात्र विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने के पश्चात भी रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यही शिक्षित बेरोजगारी अन्य समस्याओं को जन्म देती है। जिसका दुष्परिणाम समाज पर पड़ रहा है। अत: छात्र असंतोष को खत्म करने व इन पर राजनीति के दुष्परिणाम को समाप्त करने के लिए प्रभावशील प्रयासों की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा व बदलता हिन्दी का स्वरूप

डॉ. ममता संघी
अतिथि विद्वान (हिन्दी)

हिन्दी की दिशा व दशा पर हम दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि हिन्दी अपने विकास की परम्परा को निरन्तर दिन व दिन एक सफल प्रयास में आगे बढ़ा रही है। संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा हिन्दी भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जाती है। 1000ई.वी. के आसपास स्वतंत्र सत्ता संभालने वाली यह भाषा आज विश्व में तीन भाषाओं में स्थान बना चुकी है। आज सरल व लचीली भाषा हिन्दी बेव मीडिया में अपना स्थान जिस तरह मजबूत कर रही है वह दिन दूर नहीं जब वह विश्व भाषा की पूर्ण अधिकारिणी बनेगी या कहे कि हाल ही में हुए हिन्दी विश्व सम्मेलन में सम्मिलित विद्वानों ने हिन्दी वर्तमान स्वरूप स्थिति को देखकर इस निर्णय तक पहुँच चुके हैं कि हिन्दी हिवश्व भाग बन चुकी है। इसी तारतम्य में हिन्दी को आगे बढ़ाने व उसे अपना उचित स्थान दिलाने के लिए उच्च शिक्षा सबसे ज्यादा भूमिका निभा रही है। उच्च शिक्षा के प्रत्येक संकाय चाहे कला, विज्ञान, वाणिज्य ादि हो, सभी संकाय में स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य हिन्दी भाषा व विज्ञान बोध, हिन्दी भाषा और आधुनिक तकनीकी से संबंधित हिन्दी को छात्रों को पढ़ायी जा रही है जो हिन्दी के विस्तार को और अधिक वृहद रूप दे रहा है। हिन्दी के अनिवार्य विषय आधार पाठ्यक्रम के रूप में रोचकता का भी ध्यान रखा गया है। कला संकाय में हिन्दी साहित्य व प्रयोजन मूलक, भाषा विज्ञान, अनुवाद आदि स्वतंत्र विषय के रूप में हिन्दी निरन्तर विकास के आयामों को छू रही है। अन्य संकाय के छात्र छात्राएँ स्नातकोत्तर में हिन्दी विषय लेकर अपना शौक पूरा करने के साथ ही हिन्दी विषय से ही अनुसंधान कर रहे हैं। हिन्दी विषय में महाविद्यालयीन स्तर, विश्वविद्यालयीन स्तर पर छात्रों व उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत कर्मचारी निरन्तर शोध के दौरान नये-नये भाषा शब्द कोष, बोलियों के शब्दकोष, पुराने साहित्य का पुन:शोध कर हिन्दी को बढ़ाने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। जहां हम स्वतंत्र लेखन की बात करें तो सबसे ज्यादा उच्च शिक्षा में कार्यरत प्राध्यापक वर्ग हिन्दी की स्वतंत्र विधा पर कार्य कर रहे हैं। पाठक वर्ग भी हिन्दी के पठन-पाठन में रूचि ले रहे हैं। आज ऑनलाईन पुस्तकों के प्रकाशन ने देश-विदेश के पाठकों व हिन्दी छात्रों की संख्या में और अधिक बढ़ोत्तरी की है। जिससे हमारी समृद्ध ज्ञान की विरासत को सजोने में मदद मिल रही है।

हिन्दी में प्रयोजन मूलक हिन्दी स्वतंत्र विषय ने तो छात्र-छात्राओं को और अधिक नये-नये रोजगार के रूप में प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों को ही अपने में समेटकर उच्च शिक्षा में कार्यरत प्राध्यापक व छात्रों को नवीन जानकारी व तकनीक युग में प्रवेश कर हिन्दी के विस्तार से अवगत करवाया है।

'प्रयोजन मूलक हिन्दी' हिन्दी के भाषिक अध्ययन का ही एक नाम है व रूप है एक समय था जब सरकारी, अर्द्धसरकारी या कार्यालयी पत्राचार के लिए अंग्रेजी एक मात्र सक्षम भाषा समझी जाती थी। अंग्रेजी की उक्त महानता आज, सत्य से टूटी चेतना की तरह बेकार सिद्ध हो रही है चूंकि हिन्दी में अत्यन्त प्रभावी एवं स्तरीय पत्राचार संभव हुआ है। अत: जो लोग हिन्दी को अविकसित भाषा कभी क्लिष्ट भाषा कहते थे या अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी को कम आंकने की कोशिश करते थे उन्हें भी अब लगने लगा है कि हिन्दी वास्तव में संसार की एक मकान भाषा है। प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण एक सम्पन्न भाषा है। राजभाषा के अतिरिक्त नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है जैसे रेल्वे प्लेटफार्म,मंदिर, धार्मिक,संस्थानों आदि में। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा कानून और न्यायालय, उच्च स्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है।व्यापारियों और व्यवसायियों के लिए भी हिन्दी का प्रयोजन सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है और आवश्यक हो गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके ग्राहक, कर्मचारी सभी हिन्दी बोलते हैं। बैंक में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयों में अलग है। हिन्दी का यह प्रयोजन मूलक रूप अपने में वैज्ञानिकता, अनुप्रयुक्तता, वाच्यार्थ प्रधानता, सरलता व स्पष्टता की विशेषता लिए कुछ वह आधुनिक तकनीक को अभिव्यक्ति देने में सक्षम हो रही है।

प्रयोजन मूलक हिन्दी के अंतर्गत हिन्दी के विभिन्न रूप सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा आदि। कार्यालयीन हिन्दी राजभाषा के प्रमुख प्रकार्य, प्रारूपण, पत्रलेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पणी पारिवारिक शब्दावली स्वरूप एवं महत्व उनका व्यवहारिक प्रयोग हिन्दी कम्प्यूटिंग जिसका आज विश्व में सबसे अधिक बोलबाला या यूं कहे तो आज का युग ही कम्प्यूट का युग है। जिसमें हिन्दी कहीं भी पीछे नहीं है। समस्त कम्प्यूटर का ज्ञान हिन्दी में ही दिया जा रहा है। चाहे कम्प्यूटर के इतिहास की बात हो या उसके आंतरिक संरचना एवं हार्डवेयर या उसकी कार्यप्रणाली या उपयोगिता की सभी तरह की जानकारी हिन्दी में ही दी जा रही है। इंटरनेट ने तो हिन्दी को विश्वव्यापी छवि दे दी है। प्रयोजन मूलक हिन्दी में पत्रकारिता को पाठ्यक्रम में रखकर पत्रकारिता के इतिहास स्वरूप, समाचार लेखन कला, संपादन के आधारभूत तत्व, शीर्षक की संरचना, संपादकीय लेखन, पृष्ठ सज्जा, साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन, प्रेस कानून एवं आचार-संहिता आदि को पाठ्यक्रम में समाहित किया जा रहा जिससे छात्रों को रोजगार के साथ ही हिन्दी भाषा के प्रति रूचि बढ़ानें का कार्य किया जा रहा है। निश्चय ही उच्च शिक्षा का यह प्रयास सराहनीय है जो हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण

डॉ.संतोष भार्गव
अतिथि विद्वान संस्कृत विभाग

मानव और प्रकृति का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अनादि काल से रहा है। वेदों में वर्णित प्रकृति पूजा इसी मन्तव्य को प्रतिपादित करती है। सम्पूर्ण वैदिक एवं लौकिक साहित्य में प्रकृति संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। ''माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:'' (भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ) ऐसे कथन प्रकृति माता के प्रति समादर का भाव प्रकार करते हुए उसके सम्वर्धन की शिक्षा प्रदान करते हैं, जिसकी आज महती आवश्यकता है। क्योंकि यदि हम प्रकृति एवं पर्यावरण को सुरक्षित रखेंगे तो निश्चित रूप से प्रकृति हमें उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करेगी।

कवियों में अग्रगण्य,श्रेष्ठतम नाट्यकार और प्रकृति के कुशल चितेरे से जीवन के विविध पक्षों का विशद वर्णन करते हुए मानव के समग्र विकास में सहचरी रहने वाली प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है। तीनों नाटकों माल विकग्नि मित्रम्, विकमोर्वशीयम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् दो महानकाव्यों–रघुवंश महाकाव्यम्, कुमार सम्भवम् और दो खण्ड काव्यों–ऋतुसंहारम् एवं मेघदूतम् में उन्होंने पग–पग पर प्रकृति चित्रण कर मानव और प्रकृति के तादात्म्य सम्बन्ध को दर्शाया है, जो आज भी सर्वथा अनुकरणीय है।

विश्वविख्यात नाट्यकृति अभिज्ञान शाकुन्तलम् में नाटक की नायिका शकुन्तला कहती है कि – ''न केवलं तातस्य नियोग: ममापि सहोदर स्नेह: एतेषां'' अर्थात् मैं आश्रम स्थित वृक्षों पर पानी डालने का कार्य मात्रा पिता महर्षि कण्व की आज्ञा होने से नहीं डाल रही हूँ, बल्कि मेरा भी इन वृक्षों से सहोदर भातृभाव है। इस भातृभाव से अभिप्रेत होकर मैं स्नेह एवं प्रेम पूर्वक जल सिंचन कार्य में तत्पर रही हूँ। यदि ऐसा पवित्र एवं आत्मीय भाव जन–जन में जागृत हो जाए तो निश्चित रूप से प्रकृति संरक्षित होकर मानव जीवन को सर्वांगीण विकास की ओर ले जायेगी और हम जीवन की वास्तविकता को समझ सकेंगे जो मानव जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है।

एक अन्य प्रसंग में महर्षि कण्व पालिता पुत्री शकुन्तला के राजा दुष्यन्त से गन्धर्व विवाहोपरान्त विदाई के शुभ अवसर पर प्रकृति को परिजनों की भांति सम्मान देते हैं और विदाई की अनुमति भी मांगते हैं –

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं,
युष्माष्व पीतेषु वा ।
न धत्ते प्रिय मण्डनापि भवतां,
स्नेहेन या पल्लवम्।।
आद्यौ य: कुसुमप्रसूति समये,
यस्या: भवव्युत्सव:।
से यं याति शकुन्तला पति गृहं
सर्वे रनुज्ञायताम्।।

अर्थात् महर्षि कण्व अपनी पुत्री शकुन्तला के प्राकृतिक प्रेम को प्रतिपारित करते हुए वृक्षों, लताओं एवं वनस्पतियों से कहते हैं कि आज शकुन्तला अपने पतिगृह को चली जायेगी, आप सभी उसे शुभाशीष देते हुए जाने की अनुमति प्रदान करें, क्योंकि वह आप सभी को अत्यन्त स्नेह करती है। शकुन्तला आपको जल सिंचन करने के उपरान्त ही स्वयं जल पीती है। श्रृंगार प्रिय होते हुए भी वह सहोदर भाव होने के कारण कभी पुष्प नहीं तोड़ती थी, ताकि आप पुष्प रहित न हों और आपकी सुन्दरता बाधित न हो। इतना ही नहीं वह तो आपसे इतना स्नेह करती है कि जब भी किसी नूतन पौधे में प्रथम बार पुष्प खिलता है तो वह पुत्रोत्सव मनाती है, प्रसन्न होती है। ऐसे स्वभाव वाली शकुन्तला हम सभी से दूर पति के घर को जा रही है। महर्षि कण्व का अपनत्व–पूर्ण भाव जानकर वृक्षों और लताओं ने मार्ग में सुन्दर एवं सुगन्धित पुष्प विछारिये जैसे बहन की विदाई के अवसर भाईयों द्वारा बिछाये जाते हैं। वनस्पतियों द्वारा नवविवाहिता वधू को महावर, हरिद्रा और चन्दन आदि मांगलिक व शुभप्रद वस्तुएँ प्रदान कर दी गयीं। साथ ही वृक्षों और लताओं से गिरे हुए पत्ते अश्रुपात का संकेत कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे परिजन तथा परिवार जन पुत्री के विवाह की मंगलमयी वेला पर उत्साहपूर्वक वैवाहिक सामग्री भी संगृहीत कर रहे हैं और पुत्री से पृथक होने का स्मरण हो जाने से अश्रुपात भी हो रहा हो। ऐसा अनुपम सम्बन्ध आज भी प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है।

मानव जीवन के लिए प्रकृति की सार्थकता और उपादेयता को सर्वोपरि मानने वाले कविकुल गुरू महाकवि कालिदास ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में बार-बार प्रकृति सम्बन्धी मनोहारी प्रसंगों का मार्मिक वर्णन किया है। रघुवंश महाकाव्यम का यह प्रसंग भी मानव और प्रकृति के उदात्त व अनुपम सम्बन्धों का सुन्दर भाव प्रकट करता है। जिस प्रकार युद्ध में राजा के विजयी होने के बाद नगर आगमन पर प्रजाजन स्वागत करते हैं, विशेष रूप से नगर की कन्याएँ राजा के ऊपर आर्शीवाद स्वरूप खील डालती हैं ठीक इसी प्रकार राजा के वन आगमन पर बड़े-बड़े वृक्षों पर लिपटी हुयं बाल लताएँ नगर कन्याओं की भांति मार्ग में राजा के ऊपर पुष्प वर्षा कर स्वागत कर रही हैं।

''अवाकिरण वाललता प्रसूनै: आचारलाजैखि पौरकन्या''कविकुल कमल दिवाकर महाकवि कालिदास भविष्य दृष्टा थे। वह जानते थे कि प्रकृति से दूर होकर कृत्रिम वस्तुओं को उपयोग और उपभोग सर्वथा हानिप्रद है। इसीलिए राजा दुष्यन्त से प्रकृति की गोद में लालित-पालित शकुन्तला के अनुपम सौन्दर्य की प्रशंसा करवाते हैं - ''दूरी कृतै: खलु उद्यान लता वन लर्ताथ:।''अर्थात् राजा दुष्यन्त शकुन्तला के सुन्दर स्वरूप और देदीप्यमान कान्ति व लावण्य को देखकर रनिवास की रानियों के सुन्दर स्वरूपों से तुलना करते हुए कहता है कि जैसे माली की देखरेख में संरक्षित उद्यान की लता से वन लता श्रेष्ठ दिख रही है, ऐसे ही सभी प्रकार की सौन्दर्य साम्री का उपयोग करने वाली सभी रनिवास की रानियों से आश्रम में रहने वाली और वल्कल वस्त्र पहनने वाली ऋषि कन्या शकुन्तला अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रही है और ऐसा आभास हो रहा है कि वन की लता ने उद्यान की लता को लजा दिया है।

अत: यह स्पष्ट है कि प्रकृति प्रदत्त वस्तुएँ तथा प्रकृति के सानिध्य में रहने वाला मानव दोनों अतुलनीय है। यही कारण है कि हमें प्रकृति के संरक्षण में रहने की सलाह दी जाती है और कृत्रिम वस्तुओं कबे प्रयोग करने की बात बार-बार कही जाती है ताकि हम तन-मन से स्वस्थ और ऊर्जावान रहें।

यदि समय रहते अब भी हम प्रकृति संरक्षण व सम्वर्धन के प्रति सजग नहीं हुए तो महाविनाश के निकट पहुँच जायेंगे और तब पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जायेगा। इसीलिए हमें प्राकृतिक संरक्षण के प्रति सजग होकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी मनुष्य जीवन स्वस्थ, सुन्दर और कल्याणमय बन सकेगा।

मंजिल से भी खूबसूरत सफर

कौशिल्या लोधी
एम.ए.प्रथम हिन्दी

मंजिल से भी खूबसूरत सफर
चल ओ मुसाफिर न मुश्किल से डर

कांटों की डाली से कलियों को चुनना
टेढ़ी-मेढ़ी राहों से गलियों को चुनना
अंधेरी राहों को रोशन है करना
तुझको ही दीपक की तरहा है जलना

आगे बढ़ा, अगर तू होके निडर
मंजिल से भी खूबसूरत सफर

धूप मिलेगी कहीं छांव भी तो होगी
नदियाँ मिलेगी तो नाव भी तो होगी
माना कि तझको निरंतर है चलना
पर चन्द दूरी पर छाँव भी तो होगी

दुश्कर से न हार मानी अगर
मंजिल से भी खूबसूरत सफर

नन्ही सी चीटी पहाड़ों पर चढ़ती है
छोटी सी चिड़िया उड़ने से डरती
फिर एक दिन भरके पंखों में जान
दूर आसमानों में भरती उड़ान

एक-एक तिनके से बनाती है घर
मंजिल से भी खूबसूरत सफर

वैश्विक मंदी और मजबूत होती भारतीय आर्थिक स्थिति

डॉ.हरप्रीत सिंह कंधारी अतिथि विद्वान अर्थशास्त्र

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् सबसे बड़े आर्थिक संकट और मानवीय संकट से ऊबरी दुनिया के सामने मंदी के साथ मुद्रा स्फीति का खतरा मंडराने लगा है। विश्व के विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था अभी पटरी पर लौटने ही लगी थी कि रूस व यूक्रेन के बीच शुरू हुये युद्ध ने नया संकट पैदा कर दिया। इसने पूरे यूरोप समेत दुनिया के बाकी देशों में भी खाद्यान्न व ऊर्जा आपूर्ति को बाधित कर दिया। परिणामस्वरूप शेयर बाजारों में भारी गिरावट भी देखने को मिली है। आपूर्ति के इस संकट ने वैश्विक मुद्रा स्फीति को बढ़ा दिया है जिससे खाने पीने और विनिर्माण की चीजों के भाव अचानक से कई प्रतिशत तक बढ़ गये।

खाद्यान्न व ऊर्जा का यह संकट देशों की आर्थिक नीतियों और योजनाओं को भी प्रभावित कर रहा है जो कि दीर्घकाल में आर्थिक स्थिरता और भू राजनैतिक तनाव पैदा करेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष,विश्व बैंक और वैश्विक वित्तीय संस्थाओं की हालिया रिपोर्ट के अनुसार 2021 में 5.8 प्रतिशत की गति से बढ़ी विश्व अर्थव्यवस्था 2022 में 2.7 प्रतिशत और 2023 में 2.6 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है जो कि अप्रेल 2022 में जारी किये गये अनुमान से काफी कम है मँहगाई ने जिस तरह से मुद्रास्फीति को बढ़ाया उसने अमरीकी फेडरल बैंक समेत सभी देशों के बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ाई जिससे उन्नत निवेश प्रभावित हुआ। हालांकि मुद्रास्फीति 2022 के 7.3 प्रतिशत से कम होकर 2023 में 4.2 प्रतिशत व 2024 में 2.7 प्रतिशत रहने की संभावना है हालाकि चीन व एशियन देशों की ग्रोथ रेट यूरोप और अमेरिका की तुलना में अच्छी रहेगी। अमेरिका व यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि दर जहाँ 2 से 3 प्रतिशत के आसपास रहेगी वहीं चीन की 3.3 प्रतिशत इंडोनेशिया की 5.3 प्रतिशत मलेशिया की 5.1 प्रतिशत फिलीपीन्स की 6.7 प्रतिशत और थाईलैंड की 2.8 प्रतिशत वृद्धि दर रहेगी।

इन सब खतरों आशंकाओं व सकारात्मक माहौल के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था 2022–23 में लगभग 7 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। नाबार्ड सहयोग संगठन की हाल ही 3 जबेकिस्तान के शहर समर केंद्र में बैठक हुई थी इस बैठक में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि 7.5 प्रतिशत दर के साथ भारत सर्वाधिक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ साथ विनिर्माण के क्षेत्र का हब भी बनने जा रहा है। प्रधानमंत्री जी ने बताया कि भारत में 70,000 नये स्टार्ट अप बने हैं जिससे 100 से ज्यादा यूनीकार्न है। भारत भविष्य में भी तकनीकी अनुसंधान व विकास पर फोकस बढ़ाने जा रहा है जो विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में भारत को रखेगा।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया वैश्विक रेटिंग एजेन्सी विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी सभी एजेन्सियों ने माना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था 2023 में लगभग 7 प्रतिशत से ज्यादा दर से बढ़ेगी। उपभोक्ता खर्चो में हुई वृद्धि व करोना के समय रोजगारों के वापस लौटने से यह वृद्धि दर व इसका सतत बने रहना संभव हो गया है वही निजी क्षेत्र का निवेश भी इसी दर से बढ़ा है। विदेशी मुद्रा भंडार का उच्च स्तर सतत विदेशी निवेश और निर्यातों की कमाई से आर्थिक स्तर को मजबूती मिली है वही मजबूत घरेलू मांग नये निवेश, विनिर्माण पर जोर, बढ़ते सरकारी व निजी खर्च तकनीक पर जोर, नये स्टार्ट अप की सफलता राजनैतिक और आर्थिक नीतियों से स्थिरता आदि ने भारत की अर्थव्यवस्था को सबसे तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था में ला दिया है।

प्रोग्रामिंग (कोडिंग)

रेशु चौरसिया कम्प्यूटर विभाग

''कोडिंग आज की रचनात्मकता की भाषा है। हमारे सभी बच्चे कम्प्यूटर विज्ञान के उपभोक्ता के बजाय निर्माता बनने का हकदार है।''हर किसी को कम्प्यूटर प्रोग्राम करना सीखना चाहिए क्योंकि यह आपको सिखाता है कि कैसे सोचना है। कोडिंग, यह परीक्षण और त्रुटि की एक अंतहीन प्रक्रिया है, सही जगह पर सही आदेश प्राप्त करने की कोशिश करने की कभी-कभी केवल एक अर्धविराम सफलता और विफलता के बीच अंतर है बना देता है। कोड टूट जाता है और फिर यह अलग हो जाता है और यह अक्सर उस जादुई पल तक कई बार प्रयास करता है जब आप जो बताने की कोशिश कर रहे हैं वह जीवन में आता है।

सहसंक्रमण का प्रबंधन और चुनौतियाँ

डॉ.दिनेश कुमार पटेल
वनस्पति विज्ञान विभाग

पारंपरिक रूप से सहसंक्रमण उस अवस्था को कहा जाता है, जब कोई प्राणी एक ही समय में दो या दो से अधिक संक्रमक जीवों से सवंमित हो जाता है। सहसंक्रण के लिये जिम्मेदार संक्रामक जीव आनुवांशिक रूप से भिन्न होते हैं अर्थात् उनकी प्रजातियाँ भिन्न होती हैं। सहसंक्रमण के कई उदाहरण हैं जिसके अंतर्गत विभिन्न जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ, कृमि आदि के द्वारा मनुष्य में कई प्रकार के सहसंक्रमण की परिस्थितियाँ निर्मित होती है। उदाहरण के लिये मनुष्य में एच.आई.बी. के संक्रमण के कारण प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर हो जाता है जिसके फलस्वरूप शरीर अन्य संक्रामक जीवों के संक्रमण के लिये अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है। इसी प्रकार मलेरिया के दौरान एनीमिया की स्थिति बनती है। जिसके कारण जीवाणु जनित रोगों जैसे टाइफाइडल तथा नॉनटाइफाइडल साल्मोनेला का गंभीर संक्रमण हो सकता है। इसी प्रकार अन्य कई उदाहरण हैं। सहसंक्रमण की परिस्थितियाँ अत्यन्त जटिल होती हैं तथा इन्हें समझना भी आसान नहीं है। विभिन्न प्रकार के सहसंक्रामक रोगों का व्यापक स्तर पर अध्ययन नहीं किया गया है, जिस कारण उनका प्रबंधन भी अत्यधिक जटिल होता है।

सामान्यत: विभिन्न संक्रामक बीमारियों का उपचार विश्व स्वास्थ्य संगठन (थकज) के दिशा निर्देशों के आधार पर किया जाता है, जो कि काफी प्रभावी होता है। परन्तु सहसंक्रमण के दौरान कई गंभीर परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं जिनसे निपटने के लिये वर्तमान में किसी भी उच्च स्तरीय स्वास्थ्य संस्था के द्वारा स्पष्ट दिशा निर्दश नहीं दिये गये हैं। इस कारण सहसंक्रमण के उपचार के दौरान चिकित्सकों के मन में संशय की स्थिति बनी रहती है।

इसलिये आज के समय में यह अत्यन्त आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार की गंभीर सहसंक्रामक रोगों का वैज्ञानिकों तथा चिकित्सकों के द्वारा व्यापक स्तर पर अध्ययन किया जाये ताकि उनके उपचार से संबंधित उचित दिशा निर्देश प्रस्तावित की जा सके। इसके साथ ही इन गंभीर सहसंक्रामक रोगों के प्रति सामाजिक जागरूकता भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

दोहे

कु . विनीता अहिरवार
एम.ए.प्रथम सेमे.

बिना तेज के पुरूष की अवशि अवज्ञा होय

आगि बुझे ज्यौ राख की आप छुवै सब कोय

अर्थात् – तेजहीन व्यक्ति की बात को कोई भी व्यक्ति महत्व नहीं देता है ।

उसकी आज्ञा का पालन कोई नहीं करता है ।

ठीक वैसे ही जैसे राख की आग बुझ जाती है । तो उसे हर कोई छूने लगता है ।

तुलसी साथी बिपती के विद्या विनय विवेक ।

साहस सुकृती सुसत्यव्रत राम भरोसे एक ।

अर्थात् – मुश्किल वक्त में ये चीजें मनुष्य का साथ देती हैं ।

ज्ञान, विनम्रता पूर्वक व्यवहार, विवेक साहस अच्छे कर्म आपका सत्य और राम का नाम ।

काम,क्रोध,मद,लोभ की,जौ लौ मन में खान

तौ लो पंडित मूरखौ,तुलसी एक समान

अर्थात् – जब एक व्यक्ति के मन में काम की भावना गुस्सा अहंकार और लालच भरे हुये होते हैं तब तक एक ज्ञानी व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति में कोई अंतर नहीं होता है ।

दोनों एक ही जैसे होते हैं ।

बदलती पारिवारिक व्यवस्था की चुनौतियाँ

डॉ.उमेश कुमार दीपांकर
समाज शास्त्र विभाग

हाल के एक समाचार के अनुसार वाशिंगटन की सड़कों पर पाँच हजार यवक-युवतियों का जुलूस निकाला यह आज भीड़ विवाह के अटूट बन्धन एक जीवन साथी के प्रति वफादारी और समाज को बचाने के लिए परिवार भावना का पुनर्जीवित करने की आवाज बुलन्द करने के लिए जुटी थी। पाश्चात्य देशों में अब अति सम्पन्नता से ऊंचे और यौन-स्वच्छन्दता के परिणामों से चिंतित लाखों लोग विवाह परिवार जैसी पारम्परिक व्यवस्था की ओर लौटने के लिए उतावले हो उठे हैं। भारतीय विवाह-पद्धति का आदर्श उन्हें भाने लगा है। अमरीकी ही नहीं, चीनी, वियतनामी कोरिकई, फ्रेंच, स्विस, जर्मन, अफ्रीकी मूल के युवक-युवतियाँ भी इस अभियान में शामिल थे। एड्स जैसी भयंकर बीमारी ने भी उन्हें वैवाहिक बन्धन और परिवारवाद की ओर लौटने के लिए विवश किया है। प्रेम को ईश्वरीय देन और वफादारी को सामाजिक आवश्यकता मानकर अब कुछ बड़े प्रकाशन-समूह और चर्च भी लोगों को इस ओर प्रेरित कर रहे हैं। पश्चिमी समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों ने अपने अध्ययनों से यही निष्कर्ष निकाला है कि जिन बच्चों का अपने माता-पिता के संरक्षण में समाजीकरण होता है। वे प्राय: जीवन में कुछ ज्यादा ही सफल होते हैं। हिंसा आतंक व समाज-विरोधी प्रवृत्तियाँ टूटे परिवारों से ही निकल कर बाहर आ रही है। पश्चिमी की नकल में अपनी दिशाऐं निर्धारित करने वाले हम भारतीयों के लिए यह समाचार न केवल सुखद है। बल्कि अपनी पारिवारिक आत्मीयता और ऊष्मा को वापस पाने की खोज में एक प्रेरणा या दिशा बोधक का भी काम करेगा। सचमुच हमारी आज यही गति और स्थिति है। पश्चिमी जीवन-मूल्यों को अपनाने की होड़ में और उपभोक्तावाद की आन्धी दौड़ में जब हम अपनी विरासत के उज्ञवल पक्षों को नजर अन्दाज ही ही कर रहे हैं। उनका आकलन कैसे करेंगे। आकलन-मूल्यांकन नहीं होगा तो पुर्नमूल्यांकन की अैर उसमें समयानुसार संशोधन, परिवर्तन, परिमार्जन को बात कैसे होगी ? परिवार के विखण्डन से समाज के विखण्डन तक जाकर भी क्या हम अपने भारतीय समाज के अवमूल्य पर तब बात करेंगे पश्चिम में परिवार बहस केन्द्र में आ जाएगा।

हमारी संयुक्त परिवार प्रणाली में व्यक्तिगत और सामाजिक सभी समस्याओं का समधान था। बीमारियों अपंगते, वृद्धों, बच्चों, बेरोजगारों, लाचारों के लिए किन्हीं अलग संस्थाओं की आवश्यकता न थी। उस टूटन की भरपाई आज पीड़ित महिला परामर्श केन्द्र, वृद्धाश्रम, होम, 'केश' और 'आफ्टर केयर होम' आदि कितनी ही संस्थाएँ मिलकर भी कर पा रही है। अपनी उत्तवल परम्पराओं पर आधारित उपयोगी संस्थाओं में समय के साथ कुछ विकृतियाँ आ गयी है। तो बदले समय के अनुरूप बनाने के लिए उनकी पुर्ननिर्माण व परिमार्जन किया जाना चाहिए न कि उनकी उपयागिता को ही नकार कर समाज को उनके लाभ से वंचित करना चाहिए। परिवार के विकल्प के रूप में उभर कर सामने आ रही संस्थाएँ भारतीय मानसिकता के अनुकूल नहीं है। विवशता की स्थिति में वे स्वीकार्य होने पर भी वृद्धाश्रम और पालना-घर को जोड़ देने जैसे समाधान खोजे जाने चाहिए कि वृद्धों को बच्चों का साथ मिल सके और बच्चों को वृद्धों की छत्र-छाया में भावात्मक सुरक्षा प्राप्त हो सके।

दैनिक जीवन में उपयोगी पौधे

डॉ.आभा अग्रवाल
अतिथि विद्वान – वनस्पति शास्त्र

1. लहसुन – एलियम सटाइवम– यह पौधा लिलि ऐसी कुल में आता है, तथा इसकी खेती भारतवर्ष में प्रत्येक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर की जाती है। इसका भूमिगत भाग खाने योग्य होती है तथा साग सब्जी और चटनी आदि बनाने में उपयोग में लाया जाता है। भारत में इसकी तीन किस्में उगाई जाती हैं –

1.एक बल्ब वाली किस्म, जिसका उपयोग गठिया, सिरदर्द, हृदय, उच्च रक्तचाप, भूख न लगना, नसों की पीड़ा, जोड़ों के दर्द, कमजोरी तथा नींद न आने में किया जाता है।

2 कई कलियों वाली किस्म जो लू लगने, बदहजमी तथा सर्दी जुकाम में दी जाती है। यह कोलेस्ट्राल को भी कम करती है।

3. आठ कलियों वाली किस्म श्वास के रोगों, तपेदिक बदहजमी तथा दमें आदि में प्रयुक्त होती है। इसका रस चर्म लाल हो जाने पर मला जाता है जिससे तुरंत आराम मिलता है। मध्यप्रदेश के आदिवासी तथा गांव वाल कलियों को मीठे तेल में जलाकर, उस तेल का उपयोग कान के दर्द में करते हैं।

2. घींकवार, गँवारपाठा – एलो बारबाडेन्सिस – यह पौधा अगावेसी कुल का है। यह लगभग पूरे भारतवर्ष में विशेषकर शुष्क स्थानों पर पाया जाता है, तथा प्राय: इसको लगाया भी जाता है। इस पौधे का उपयोग पेट के विकारों में जैसे बदहजमी व दर्द में तथा दस्तावर औषधि के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह अनियमित महामारी के सही करने के लिये, बवासीर के इलाज में तथा कृमिनाशक के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसकी पत्तियाँ गूदेदार होती हैं। नींद कम आने पर काम में ली जाती हैं तथा शर्बत बनाकर भी इनका उपयोग किया जाता है।

3. कल मेघ, कमलेग–एंड्रोग्रेफिस पेनिकुलेटा :– यह पौधा एकेन्थेसी कुल आता है। यह मध्यप्रदेश में पथरीली भूमि में बहुतायत से मिलता है। इस पौधे का उपयोग शक्तिवर्धक औषधि तथा कृमिनाशक के रूप में किया जाता है। बुखार उतारने के लिये भी यह पौधा उपयोग में लाया जाता है। यकृत की खराबी में भी इसका उपयोग होता है। इसके पौधे बुखार में तथा जड़ पेट दर्द में और शक्तिवर्धक के रूप में काम में लिए जाते हैं।

इसकी पत्तियाँ यकृत की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं तथा पाचन क्रिया को सुचारू बनाती हैं। डॉ. एस.के. जैन के अनुसार बस्तर के आदिवासी पूरे पौधे को सरसों के तेल में पीसकर खुजली तथा जलन पड़ने वाले भाग पर मलते हैं।

4. नीम– एजाडिरेक्टा इंडिका – यह वृक्ष मिऐसी कुल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सदस्य है। यह सारे भारतवर्ष में पाया जाता है तथा प्राय: घरों और सड़के ों के किनारे लगाया जाता है। इसकी काष्ठ का उपयोग खिलौने, हल और दूसरी घरेलू वस्तुएं बनान में किया जाता है, तथा कभी–कभी ईंधन का काम भी लिया जाता है। इसके तने की छाल का उपयोग करके एक कडवे शक्तिवर्धक के रूप में तथा मलेरिया और मौसमी बुखार में किया जाता है। इसकी पत्तियाँ एक कीटाणुनाशक तथा रक्त शुद्धि कारक के रूप में उपयोग की जाती है। तने से प्राप्त होने वाला गोंद भी शक्तिवर्धक समझा जाता है। फूलों का न केवल सब्जी के रूप में खाया जाता है, बल्कि उससे काजल भी लगाया जाता है। पत्तियों को सुखाकर अनाज के साथ रखा जाता है ताकि वह घुन लगने से बच जाये। इसके फल कृमिनाशक तथा दस्तावर औषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा बीज का तेल, साबुन आदि बनाने में प्रयुक्त किया जाता है।

5. अमलतास – केसिया फिस्टुला – यह वृक्ष लेग्यूमिनेसी कुल का सदस्य है। यह जंगलों में लगने के साथ–साथ गाँव, घरों तथा बांगों में भी लगाया जाता है। इसकी काष्ठ का उपयोग जलाने, पुलों के खम्बे बनाने, बैलगाड़ी, औजारों के दस्ते तथा धान

कूटने के लिये मूसल बनाने आदि में किया जाता है। इसकी छाल से एक पीला रंग प्राप्त होता है जिससे धागे एवं कपड़े रंगे जाते हैं। तने से प्राप्त रेशों से रस्सी तथा ब्रुश बनाये जाते हैं। इसके कच्चे तथा हरे फलों के गूदे का उपयोग कब्ज से छुटकारा पाने हेतु औषधि तथा रक्त शोधक के रूप में किया जाता है।

6. धतूरा – धतूरा अल्बा – यह सोलेनेसी कुल का सदस्य है तथा लगभग पूरे भारतवर्ष में पाया जाता है। कभी–कभी बागों में भी इसको लगाया जाता है। इसकी जड़, पत्ती तथा बीजों का उपयोग किया जाता है इसकी जड़, पत्ती तथा बीजों का उपयोग पागलपन दूर करने, बुखार, दिमागी बीमारियों तथा त्वचा रोगों में किया जाता है। पत्तियाँ जीवाणु नाशक के रूप में तथा घाव भरने के लिये प्रयोग की जाती है। इसमें कई अल्केलाइडस पाये जाते हैं। जिनमें एट्रोपीन, हायोसीन, तथा हायोसाइमिन प्रमुख हैं।

EASY BUT DIFFICULT

Mrs. Anubha Tiwari

Easy is to get a place in
someone's address book,
Difficult to get a place in someone's heart Easy to judge the mistakes of others,
Difficult to recognize our mistake
Easy to forgive others
Difficult to seek forgiveness
Easy to set rules
Difficult to follow them
Easy to dream every night
Difficult to fight for them
Easy to enjoy life everyday
Difficult to get its real value
Easy to promise something to someone,
Difficult to fulfil that promise
Easy to make mistakes
Difficult to lean from them
Easy to receive
Difficult to learn from them
Easy to receive
Difficult is to give
Easy to read this
Difficult to follow

नव निर्माण

श्रीमती शिखा यादव
रसायन शास्त्र विभाग

वर्तमान युग में
एक सुदृढ़ समाज के लिये,
जरूरी है महिलाओं को,
शिक्षा की ओर अग्रसर करना,
उनके स्वयं के अधिकारों के ज्ञान के लिये।
जरूरी है महिलाओं की,
स्वतंत्रता और उनका सम्मान,
स्माज में एक नई पहचान के लिये।
जरूरी है महिलाओं को,
हर एक क्षेत्र में अवसरों को प्रदान करना
एक नवनिर्माण के लिये।
जरूरी है महिलाओं को
विचारों को महत्व देना औरसमझना
उनकी भावनाओं के मान के लिये।
जरूरी है महिलाओं की
आवश्यकताओं का ध्यान रखना
उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिये।
जरूरी है महिलाओं को,
सक्षम और शक्तिशाली बनाना,
उन्हें स्वयं की सुरक्षा में सुदृढ़ करने के लिये।

Qualitative analysis of the COVID-19

Dr.CHANDRA SHEKHAR RATHORE
Zoology Dipatmant

Abstact

Cajanus cajan is an important pulse crop of Sagar and Narsingpur District. A general survey of different pest of sedings and vegetative stages was made.

Most of the pest in Cajanus was found on the buds, flower, and pods. Only few grasshoppers were seen eating leaves. Important pest of flowers are buds, were Blister bettle (Mylabris and Species), Thrips (Calithrips indicus), Aphid (Aphis, species) and two species of Hemipterans. Much of the damage to the pod was caused by Hymenopteran ben (Tarasting Modes species), Black fly (Agromyza Sp.) and Lepidoptera (Exelastis Sp.). We found that Agromyza Sp. Is the major pest of Cajanus cajan in Sagar. After counting the good seed number in the pod it was found that the damage caused by Agromyza sp. Varies from 20% to 30%. The pupal number in each pad varies, from onbe to five. The fly lay eggs after making a hole in young pod. The larvae feed on, the developing seeds, and pupate in the pod. Exelastis sp. is also a major pest and it damage varies upto 50%. The eggs are laid by the adult fly on the young pod. The young larvae feed on the developing seeds.

The damage caused by hemipteran bugs are less as compared to the Agromyza and Exelastis sp.

कोई अर्थ नहीं

श्रीमती सोमी सिंह

नित जीवन के संघर्षो से
जब टूट चुका हो अंतर्मन,
तब सुख के मिले समंदर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

जब फसल सूखकर जल के बिन
तिनका-तिनका बन गिर जाए,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

संबंध कोई भी हो लेकिन
यहि दु:ख में साथ न दे अपना,
फिर सुख में उन संबंधों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

मन कडवे बोलो से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाए,
फिर बाद में कहे मीठे बोलो का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

कविता

श्रीमती विनीता बरेले
प्रयोगशाला परिचारक (भूगोल)

बांध लिया शब्दों को मुट्ठी में दुनिया को
द्वार ही न मिला मुक्ति का जिसको मांगे से ।

सेनो की ढाल और रत्न-जड़ी तलवारे
हारती रही कुम्हार के कर के धागे से ।

सीखा यों हमने फन सावन की बदली में
सावन के रंग और नूर को पिरोने का।

वक्त कभी माटी का, वक्त कभी सोने का
पर न किसी हालत में यह अपना होने का।

राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. अपर्णा गोस्वामी-डॉ. असलम खान
(सहायक प्राध्यापक)

राष्ट्रीय सेवा योजना एक समाजसेवी शैक्षिक संगठन है जिसके द्वारा अनेक प्रकार के जागरूकता अभियानों को आयोजित कर युवाओं को समाज में उनके कर्तव्यों के प्रति शिक्षित व जागरूक किया जाता है। सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र के विकास के प्राथमिक उद्देश्य से महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की इकाई संचालित है जिसमें लगभग 100 छात्रायें पंजीकृत है। महाविद्यालय में एनएसएस की गतिविधियों के सुचारू क्रियान्वयन हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना सलाहकार समिति गठित है जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से विभिन्न गतिविधियां संपादित की जाती है। रासेयो इकाई द्वारा नियमित और वार्षिक विशेष शिविर गतिविधियों के अंतर्गत शिक्षा एवं साक्षरता, स्वास्थ्य एवं पोषण,स्वच्छता,पर्यावरण संरक्षण,सामाजिक सेवा कार्यक्रम,महिलाओं की स्थिति में सुधार, टीकाकरण, मतदाता जागरूकता कार्यक्रम, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान एवं योग इत्यादि पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।वर्ष 2021-22 में महाविद्यालय द्वारा लिये गये गोदग्राम-हिरदेपुर जिला दमोह में सात दिवसीय विशेष वार्षिक शिविर का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य जन स्वच्छता व्यक्तिगत स्वास्थ्य की थीम पर शिविर में सहभागी स्वयंसेवी छात्राओं ने ग्राम में साफ-सफाई, श्रमदान,कोविड-वैक्सीनेशन, जल संरक्षण हेतु ग्राम में स्थित तालाब पर मानव श्रृंखला निर्माण, सोखपिट गड्ढे का निर्माण किया।

साथ ही रैली के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर लोगों को जागरूक करने का संदेश दिया। बौद्धिक परिचर्चा आयोजित की गई जिसमें विषय-विषतयों द्वारा शिवरार्थियों को अति महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। वर्तमान में स्वयंसेवी छात्रायें अंकुर कार्यक्रम, ऊर्जा साक्षरता अभियान में सतत् रूप से सहभागी हैं। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा जिला स्तर, राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित शिविर में भी सहभागिता की गई। स्वयंसेवी छात्रा कुमारी प्रतिभा बंसल एवं कुमारी रश्मि मेहरा ने राज्य स्तरीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर दिनांक 7 मार्च 2022 से 13 मार्च 2022 ग्राम सतनवाडा कलां, जिला शिवपुरी में सहभागिता की। कुमारी प्रतिभा बंसल द्वारा 25 मई 2022 से 31 मई 2022 तक आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर पश्चिम मैदिनीपुर, पचिम बंगाल में सहभागिता की गई। गणतंत्र दिवस समारोह (2023) (आर डी सी परेड) हेतु कु. दीक्षा यादव प्रतिक्षारत प्रतिभागी के रूप में चयनित हुई है।

कम्प्यूटर वक्त की मांग

श्रीमती सपना राजपूत कम्प्यूटर-विभाग

हमारे आज के युग में हम जिस वस्तु का उपयोग करके लगभग सभी काम कर सकते हैं, उसे कम्प्यूटर कहते हैं।

कम्प्यूटर बिजली से चलने वाला ऐसा उपकरण है। जो दी जाने वाली सूचनाओं को एकत्र कर कार्य कर और अंत में सही परिणाम देता है। आज यह जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। छोटे बच्चों को विद्यालय में शिक्षा से लेकर चिकित्सा, बैंक, व्यापार, हर जगह इसकी उपयोगिता और जरूरत महसूस की जाती है। वर्तमान युग को कम्प्यूटर का युग कहा जाने लगा है। जहां बड़े-बड़े उद्योग, कारखानों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, अस्पतालों में हर कार्य कम्प्यूटरी कृत हो गया है। कम्प्यूटर के माध्यम से पठन-पाठन का स्तर भी अच्छा हुआ है। इंटरनेट के माध्यम से मनुष्य हर प्रकार की जानकारी का रहस्य प्रसार दुनिया के किसी भी कोने से करने में सक्षम है। वास्तविक रूप में इंटरनेट का विस्तार असीमित है।

कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क है, जिसमें अनेक प्रकार के गणित के सूत्रों एवं तथ्यों का संचालन कार्यक्रम पहले से ही संपादित करना होता है। कम्प्यूटर बेहद ही कम समय में गणना करके तथ्यों को अपनी स्क्रीन पर दिखा देता है।

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना

डॉ. एन.पी.नायक
प्रभारी

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन योजना उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन भोपाल द्वारा सत्र 2005-06 से प्रदेश के सभी महाविद्यालयों में लागू की गयी। प्रारम्भ में योजना का उेश्य छात्र-छात्राएँ पढ़ाई के साथ-साथ रोजगार व स्वरोजगार संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करना था। वर्तमान में योजना का स्वरूप विस्तृत हो गया है।

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक महाविद्यालय से रोजगार व स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं, तत्पश्चात् संभाग व जिला स्तर पर स्थित महाविद्यालयों को प्रशिक्षण हेतु निर्देशित किया जाता है।

साथ ही जिले के अग्रणी महाविद्यालय को कैरियर मेला/रोजगार मेला आयोजित करने हेतु निर्देशित किया जाता है। वर्तमान में राज्य स्तर पर प्रशासन अकादमी भोपाल द्वारा विद्यार्थियों को ऑनलाईन प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है साथ ही महाविद्यालय में कार्यरत सभी प्राध्यापकों को भी ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जाता है।

महाविद्यालय इकाई द्वारा विगत कई वर्षो में बहुत ही महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं जैसे-बैग बनाने का प्रशिक्षण, ब्यूटी पॉर्लर पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण,कम्प्यूटर शिक्षा पर 25 दिवसीय प्रशिक्षण इत्यादि इसके अतिरिक्त छात्राओं को समय-समय पर रोजगार व स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण। मार्गदर्शन विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किये जाते हैं। निश्चित रूप से छात्राओं को कैरियर निर्माण हेतु महत्वपूर्ण प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा आयोजित किये जा रहे हैं।

मन

डॉ.राजेश पौराणिक
अतिथि विद्वान गणित-विभाग

हमारे जीवन में वैसे तो मन, बुद्धि, चित्त,अहंकार का प्रभाव पड़ता है। हमारे जीवन पर सबसे ज्यादा प्रभाव मन का पड़ता है। हमारे मन में तरह तरह के संकल्प विकल्प आते हैं यही मन का स्वरूप है। हमारा मन जिस इंद्री के साथ होता है, वह इंद्री क्रियाशील हो जाती है। मन का स्वस्थ होना अति आवश्यक है,आज शरीर को स्वस्थ रखने के लिये जगह-जगह औषधालय है। परंतु मनोरोगी के लिये औषधालय नहीं है। मनोरोगी की यह विशेषता है कि यदि कोई दोष/कमी मनोरोगी के जीवन में है तो वह दोष उसे दूसरे के जीवन में दिखने लगता है यदि कोई दोष हमें दूसरे के जीवन में दिख रहा है तो समझ लें कि वह दोष हमारे जीवन में, हमारे मन में आ गया है।

अब प्रश्न उठता है कि यह रोग कैसे ठीक हो? जब आप महान का चिंतन करते हैं तो आपका मन महान बन जाता है,मन को स्वस्थ रखने के लिये स्वस्थ विचारों की आवश्यकता पड़ती है।

यदि आप चाहते हैं कि आपके हृदय में, आपके घर में,आपके व्यवहार में,आपके मानस में,आपकी क्रियाओं में आनंद का अवतरण हो तो आपको एक काम करना होगा ..... अपने मन को महान बनाना होगा। वैसे भी कहा गया है कि मन चंगा तो कटौती में गंगा।।

प्रकृति संदेश

डॉ. हरनाम सिंह राय
(वाणिज्य-विभाग)

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता लहराकर,
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती हैं
उठ-उठ गिर गिर तरल तरंग
भर लो भर लो अपने दिल में
मीठी मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोडो
कितना ही हो सिर पर भार
नभ कहता है फेलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार
मत चलाओ शस्त्र वृक्ष पर
मानो यह ईश्वर का अनुदान है।
इन पेड़ों से भूजल स्तर भी बढ़ेगा
समस्त जीवन हेतु ये वरदान है।

ज्ञान का दीप

श्री रामलाल शर्मा

मानवता के मन मन्दिर में ज्ञान का दीप
जला दो करुणा निधान भगवान मेरे
भारत को स्वर्ग बना दो।
दु:ख दरिद्रता का नाश करो मानव के
कष्ट मिटा दो अमृत की वर्षा
कर भूख की आग मिटा दो खेतों में
हरियाली भर दो धान का ढेर लगा दो।
करूणा निधान भगवान मेरे भारत को
स्वर्ग बना दो
मानवता के मन मन्दिर में ज्ञान का
दीप जला दो
नव प्रभात फिर महक उठे मेरे भारत
की फुलवारी सब हो एक समान जागृत
में कोई न रहे भिखारी एक बार माँ
वसुन्धरा का नव श्रृंगार करा दो
मानवता के मन मन्दिर में ज्ञान का दीप
जला दो करूणा निधान भगवान मेरे
भारत को स्वर्ग बना दो।

संकल्प

श्री हरीश दुबे

फूल बिछे हों या कांटे हों
राह न अपनी छोड़ो तुम।
चाहे जो विपदायें आयें,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।
साथ रहें या रहे न साथी
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नहीं कृपा की भिक्षा मांगो,
कर न दीन बन जोड़ो तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा
पाठ प्रेम का पढ़े चलो
जब तक जान बनी हो तन में
तब तक आगे बढ़े चलो।

माँ

श्रीमती सोमी सिंह

सुबह कि डाट से शुरू,
तो शाम के दूध के गिलास तक।
बिखरते हुए सपने से,
मेरी हर जुड़ी आस तक।
मेरी साईड वाली मांग,
और फिर काजल का टीका लगाती है।
एक नजर ऊतारी और सब बलाओ को भगाती है।
त्यौहार के नए कपड़े हो,या मोहल्ले के झगड़े,
पपा कि मार हो या जिन्दगी में हार हो,
बाहर रह कर पता चला,
घर के खाने में कितना स्वाद है।
यकीन मानो माँ का कोई दिन नहीं होता,
माँ से हर दिन होता है।

आगे बढ़ो

डॉ.शिरीन खान
अतिथि विद्वान केमिस्ट्री

तुम संग संग चलो
आओ अब आगे बढ़ो
बहुत हुआ बलिदान
बहुत हुआ अपमान
अब तुम जिद पर अड़ो
आओ अब आगे बढ़ो।

अबला नही सबला नहीं, नही तुम बेचारी
अपनी पहचान बस रखो तुम नारी।
क्यो शर्मिंदा हो, क्यों है ये डर
अपने हिस्से के प्रेम की, अपने हिस्से के मान की
हो तुम ही अधिकारी, बहुत हुआ
आओ अब आगे बढ़ो।

हाँ तुम सहनशक्ति की मिसाल हो
बता तो सब को तुम हर, क्षेत्र में कमाल हो
फिर क्यों डरना, रात में निकलने से
फिर क्यों डरना अकेले चलने में।
बस बहुत हुआ अपने पथ को स्वयं चुनो
बड़ों आगे सुंदर भविष्य के सपने बुनो।
आओ अब आगे बढ़ो, लतो तुम संग संग चलो।

खुद में खुद ही काफी हूँ

अंकिता दुबे

क्यूं खुद ये ही हर बार सवाल उठाती हूँ ?
हूँ ये जानती मैं कि खुद में खुद ही काफी हूँ।
संभाल लेती हूँ अक्सर खुद को फिर भी,
ना संभाल सकती तो कभी?

इस बात से डर सी जाती हूँ लेकिन
हूँ ये जानती में कि खुद में खुद ही काफी हूँ।
ना है शिकायत किसी से, ना ही है उम्मीद
अपना लेती हूँ, वो भी जो ना आए दिल को रास

रहम ना डर ना ना ही है ये कमजोरी मेरी
क्यूं की हूँ ये जानती में कि, खुद में खुद ही काफी हूँ
हौसला है देता ये मन मेरा समझाता मुझको रहता है
ये यकीन मुझको तुझपे संभालना तुझे आता है

अरे गिर जाओगी तो क्या हुआ?
उठकर चलना तुझको आता है,
तू इस बात से वाकिफ तो है,
तू खुद में खुद ही काफी है।

जिन्दगी

डॉ. पूजा जैन
सहा.प्राध्यापक रसायन शास्त्र

सिर्फ जिन्दगी न गुजारो – जीओ।
सिर्फ छुओ नहीं – महसूस करो।
सिर्फ देखो नहीं – गौर करो।
सिर्फ पढ़ो नहीं – जीवन में उतारो।

सिर्फ सुनो नहीं – ध्यान से सुनो।
सिर्फ ध्यान से नहीं सुनो – समझो।
सदा मुस्कुराना और सबको प्यार करना
गुणीजनों का सम्मान पाना

बच्चों के दिल में रहना
सच्चे आलोचकों से स्वीकृति पाना
झूठे दोस्तों की दगाबाजी सहना
खूबसूरती को सराहना

दूसरों में खूबियां तलाशना
किसी उम्मीद के बिना
दूसरे के लिये खुद को अर्पित करना
उत्साह के साथ हँसना और खेलना

और मस्ती भरे तराने गाना
इस बात की एहसास कि
आपकी जिन्दगी ने किसी एक व्यक्ति का
जीवन आसान बनाया

यही सच्ची सफलता है।

पर्यावरण

रिंकी लोधी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष केमिस्ट्री

1. हमारे चारों ओर का वातावरण पर्यावरण कहलाता है पर्यावरण सभी प्रकारों से मिलकर बना है।
2. पर्यावरण जैविक एवं अजैविक घटकों से मिलकर बना है।
3. नदी, तालाब, भूमि, वायु, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी आदि प्राकृतिक पर्यावरण के उदाहरण हैं।
4. पर्यावरण हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
5. सभी मानवीय गतिविधियाँ बड़े स्तर पर पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं।
6. सभी जीवों के जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना आवयक है।
7. विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है, पेड़ पौधों को सुरक्षित रखना हमारा काम है।

किताबों की दुनिया

अंशिका ठाकुर

कुछ किताबों में कांटे होते हैं
जिन्हें खोलते ही कांटे
आंखों में चुभ जाते हैं
कुछ किताबों में फूल होते हैं
जिन्हें खोलते ही
दिल में समा जाते हैं
अच्छी किताब
फूलों की किताब होती है
जिसके हर बरके पर
मुहब्बत की गंध होती है
एक सोचती किताब
अर्थ की तलाश में तथ्य को निचोड़ती
अक्षरों के मेल में शब्दों को जोड़ती।
वजूद की तलाश में खुद
को खोजती
समय की प्रवाह में क्या
सतत् और क्या अनित्य

अध्यापक

पूजा विश्वकर्मा
बी.एच.सी द्वितीय

अंधेरे आकाश को टिमटिमाते तारो से भर देता है
ताला खोलने के लिए एक चाबी की तरह
काम करता है।
उज्ज्वल और बोद्धिक दुनिया
एक ऋषि जो ज्ञान और ज्ञान
प्रदान करते हैं।
मानवता की प्रतिमूर्ति
देश की सेवा
दुनिया की देखभाल।
वास्तव में मनुष्य का कर्तव्य निभाना है
देश के भविष्य का निर्माण,
मूल्यों के साथ उनका पोषण करना।
हर सफल व्यक्ति के पीछे,
उनका प्रयास और महानता निहित है।
उनके बिना दुनिया बेहतर जंगल है।।

जब भारत आजाद हुआ था

काजल सेन
एम.एच.एस.सी.तृतीय सेमेस्टर

जब भारत आजाद हुआ था
आजादी का राज हुआ था
वीरो ने कुरवानी दी थी
तब भारत आजाद हुआ था
भगत सिंह ने फाँसी ली थी
इस मिट्टी की खुशबू ऐसी थी
तब खून की आँधी बहती थी
वतन का जज्बा ऐसा था
जो सबसे लड़ता जा रहा था
लड़ते-लड़ते जाने गयी थी
जब भारत आजाद हुआ था
फिरंगियों ने ये वतन छोड़ा था
इस देश के रिश्तों को तोड़ा था
फिर देश दो भागों में बंटा था
एक हिस्सा हिन्दुस्तान था
दूसरा पाकिस्तान कहलाता था
सरहद नाम की रेखा खीची थी
जिसे कोई पार ना कर पाया था
ना जाने कितनी माँयें रोंई थीं
ना जाने कितने बच्चे भूखे सोये थे
हम सब ने साथ रहकर
एक ऐसा समय भी काटा था
वीरो ने कुरवानी दी थी
तब भारत आजाद हुआ था

कैसे अदा करेंगे

मोहनी जैन
एम.ए.तृतीय सेमेस्टर

कैसे अदा करेंगे,
उपकार हम तुम्हारे?
हम तो बने सितारे,
गुरू! आपके सहारे
तन को रचा संवारा,
माता पिता ने मेरे
जीवन संवारा तुमने,
भर ज्ञान उर में मेरे
कैसे अदा करेंगे,
तुम से मिला है सब कुछ
तुमको क्या भेंट दूँ मैं,
सूरज के आगे जुगनू
की बात क्या करूं मैं,
कैसे अदा करेंगे........
जीवन सजाने वाले,
बस इतनी आरजू है
नजरें ना मोड़ लेना,
दर से कभी हमारे
कैसे अदा करेंगे......

देश भक्ति कविता

मुस्कान खान
एम.ए.तृतीय सेमे.

तीन रंग का नहीं वस्त्र
ये ध्वज की शान अभिमान,
यही है गंगा, यही है हिमालय
यही हिन्द की जान और शान।
और तीन रंगों में रंगा हुआ खूबसूरत तिरंगा,
यही है भारत, हिन्दुस्तान।
सारे विश्व में सबसे सुन्दर देश
हमारा, भारत देश महान।
मिलकर रहते सब यहां पर,
जाति-पात का भेद नहीं,
ऐसे विचारों वाला भारत देश हमारा।
हम सब मर मिट जाएँ तिरंगे की शान में
लेकिन भारत पर आंच न आने देंगे,
ऐसे वीर,भारत के हमारे।
सारे जहां जग से सुंदर देश हमारा,
ऐसा भारत देश महान हमारा।
इज्जत दी है, जो तुम्हें
उसे दिल से न मिटाओ,
ये वतन है, हिन्दुस्तान हमारा।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई का,
हम करते है, सम्मान यहां।
ऐसी भाईचारी, हिन्दुस्तान हमारा।
ये वतन है, हिन्दुस्तान हमारा,
इसमें वसती जान सबकी
हमें आपस में न लड़ाओ,
मिलकर रहना यहां पर सबको,
ऐसा भारत देश हमारा।
लहू बहाकर, शहीदों ने अपना
इस मिट्टी देश की शान बढ़ाई,
ऐसे वीर शहीद जवान हमारे,
ऐसा भारत देश हमारा।
तिरंगे के रंगों को न बांटो,
मिलकर सब शान बढ़ाओ
तिरंगा कभी भी झुक न पाऐ,
ऐसा भारत देश हमारा।

संभाग स्तरीय हॉकी टीम से
परिचय प्राप्त करते हुये प्राचार्य

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर बधाई नृत्य
प्रस्तुत करती छात्राऐं

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर विजयी छात्राओं के साथ प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण

महाविद्यालय में आत्म रक्षा शिविर के दौरान
प्रशिक्षण पार्ती छात्रायें

महाविद्यालय में आयोजित इंडक्शन प्रोग्राम में
प्राचार्य एवं प्राध्यापक गण

भूगोल विभाग की छात्राओं के साथ शैक्षणिक भ्रमण में प्राचार्य एवं स्टाफ

महाविद्यालय में आयोजित युवा उत्सव में प्राचार्य एवं स्टाफ

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगा रैली का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में स्वाधीनता संग्राम की वीरांगनाओं की भूमिका में छात्राऐं

रेड रिबिन क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा
पौधा रोपण कार्यक्रम में प्राचार्य एवं स्टॉफ

विश्व एड्स दिवस पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता
की विजयी छात्राओं के साथ प्राचार्य एवं स्टॉफ

योग दिवस पर महाविद्यालय में योग कार्यक्रम

समाज शास्त्र द्वारा आयोजित सामाजिक जागरूकता
रैली में प्राचार्य एवं स्टॉफ

आजादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत
साईकिल रैली का आयोजन

फिजिक्स विभाग में डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम
आजाद की जयंती का आयोजन

युवा उत्सव में आयोजित
रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा ग्राम हिरदेपुर में
सामाजिक जागरूकता रैली का आयोजन

हिन्दी विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण
शास.महाकौशल महा.जबलपुर

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत दमयंती संग्रहालय
का अवलोकन करतीं छात्राऐं एवं प्राध्यापक

नशा मुक्ति अभियान की शपथ लेती छात्राऐं

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा
आयोजित रोजगार प्रशिक्षण

महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राऐं

आस्था जैन
वॉटनी में वि.वि.प्रथम

निधि रैकवार
बी.सी.ए.में वि.वि.प्रथम

आस्था जैन
फिजिक्स में वि.वि.प्रथम

नेहा रैकवार
केमिस्ट्री में महावि.में प्रथम

कीर्ति पटैल
भूगोल में महा.में प्रथम

श्रृद्धा कुर्मी
एम.ए.अर्थ.में महा.मे.प्रथम

सीमा यादव
एम.ए.हिन्दी में महा.मे.प्रथम

प्रतिभा बंसल
रा.से.यो.में राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण

राजुल यादव
अंतर वि.वि.फुटबाल

भारतीय तिवारी
वि.वि.फुटबाल

सुमन पटैल
वि.वि.फुटबाल

प्रिया साहू
वि.वि.खो-खो

समाचार पत्रों की नजर में हमारा महाविद्यालय

भाषा उत्सव का हुआ आयोजन

दैनिक जयसंवाद, दमोह, संवाददाता।

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में भारतीय भाषा दिवस के उपलक्ष्य में भाषा उत्सव का आयोजन उच्च शिक्षा विभाग के आदेश के परिपालन में तथा प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी के मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने कहा भाषा के प्रति निरंतर सीखने की इच्छा बनाए रखना जरूरी है। इसी के साथ भाषा शिक्षण जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ पी एल जैन ने संबोधित करते हुए उपस्थित छात्राओं को हिंदी के साथ अन्य भाषाओं को भी सीखने के लिए प्रेरित किया। डॉ असलम खान ने भाषाओं को सांस्कृतिक सेतु बताते हुए भारतीय भाषाओं की खूबसूरती पर प्रकाश डाला। डॉ अवधेश जैन ने कहा कि भाषा उत्सव का उद्देश्य यह प्रदर्शित करता है कि केवल भारतीय भाषाएं ही नहीं विश्व की सभी भाषाएं समान रूप से महत्वपूर्ण है। श्री पंकज जैन ने वाल्मीकि की रामायण का उल्लेख करते हुए बताया कि रामायण का अनुवाद सबसे पहले असमिया भाषा में हुआ फिर कवि कंबन ने तमिल में और तुलसीदास जी ने अवधी भाषा में किया था हमें सारी भाषाएं सीखना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में डॉ अरुणा एम जैन डॉ बृजेंद्र कुसमरिया, डॉ अपर्णा गोस्वामी कुमारी आरती विश्वकर्मा सहित बड़ी संख्या में छात्राओं की उपस्थिति रही।

छात्राओं ने गोदग्राम हिरदेपुर में जागरुकता रैली निकाली

दमोह। हिरदेपुर गांव में जागरुकता रैली निकालती छात्र- छात्राएं।

भास्कर संवाददाता | दमोह

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने शासन की योजनानुसार गोद लिए गए ग्राम हिरदेपुर में जागरुकता रैली निकाली। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी के मार्गदर्शन तथा प्रभारी डॉ. अरुणा एम जैन, प्राध्यापक के निर्देशन में सामाजिक जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। गांव के विभिन्न मार्गों से भ्रमण करते हुए रैली में शामिल छात्राओं ने बेटी … पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ, केएन कॉलेज की छात्राएं आई हैं, स्वच्छता का संदेश लाई हैं जैसे नारे लगाए। ग्रामवासियों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा के महत्व जैसे मुद्दों पर जागरुक किया। रैली में हिरदेपुर पंचायत की सरपंच दीपशिखा खटीक, पंचायत सचिव अरुण जैन शामिल हुए। साथ ही डॉ. पीएल जैन, डॉ. असलम खान, डॉ. अपर्णा गोस्वामी, डॉ. प्रणव मिश्रा, डॉ. आराधना श्रीवास, पंकज जैन, प्रिया थापा सहित बड़ी संख्या में छात्राएं तथा ग्रामवासी शामिल हुए।

केएन कॉलेज में नशामुक्ति पर व्याख्यान एवं लघु फिल्म प्रदर्शन

दैनिक जयसंवाद, दमोह।

[illegible]

केएन कॉलेज में हुई प्रतियोगिता, छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी

भास्कर संवाददाता | दमोह

दमोह | केएन कॉलेज में मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर प्रस्तुति देती छात्राएं।

शासकीय केएन कॉलेज में मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी के मार्गदर्शन एवं डॉ. आलोक सोनवलकर के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम हुआ। जिसमें सर्वप्रथम मध्यप्रदेश के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में 6 टीमों ने भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान हिमानी सोनी, प्रियल साहू की टीम ने द्वितीय स्थान शिवानी शुक्ला, तृतीय स्थान नैंसी पांडे ने प्राप्त किया। बुंदेली नाटक अनपढ़ किसान में छात्राओं ने नाटक बुंदेली भाषा में प्रस्तुत किया। जिसमें साक्षी पटेल, अंशिका ठाकुर, रक्षा निगम, सृष्टि पटेल, सोहिला फातिमा, नेहा ठाकुर रहीं। बुंदेली व्यंग्य बुंदेली शादी पर आधारित एक लोक नाटक की प्रस्तुति हुई। जिसमें विवेचना सोनी, करुणा तिवारी, शिवानी विश्वकर्मा, प्रगति पाठक, नीरज कुमार, अनीता विश्वकर्मा, रानू और सिमहिम असाटी रहीं। बुंदेली लोक नृत्य में करुणा तिवारी, अर्चना अहिरवाल, रोशनी लोधी ने प्रस्तुति दी। अंजलि विश्वकर्मा, साक्षी चक्रवर्ती, शची राजपूत, मालती अहिरवार ने बधाई नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अवधेश जैन ने किया। इस अवसर पर डॉ. डीके नेमा, डॉ. पीएल जैन, डॉ. के उमाहिया, डॉ. एन पी नायक, डॉ. रेखा जैन, डॉ. अरुणा एम जैन, असलम खान, बृजेश मौर्य सहित छात्राओं की उपस्थिति रही।

सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत ली शपथ

दैनिक जयसंवाद, दमोह, नप्र।

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में आज दिनांक 9 /12 /22को नई दुनिया दैनिक जागरण समूह द्वारा देश भर में हो रहे सड़क हादसों को रोकने के उद्देश्य से देशव्यापी सड़क सुरक्षा अभियान के समापन पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी ने छात्राओं प्राध्यापकों एवं सभी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा हमें सभी नियमों का दृढ़ता पूर्वक पालन करना चाहिए डॉअवधेश जैन ने बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के लिए ट्रैफिक नियमों का पालन न करना बताया।उन्होंने हेलमेट का उपयोग करना जरूरी बताया।अंत में प्राचार्य जी ने सभी को शपथ दिलाई की सड़क पर वाहन चलाने से पहले सभी सुरक्षा संबंधी बातों का ध्यान रखूंगा ।यातायात नियमों का हमेशा खुद और अपने परिजनों से पालन करवाऊंगा।दो पहिया वाहन चलाते समय हमेशा हेलमेट पहनूंगा।कार चलाते समय हमेशा सीट बेल्ट लगाऊंगा।कभी भी शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाऊंगा ।वाहन चलाते समय कभी भी मोबाइल फोन पर बात नहीं करूंगा ।मैं हमेशा एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड गाड़ियों को पहले जाने के लिए रास्ता दूंगा ।सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहूंगा। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक अधिकारी कर्मचारी व छात्राएं उपस्थित रहे और उन्होंने यह शपथ ली ।

छात्राओं को गणित के सूत्रों को सिद्ध करने की प्रक्रिया को समझाया

केएन कॉलेज में गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती पर हुआ व्याख्यान

भास्कर संवाददाता | दमोह

सागर | केएन कॉलेज में गणित विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती मनाई गई। इस मौके पर वर्तमान परिदृश्य में गणित विषय की भूमिका पर एक व्याख्यान का आयोजन प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी के मार्गदर्शन तथा प्रभारी डॉ. पीएल जैन के निर्देशन में हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ प्राचार्य के आशीर्वचन से हुआ। मुख्य व्याख्याता शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय सागर से पधारे गणित के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अरविंद्र कुमार बोहरे ने गणित के निरंतर अभ्यास, गणितीय प्रमेयों को दैनिक जीवन के उदाहरणों से जोड़ते हुए गणित के सूत्रों को रटने के स्थान पर उन्हें सिद्ध करने की प्रक्रिया को समझाया। भौतिकी विभागाध्यक्ष डॉ. पीएल जैन ने गणित तथा भौतिकी के संबंध पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. डीके नेमा ने वाणिज्य विषय में गणित की महत्ता बताते हुए गणित को बहुआयामी विषय निरूपित किया। महाविद्यालय के गणित विभाग में पदस्थ तथा कार्यक्रम संयोजक डॉ. राकेश पौराणिक ने गणित को शून्य से अनंत तक की यात्रा बताते हुए इसे वर्तमान जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करने वाला बताया। सह संयोजक डॉ. असलम खान ने गणित तथा सांख्यिकी को आर्थिक विकास तथा अर्थव्यवस्था की मूलभूत कड़ी के रूप में व्याख्यायित किया। सह समन्वयक डॉ. ब्रजेंद्र कुसमरिया ने गणित तथा रसायन शास्त्र के पारस्परिक संबंधों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर बीएससी की छात्राओं द्वारा बनाए गए पोस्टर का प्रदर्शन भी किया गया। मंच संचालन हिंदी विभाग में पदस्थ पंकज जैन तथा बीएससी की छात्रा दिशा यादव एवं खुशी दुबे ने किया।

क्रांतिसूर्य बिरसा मुंडा की जयंती का हुआ आयोजन

दैनिक जयसंवाद, दमोह।

क्रांतिसूर्य बिरसा मुंडा की जयंती का आयोजन शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में आज दिनांक 15 नवंबर को महान क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जयंती का आयोजन प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी के मार्गदर्शन डॉक्टर पी एल जैन के निर्देशन एवं मुख्य अतिथि डॉ प्रेमलता नीलम सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं डॉ किरण दुबे के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ सर्वप्रथम कार्यक्रम संयोजक डॉ अरुणा एम जैन ने महानायक बिरसा मुंडा के जीवन परिचय पर विस्तृत चर्चा की ।डॉ प्रेमलता नीलम ने भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा जी के योगदान, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आदिवासी समाज की दिशा और दशा बदलने का कार्य किया था।डॉ असलम खान ने बिरसा मुंडा जी को महान देशभक्त बताते हुए उन्हें सामाजिक जागरण का एकलव्य माना।डॉ किरण दुबे ने उन्हें एक ऐसा देशभक्त बताया जिसने अंधविश्वास और पाखंड को दूर करने के लिए जन जागरण का कार्य किया ।इसी क्रम में छात्रा कुमारी अंजनी प्रजापति ने बिरसा मुंडा के द्वारा आदिवासी समाज को अंधविश्वास से दूर करते हुए शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया ।कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ अवधेश जैन ने किया ।इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक सहायक प्राध्यापक अधिकारी कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

आयोजन... सभी भाषाएं समान रूप से महत्वपूर्ण हैं: डॉ. अवधेश जैन

दमोह | शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में भारतीय भाषा दिवस के उपलक्ष्य में भाषा उत्सव का आयोजन प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी के मार्गदर्शन में किया गया। प्राचार्य ने कहा भाषा के प्रति निरंतर सीखने की इच्छा बनाए रखना जरूरी है। इसी के साथ भाषा शिक्षण जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ पीएल जैन ने संबोधित करते हुए छात्राओं को हिंदी के साथ अन्य भाषाओं को भी सीखने के लिए प्रेरित किया। डॉ असलम खान ने भाषाओं को सांस्कृतिक सेतु बताते हुए भारतीय भाषाओं की खूबसूरती पर प्रकाश डाला। डॉ. अवधेश जैन ने कहा कि भाषा उत्सव का उद्देश्य यह प्रदर्शित करता है कि केवल भारतीय भाषाएं ही नहीं विश्व की सभी भाषाएं समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। पंकज जैन ने बाल्मीकि की रामायण का उल्लेख करते हुए बताया कि रामायण का अनुवाद सबसे पहले असमिया भाषा में हुआ फिर कवि कंचन ने तमिल में और तुलसीदास जी ने अवधी भाषा में किया था हमें सारी भाषाएं सीखना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में डॉ अरुणा एम जैन, डॉ बृजेंद्र कुसमरिया, डॉ. अर्पणा गोस्वामी, आरती विश्वकर्मा सहित बड़ी संख्या में छात्राओं की उपस्थिति रही।

चित्रकला एवं रंगोली प्रतियोगिता आयोजित

नवभारत,दमोह. शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत जिला स्तरीय चित्रकला,पोस्टर निर्माण और रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में रचनात्मकता को बढ़ाने में सहयोगी होती हैं,मुख्य अतिथि पत्रकार संजय सरवरिया ने आजादी के आन्दोलन में शहीद वीर स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को स्मरण किया. कार्यक्रम संयोजक डॉ.अवधेश जैन ने संचालन करते हुए जिले के समस्त महाविद्यालयों के प्रतियोगियों को शुभकामनाएं दीं और राष्ट्रीय नायकों के साथ स्थानीय स्वाधीनता संग्राम सेनानियों को भी जानने के लिए प्रेरित किया. प्रतियोगिता प्रभारी डॉ मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव और डॉ मालती नायक ने प्रतियोगियों को नियमों से अवगत कराया. स्वतंत्र भारत एवं राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न थीम पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम- पूजा अहिरवार ओजस्विनी उत्कृष्टता संस्थान दमोह द्वितीय- महिमा सोनी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह तृतीय - महिमा विश्वकर्मा शासकीय महाविद्यालय जबेरा एवं सीमा गौड़ डॉ विजय लाल स्मृति महाविद्यालय दमोह ने संयुक्त रूप से प्राप्त किया. एक भारत श्रेष्ठ भारत विषय पर आधारित पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में प्रथम दीपिका अग्रवाल डॉ विजय लाल स्मृति महाविद्यालय दमोह द्वितीय स्थान- अनीता लोहार शासकीय महाविद्यालय पथरिया, तृतीय स्थान- फिरदौस बानो शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह एवं आरती राठौर ओजस्विनी उत्कृष्टता संस्थान दमोह मध्य प्रदेश में संयुक्त रूप से प्राप्त किया. इसके साथ ही भारत की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर थीम पर केन्द्रित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान- स्मृति खरे विजय लाल स्मृति महाविद्यालय दमोह द्वितीय स्थान- हेमश्री अहिरवार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह तृतीय स्थान- कामिनी खिरा शासकीय महाविद्यालय हटा एवं कविता सुमन ओजस्विनी कॉलेज दमोह ने संयुक्त रूप से प्राप्त किया. कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित अतिथिगण डॉ किरण दुबे,डॉ शोभा भेलसेवाले, डॉ रश्मि जैन, मानव बजाज, अनुराग जैन के साथ ही जिले के सभी महाविद्यालयों के प्राध्यापक तथा कार्यक्रम

महाविद्यालय में प्रतियोगिताओं का आयोजन

नवभारत,दमोह. शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में दिनांक 13 अक्टूबर एवं 14 अक्टूबर 2022 को युवा उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। युवा उत्सव के अंतर्गत स्पॉट पेंटिंग, पोस्टर निर्माण ,कार्टूनिंग, वाद-विवाद, वक्तृता, प्रश्न मंच, एकांकी, मूक अभिनय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें पोस्टर निर्माण प्रथम स्थान प्रिया बिल्थरे, द्वितीय स्थान हिमांशी सोनी, तृतीय स्थान श्रेया सोनी, स्पॉट पेंटिंग में प्रथम स्थान बृजनंदिनी पटेल, द्वितीय स्थान दीपा पटेल, तृतीय स्थान साधना राज, कार्टूनिंग में प्रथम स्थान रागिनी पटेल, वाद विवाद पक्ष में प्रथम स्थान शिवानी पटेल, द्वितीय स्थान सिद्धि जैन, वाद विवाद के विपक्ष में प्रथम स्थान रिद्धि जैन, द्वितीय स्थान पलक जैन, वृक्तता में प्रथम स्थान अंजनी प्रजापति, द्वितीय स्थान शिवानी पटेल, तृतीय स्थान रिद्धि जैन, प्रश्न मंच में प्रथम स्थान हिमांशी सोनी, कविता चक्रवर्ती एवं अंजनी प्रजापति, द्वितीय स्थान काजल अग्रवाल, सिद्धि जैन, नीति पाठक एवं तृतीय स्थान नैंसी जैन, शिवानी शुक्ला, दिशा यादव, एकांकी में प्रथम स्थान श्रद्धा तिवारी, अंशिका ठाकुर स्वलेहा फातिमा, रक्षा निगम, राबिया फातिमा, सृष्टि पटेल, साक्षी पटेल कास्थान रहा। द्वितीय दिवस 14/10/22 को रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नेहा ठाकुर, समूह नृत्य में प्रतिभा बंसल, काजल सेन ,चंचल ठाकुर, साक्षी ठाकुर, दीपिका सेन ने प्रथम स्थान, एकल नृत्य में पल्लवी गुप्ता ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य डॉ. जी.पी. चौधरी की अध्यक्षता में एवं समस्त सहयोग समिति संयोजक एवं सदस्य के सहयोग से संपन्न हुआ। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. पी. एल. जैन, डॉ. डी.के. नेमा, डॉ. अवधेश जैन, डॉ. एन. पी. नायक, डॉ. अरुणा एम. जैन, डॉ. मुदिता पी. श्रीवास्तव, डॉ. मालती नायक, डॉ. के. के. उमाहिया, डॉ. तुलसीराम दहायत की उपस्थिति रही। विशेष सहयोग समिति सदस्य डॉ. आराधना श्रीवास एवं श्रीमती जया अहिरवार का रहा। अंत में युवा उत्सव प्रभारी डॉ. रेखा जैन ने सभी के सहयोग के लिए आभार दिया।

हिन्दी का गौरव विषय पर हुई संगोष्ठी

दैनिक जयसंवाद, दमोह।

[illegible]

कॅरिअर मार्गदर्शन...छात्राओं को रोजगार-स्वरोजगार के संबंध में जागरूक किया

दमोह | शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में स्वामी विवेकानंद कॅरिअर मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत उद्यमिता विकास केंद्र सेडमैप द्वारा छात्राओं के लिए रोजगार व स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनभागीदारी समिति अध्यक्ष चंद्रभान पटेल, विशिष्ट अतिथि कोषाध्यक्ष भाजपा सुरेश पटेल, पीएन तिवारी, राजेंद्र परमार रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी ने की। कार्यक्रम संयोजक डॉ. नायक ने बताया कार्यक्रम में छात्राओं को रोजगार व स्वरोजगार के संबंध में जागरूक किया गया। इस मौके पर रेखा जैन, राकेश जैन, जयश्री, पंकज जैन, अनुभा तिवारी एवं छात्राओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम पीएन तिवारी के सौजन्य से आयोजित किया गया।

प्रथम ममता, दूसरा कल्लो व तीसरे स्थान पर रेखा

आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान प्रतियोगिता का आयोजन

भास्कर संवाददाता | दमोह

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत कविता लेखन, गीत गायन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. जीपी चौधरी ने छात्राओं को संबोधित किया। डॉ. अवधेश जैन ने अमृत काल पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. रेखा जैन ने प्रतियोगिता के नियमों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन ममता संघी ने किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ममता पटेल बीएससी द्वितीय वर्ष, द्वितीय स्थान कल्लो लोधी बीए प्रथम वर्ष, तृतीय स्थान रेखा लोधी बीए प्रथम वर्ष में प्राप्त किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. डीके नेमा, डॉ. मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव, डॉ. मालती नायक, डॉ. आराधना श्रीवास, जया अहिरवार, डॉ. ब्रजेन्द्र कुसमरिया, सुरेखा बड़ोले, प्रणव मिश्रा, अनुभा तिवारी, प्रिया थापा, शिखा यादव, अंकिता दुबे, डॉ. दिनेश पटेल एवं समिति सदस्य प्रीति वर्मा, प्रिया तिवारी, डॉ. असलम खान, पंकज जैन उपस्थित रहे।

दो कवितायें

गोमती सेन
एम.ए.प्रथम सेमेस्टर हिन्दी

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था......
चाहत चांद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था......
खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था......
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था......
माँ की कहानी थी,
परियों का फँसाना था......
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था......
हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था......
गम की जुबान ना होती थी,
ना जख्मों का पैमाना था......
रोने की वजह ना थी,
ना हंसने का बहाना था......
क्यूं हो गये हम इतने बड़े,
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था......

कालेज लाइफ

सब यारो के याराने दिल को फिर याद आये,
वह बीते पुराने लम्हे फिर याद आये......
वह पहला दिन वह पहली सी बातें,
आज वह दोस्त सब बिछड़े तो लम्हे याद आये......
देखा था जिन्हें कभी, अजनबी सा हमने,
आज वही खास इतने की किसी को क्या बतायें......
वो यारो की महफिल,वो किताबों के ढेर,
वो रातों की रतजगे वो क्लास रूम में सब ढेर......
देखा आज उस क्लास रूम की तरफ
तो वह दोस्त मुस्कुराते बड़े याद आये......
अब यही कुछ दिन है कुछ दिन की सोहवत
बिछड़ेंगे सब ऐसे ही, हर मुस्कान पर याद आये......
कोई इस शहर कोई उस शहर, कोई इस गली,
कोई उस गली, निकालेंगे जब इस राह से,
वो राहगीर याद आये......
दिल टूटा यह सोचकर,
कितनों को आखरी आखरी दफा देखेंगे,
वह बात दिल पे छुपी के
जहाकाम आर-पार दिखाई आये......
हुए गले मिलकर जुदा किया वादा
अब रहेंगे हमेशा यहां
आंखें नाम हुई तो चुप करते नजर आये......
यही तो जिन्दगी है तो आगे बड़ी अपने मुकाम से
शुरुवात है अभी न जाने आगे कितनों के जमाने आये......

शिक्षक

विशाखा लोधी
एम.ए.तृतीय सेमेस्टर

वो अपने ज्ञान की ज्योति से
घर-घर ज्ञान का दीप जलाते हैं
जे बच्चा को पाठ पढ़ाते हैं
वो राष्ट्र निर्माता कहलाते हैं

कभी डांट कर कभी प्यार से
बच्चों की गलती उन्हें बताते हैं
जो बच्चों को अनुशासन सिखाते हैं
वो एक अच्छे शिक्षक कहलाते हैं

अज्ञानता के काले बादल हटाकर
बच्चों में ज्ञान की रोशनी फैलाते हैं
जो सदैव सत्य मार्ग पर चलना सिखाते हैं
वो ही असली पथ दर्शक कहलाते हैं

BOOKS

Kamini Shukla
Class-B.A.IInd Year

Books, books are not only written pages binded in a cover, they are not only non-living records that contains index, prefaces and some chapters, they are not only coloured pages that can make you laugh, neither only those textbooks that helps us to pass the exams nor they are only those mountains which are sometimes hardest to climb... Yes, it is true, books are not only those decorative items that enhances the beauty of your showcase and book stands, they are not only humps of every school going child. Yes, books are not only like those frequent arriving guests for collage students and neither they are those objects which are more important than oxygen ofr JEE, NEET UPSC and other competitive exam's aspirants...

Actually books are feelings, they are emotions that acts as a bridge that joins our heart and brain or I can say books joins our feelings to our thought processes. A book in itself is a complete man. Books are having their own prestige and dignity which is sometimes very hard for us to understand. All the glorious things that we know about our past are told us by our books and only our books will tell our future generation about this time, besides these logical reasons to understand the importance of books there is a very strong emotion which is there between a true reader and a book, a book without prossessing any force of attraction in them physically keeps the reader polarized toward them. The relation between a reader and a book is the purest relation ever. A reader in front of a book is man without any false mask on his face which he wears for the whole world. A person never hides anything from his dearest book because it never complains anything, it never demands anything, it don't expect anything in return from the reader.

A page of a book is like a farm where seeds are sown of words, water and manure is poured of imagination, pollination is done by the force of thoughts, crop of sentences arise, sunlight of creativity fills it with juice of sense, fruits grow of infinite pleasure ... This crop doesn't cut at once, every time when a book is in hands of a true reader it is ready to fulfil the hunger of intellect.

Books are the infinite vessel of knowledge and pleasure.

ऐसा आसमान दो

पूजा साहू
एम.ए.हिन्दी प्रथम सेमेस्टर

पंख दिए हैं जो
उड़ सकूँ ऐसा आसमान दो,
जनम दिया है तो
जी सकूँ ऐसा जीवन दो।
मैं कहीं सुप्त मन की कल्पना ही रही
किसी मां के हृदय की गुप्त भावना ही रही
गर्भ में ही मिटाई गई
नौ मास जिसने संसार को ढोया
क्यों वही यहां बोझ मानी गई ??
हुई हूं जब अंकुरित किसी कोख में
तो विकसित होने का विधान दो।
पंख दिए हैं तो
उड़ सकूँ ऐसा आसमान दो।
कहीं जिस्म मेरा बाजार हुआ
किसी ने बेचा, कोई खरीदार हुआ
जब अपने ही देह पर न अधिकार हो
कैसे ऐसा जीवन मुझे स्वीकार हो।
पत्थर में भी ढूंढ़ लेते हो भगवान
नारी तो फिर भी है इंसान
शोषित न कभी कहीं बनूं
ऐसा एक शील आवरण दो।
पंख दिए हैं तो
उड़ सकूँ ऐसा आसमान दो।।

(संकलित अंश)

जब बात हो सम्मान की..

निवेदिता तिवारी
बी.कॉम तृतीय वर्ष

नारी प्रेम में राधा बने
गृहस्थी में जानकी
काली बनकर शीश कांटे
जब बात हो सम्मान की
नारी को जो कमजोर कहते
तो देखो अपना इतिहास
अहिल्या बनकर राज्य किया
जब बात हो सम्मान की.....
गार्गी बन वेदों की रचना करे
विद्या में सरस्वती
महिषासुरमर्दिनी बन दुष्टों का विनाश करे
जब बात हो सम्मान की.....
नारी भक्ति में मीरा बने
ममता में पर्वती
मणीकर्णिका बन शत्रु का नाश करे
जब बात हो सम्मान की.....
नारी पतिव्रत में अनुसुइया बने
मित्रता में द्रोपदी
नारी नर को त्याग दे
जब बात हो सम्मान की.....

मुझे आगे बढ़ना हैं

खुशबू चौरसिया एम.ए.प्रथम सेमेस्टर

जाना है मुझे बहुत आगे, बहुत सी उड़ानों को भरना है,
मुझे मेरे सपनों को सच करना है,मुझे आगे बढ़ना है।
कहते रहते हैं लोग कुछ भी, मुझे उनके तानों को अनदेखा करना है,
अपनी उड़ानों से लोगों का मुँह बंद करना है, मुझे आगे बढ़ना है।
लड़की है क्या ही कर लेगी, इन बातों को गलत साबित करना है,
अब किसी से नहीं डरना है, बस मुझे आगे बढ़ना है।
गिरना है, उठना है पर किसी के आगे नहीं झुकना है,
उठ कर फिर से चलना है, मुझे आगे बढ़ना है।
अब पीछे नहीं मुड़ना है, ना रास्ते के रोढ़ों से रूकना है,
अपनी मंजिल को पा कर रहूंगी, मुझे मेरी माँ का नाम रोशन
करना है, मुझे आगे बढ़ना है।
किये थे खुद से कुछ वादे, अब उन वादों को पूरा करना है,
मुझे आगे बढ़ना है, हर कदम पर बस आगे बढ़ना है।

पेड़

चंपा अहिरवार
बी.ए.प्रथम

मैं हूँ पेड़ मुझे मत काटो,
टुकड़ों-टुकड़ों में मत बांटो,
दर्द मुझे भी होता,
मन मेरा भी रोता
मैं ही मित्र तुम्हारा हूँ,
सखा हूँ सबसे न्यारा हूँ,
मैं फल खुद नहीं खाता हूँ
सब तुम्हें ही तो दे जाता हूँ।
जहरीली गैस भी पीता हूँ
शुद्ध हवा तुम तक पहुँचाता हूँ
सूरज का भी ताप सहूँ
मैं जीवन का हूँ आधार
फिर भी तुम मुझपे करते प्रहार,
सुनो बात तुम कान लगाकर,
वृक्षों का तुम करो सम्मान।
वृक्ष ही जीवन का आधार।।

बचपन

कविता चक्रवर्ती
बी.कॉम.प्रथम

वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फसाना था।
कभी पापा के कंधों का,
तो कभी मां के आँचल का सहारा था।
कभी बेफिक्रे मिट्टी का खेल का,
तो कभी दोस्तों का साथ मस्ताना था।
कभी नंगे पाँव वो दौड़ का,
तो कभी पतंग ना पकड़ पाने का पछतावा था।
कभी बिन आँसू रोने का,
तो कभी बात बनवाने का बहाना था।
सच कहूँ तो वो दिन ही हसीन थे,
ना कुछ छिपाना और दिल में जो आए बताना था।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

पूजा श्रीवास्तव एम.ए.प्रथम सेमेस्टर

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ नारे को सफल बनाना है
शिक्षित करो, काबिल बनाओ, जीने की राह दिखाना है
बेटी बिन जग सूना नहीं कोई ये जादू टोना
बेटी को पढ़ाओगे अच्छा समय बिताओगे
घर–घर में अब आवाज उठेगी
बेटियाँ भी आगे बढ़ेंगी
बेटी को न समझने वाले फिर भी तुम्हीं पर
मरती हैं बेटी परिवार के कुल को बढ़ाती हैं
फिर भी पैरों तले कुचल दी जाती हैं बेटियां
जीवन है बेटी का अधिकार, शिक्षा है उसका आधार
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अपनी सोच को आगे बढ़ाओ
मत मारो तुम कोख में इसको
इसे भी धरती व सुंदर जग में आने दो
बेटी से रोशन ये आँगन बेटी से ही अपनी पहचान
बेटी आन बान शान है बेटी युग सम्मान है
बेटी घर की रौनक होती है
वह हर मुसीबत को झेल जाती है बेटियाँ
हर लड़ाई जीत कर दिखाउंगी मैं अग्नि में जलकर
भी जी जाऊंगी मैं बोझ नहीं, भविष्य हूँ
बेटा नहीं, पर बेटी हूँ
बेटी मां–बाप का नाम रोशन कर जाती हैं और
मां–बाप को बेटी पर गर्व होता है, सम्मान भी
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ।

माँ के विचार

आरती लोधी
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष केमिस्ट्री

जिस बेटी के पास माँ नही तो उस बेटी से पूछो कि उसकी जिन्दगी अधूरी ही रह जाती न वे माँ के संस्कार से भरी होती न माँ की गोदी में पली होती जब बेटी को भूख लगती तो माँ खान खिलाती फिर ऐसा लगता है कि मानो एक चिड़िया स्वयं आंगन में स्वयं गुन गुना रही हो जिस बेटी के पास माँ का ज्ञान सम्मान सुख संस्कार आंचल हो वह बेटी संस्कारी होती है जिस बेटी के पास माता–पिता का सम्मान हो वह बेटी स्वयं संस्कारी होती है माँ तो माँ ही है जो स्वयं दुख करती है बेटी तो एक बेटी ही है जो एक घर से पराई होकर दूसरे घर में उजाला कर देती है।

बेहतरीन सुविचार

सृष्टि कुर्मी
एम.ए.प्रथम हिन्दी

ख्वाव भले टूटते रहे मगर ''हौसले''फिर भी जिन्दा हो
''हौसला'' अपना ऐसा रखो जहाँ मुश्किलें
भी शर्मिंदा हो।।
''दीपक'' तो अंधेरे में जला करते हैं,
'फूल' तो कांटो में भी खिला करते हैं,
थक कर ना बैठ ये 'मंजिल' के मुसाफिर
'हीरे' अक्सर 'कोयले' में ही मिला करते हैं।।
''बिना मेहनत के हासिल तकतोताज नहीं होते
ढूंढ़ लेना अंधेरों में ही अपनी मंजिल
'क्योंकि'जुगनू कभी रोशनी के मुहताज नहीं होते''
''हमारे सभी सपने सच हो सकते हैं
अगर – – – – लोग क्या सोचेंगे,
यह हम सोचना बंद कर दें।''
''राह संघर्ष की जो चलता है
वो ही संसार को बदलता है
जिसने रातो से जंग जीती है
सूर्य बनकर वही निकलता है।।''
''सच्चे लोग कभी प्रशंसा के मोहताज नहीं होते
'क्योंकि'असली फूलों को कभी इत्र लगाने की
जरूरत नहीं होती।''
''जितना बड़ा सपना होगा,
उतनी बड़ी तकलीफें होगी,
जितनी बड़ी तकलीफें होगी,
उतनी ही बड़ी कामयाबी होगी।''
''खोल दे पंख मेरे, अभी और उड़ान बाकी है,
जमी नहीं है मंजिल मेरी, अभी तो पूरा
आसमान बाकी है।''
''किस्मत सब को मौका देती है
लेकिन मेहनत सब को चौका देती है।''
''सफलता की फसल सींचने के लिए
मेहनत को बरसात बनानी पड़ती है।
झुक के सलाम करती है, ये दुनिया
पहले बस औकात बनानी पड़ती है।''

मेरे प्रिय शिक्षकों के लिए

''ना तारीफ के शब्दों की है उसको चाहत,
ना महंगे उपहारों से है उसकी इबादत,
उनको मिलती है तब ही आत्मीय शांति,
जब फैलती है विश्व में शिष्य की क्रांति''

नारी की व्यथा

स्नेहा खटीक
एम.ए.प्रथम सेमेस्टर भूगोल

''चार दिन घर क्या रहे
घर जेल लगने लगा तुम्हें
मेरी तो सारी जिंदगी ही
इस चार दीवारी में गुजरी है
लॉकडाउन का एहसास नहीं है मुझे
पर तुम्हें ऐसा लग रहा है कि ....
सारी दुनिया ही रूक गई है
मेरी दुनिया से तो तुम कभी मिले ही नहीं
तुम्हारी जिंदगी तो घर के बाहर ही बीती है
कभी कहा ही नहीं तुमने जो मैं सुनना चाहती थी
कभी सुना ही नहीं तुमने जो मैं कहना चाहती थी
खफा नहीं हूँ तुमसे ....
क्योंकि दोष सिर्फ तुम्हारा नहीं था
मैंने ही अपनी इच्छाओं को जाहिर नहीं किया.......
तुमसे कभी नहीं कहा कि
मैं भी जीना चाहती हूँ
इस खुले आसमान में
परिंदों की तरह उड़ना चाहती हूँ
अपने अरमानों, ख्वाहिशों और सपनों को
पूरा करना चाहती हूँ
नहीं कह पाई तुमसे इसलिए दोष सिर्फ तुम्हारा नहीं है
सिर्फ तुम्हारा नहीं है........''

माँ जीवन का आधार

अंजली अहिरवार
एम.एच.एस.सी.तृतीय सेमेस्टर

तू त्याग का प्रतीक है तू जीवन का संगीत है
तू धरा स्वरूप है तू नारीशक्ति रूप है
तू निराशा में भी आशा है जिसकी नहीं
कोई परिभाषा है
तेरी डांट में भी प्यार है तू अपनेपन
का एहसास है।
तू सृजन का सम्मान है तू बलिदान का पहचान
है तेरा स्नेह और प्यार जैसे, अनंत आसमान है
तू चेतना की ज्योति है तू अनमोल जैसे
माता है।
तेरा स्पर्श मात्र औषधि है, जो हर पीड़ा
हर लेती है।
तू निर्मल निरंतर धारा है तू जीत का
जयकारा है
तू अखंड प्रज्वलित ज्वाला है, तेरा रूप
ही निराला है
तू ममता की शीतल छाया है, जिसने
जीवन जन्नत बनाया है।
तू मेरे जीने का सहारा, जिसने
जिंदगी को संवारा है।
तेरी आंचल में सारी दुनिया समाई है
तेरे बिना है लगता, जग ये पराई है
बिन बोले समझ लेती, तू मेरी सारी बात है
कोई बा लना बांका कर सके तू जो साथ है।
ये शब्द भी तेरे आगे, निशब्द और
निशक्त हैं
असंख्य अर्थ बताती वो मां ही एक शब्द है
ऐसा इस जहां में और कोई कहां है
वो तो मेरी मां, और केवल एक मां है

परवाह पिता की

दीपाली खटीक
बी.एस.सी द्वितीय

बड़ा सुकून देती है
आनंद से भर देती है
एक झलक पिता की बच्चे
को खुश कर देती है
उंगली पकड़ पिता बच्चे को
एक-एक कदम चलाता है
बच्चे से बड़ा कर देता है
फिर भी नारियल कहलाता है
हर उस लहर की तरह होता है
अपने हर पल में बच्चों पर खुशियां बरसाता है
जिंदगी की जंग लड़ते हैं
फिर भी हंसते और मुस्कुराते हैं
पिता बच्चों को हर तूफान से बचाते हैं
पिता बच्चों को अपनी छवि या उससे बड़ा बनाते हैं
बिना कहे उसकी हर बात समझ जाते हैं
बहुत प्यार दुलार बरसाते हैं
जरूरत पड़ने पर फटकार भी लगाते हैं
सख्त भल कितने भी हो ऊपर से
बच्चे को चोट लगे तो घबरा ही जाते हैं
ऐसी प्यार और परवाह
केवल पिता ही दे पाते हैं
बच्चे की फरमाइस हो
चाहे जेब में पैसे न हो
पिता फिर भी लेकर आते हैं
अपना फर्ज पिता बखूबी निभाते हैं
ऐसी होती है परवाह पिता की
शब्द भी कम पड़ जाते हैं।

बेटी

साधना लोधी
बी.एस.सी.प्रथम

जब-जब जन्म लेती है बेटी
खुशियाँ साथ लाती है बेटी
ईश्वर की सौगात है बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बेटी
आँगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी
बार-बार याद आती है बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी

बेटियाँ

श्रद्धा राय
-एम.ए.प्रथम हिन्दी

कहते हैं दो परिवारों को जोड़ती हैं बेटियाँ
समाज के लिये अपना घर छोड़ती है बेटियाँ
कहने को बेटी देती हैं शक्ति है
अकेले में छुप-छुप कर सिसकती है
कह न पाएं दर्द बाबुल से
दूर होकर भी मायका नहीं छोड़ती हैं बेटियाँ
कहते हैं दो परिवारों को जोड़ती हैं बेटियाँ
ससुराल में खुश न भी हो तब भी दिखाती हैं
सब ठीक पिता के सामने
मुस्कुराना नहीं छोड़ती हैं बेटियाँ
ना मायका न ससुराल होता है उसका अपना
मुस्कुराकर भेदभाव की हर पीड़ा झेलती हैं बेटी
कभी सास कभी पति के लिये
अपना दिल तोड़ती हैं बेटी
क्योंकि दो दो परिवारों को जोड़ती हैं बेटी
चंद पैसे के लिये नहीं करती
वह त्योहारों का इंतजार
प्यार लुटाने को ससुराल में
भाई की वाट जोहती है बेटी

निश्चित ही सफलता मिल जाएगी :-
दृढ़ संकल्प और प्रयास से

सावित्री कुर्मी
एम.ए.तृतीय सेमे.

मत करना मन विचलित अपना
देर अगर जो हो जाए
ऐसा कुछ भी नहीं है जग में
जो तुमसे न हो पाए
ज्ञान अगर हो लक्ष्य का अपने
दृढ़ संकल्प का भान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।
जो कमी कोई रह जाती है
तो उसका तुम अभ्यास करो
जो गिरते हो तुम एक दफा
तो उठकर फिर प्रयास करो,
लगे रहो तुम कर्म में अपने
जब तक इस तन में प्राण रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।
राह नहीं आसान है ये
मुश्किलें रास्ते में आएगी
किस्मत पे भरोसा मत करना
ये राह तुम्हें भटकाएगी,
मत हारना हिम्मत उनसे तुम
चाहे जितनी घमासान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।

किताबें

अलका दुबे
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष
गणित विषय

किताबें करती हैं बातें,
बीत जाने की
दुनियां की, इन्सानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
खुशियों की, गमों की
फूलें की, बमों की
जीत की, हार की
क्या तुम नहीं सुनोगी
इन किताबों की बातें ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़िया चहचहाती है
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में भौरे गुनगुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगी ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं

Importance of computer in our life,

Karishma Katare
Comupter Department

दोस्तों आज हम इस लेख में जानेंगे *Importance of computer in our life*, कंप्यूटर के प्रयोग से हमारे जीवन में क्या क्या परिवर्तन आया है? शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर का क्या महत्व है? कंप्यूटर का उपयोग, कंप्यूटर का दुरूपयोग, इन सबके बारे में अध्ययन करेंगे

वर्षो से विज्ञान ने लोगों को वे सभी अकल्पनीय खोजें दी हैं जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। इन खोजों ने लोगों के जीवन को आसान बना दिया है। इन आविष्कारों में सबसे अद्भुत और कुशल कंप्यूटर है।

बीसवीं शताब्दी में आविष्कार किए गए इस उपकरण को मशीनी मस्तिष्क कहना काफी हद तक उचित है। बहुमुखी और विविध प्रदर्शन के साथ, यह तेजी से चलने वाला उपकरण समय की बर्बादी को नियंत्रित करने के साथ-साथ लोगों की दक्षता बढ़ाने में मदद करता है। इस शक्तिशाली उपकरण का उपयोग करना अपेक्षाकृत आसान है, इसलिए यह जल्दी से मानव जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

– Importance of computer in our life

- आजकल संचार प्रणाली में अनुसंधान संस्थानों में कंप्यूटर अनिवार्य हो गया है। यहां तक कि शिक्षा के क्षेत्र में भी, पाठ्यपुस्तकों को उपलब्ध कराने से लेकर परीक्षा परिणाम प्रकाशित करने तक हर चीज में कंप्यूटर का व्यापक उपयोग किया जाता है।
- चिकित्सा के क्षेत्र में एक और जहां कंप्यूटर रोग का निदान कर रोगी की शारीरिक स्थिति का निर्धारण कर रहा है। वहीं, यह सर्जरी के क्षेत्र में भी मदद कर रहा है।
- कंप्यूटर ड्राइंग,editing old paintings, mapping, छपाई और ग्राफिक्स डिजाइन और घरों, कारों, हवाई जहाज,*sculptures* आदि का डिजाइन।

कंप्यूटर शिक्षा की आवश्यकता

modern civilization के साथ तालमेल बिठाने के लिए कंप्यूटर शिक्षा जरूरी है। कंप्यूटर का उचित और सकारात्मक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए कंप्यूटर ज्ञान आवश्यक है। जितने अधिक लोग कंप्यूटर के बारे में सटीक ज्ञान प्राप्त करेंगे, कंप्यूटर काउतना ही कम दुरुपयोग होगा। और देश और राष्ट्र की प्रगति तभी तेज होगी जब हम कंप्यूटर का उचित उपयोग सुनिश्चित कर सकें।

पारिजात

शिवांगी शुक्ला
बीएससी द्वितीय वर्ष

परिचय :- यह 10 से 15 फीट ऊँचा और कही 25-30 फीट ऊँचा कहीं ऊँचा एक वृक्ष होता है और पूरे भारत में विशेषत: बाग-बगीचों में लगा हुआ मिलता है। विशेषकर मध्य भारत और हिमालय की नीची तराइयों में ज्यादातर पैदा होता है इसके फूल बहुत सुगंधित,सफेद और सुन्दर होते हैं इसके पुष्प सूर्यास्त के एक घण्टे बाद खिलते हैं और सुबह सूर्योदय होने तक मुरझा कर गिर जाते हैं।प्राजल एक पुष्प देने वा वृक्ष है। इसे हरसिंगार,शेफाली,शिडली आदि नामों से भी जाना जाता है इसका वृक्ष 10 से 15 फीट ऊँचा होता है। इसका वानस्पति नाम 'निक्टेन्पिस आर्बीर्ट्रिस्टिस' है। परिजात पर सुन्दर व सुगंधित फूल लगते हैं इसके फूल,पत्ते,छाल का उपयोग औषधि के रूप में करते हैं।

विधि :- हरसिंगार के ढाई सौ ग्राम पत्ते साफ करके एक लीटर पानी में उबाले। जब पानी लगभग 700 मिली बचे तब उतारकर ठण्डा करके छान लें पत्ते फेंक दें और 1-2 रत्ती केसर घोंटकर इस पानी में घोल दें। इस पानी को दो बड़ी बॉलों में भरकर रोज सुबह-शाम एक कप मात्रा में इसे पिएँ।

ऐसी चार बोतलें पानी पीने तक सायटिका रोग जड़ से चला जाता है। किसी को जल्द पायदा होता है। फिर भी पूरी तरह चार बोतल पी लेना अच्छा होता है। इस प्रयोग में एक बात का ख्याल रखें बसन्त ऋतु में ये पत्ते गुणहीन रहते हैं। बसन्त ऋतु में लाभ नहीं करता है।

गुण :- यह हल्का,रूखा,तिल,कड़,गर्म,वात,कफनायक,ज्वार नाशक,मुड विरेचक,शामक,उष्णीय और रक्तशोधक होता है। सायटिका रोग को दूर करना विशेष गुण है।

तुलसी

मोहनी पटैल
बीएससी द्वितीय वर्ष

तुलसी–(ऑसीसम सैक्टम) एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। तुलसी का पौधा हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है और लोग इसे अपने घर के आँगन या दरवाजे पर या बाग में लगाते हैं। भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों में भी तुलसी के गुणों एवं उसकी उपयोगिता का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त ऐलोपैथी, होमियोपैथी और यूनानी दवाओं में भी तुलसी का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता है।

तुलसी का पौधा क्षुप (झाड़ी) के रूप में उगता है और 1 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली हल्के रोएँ से ढकी होती है। पत्तियाँ 1 से 2 इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती है। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं 8 इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती हैं, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले बहुत ह्रदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीतवर्ण के छोटे काले चिन्हों में उगते हैं और शीतकाल में फूलते हैं। पौधा सामान्य रूप से दो–तीन वर्षो तक हरा बना रहता है। इसके बाद इसकी वृद्धावस्था आ जाती है। पत्ते कम और छोटे हो जाते हैं और शाखाएँ सूखी दिखाई देती है। इस समय उसे हटाकर नया पौधा लगाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

प्रजातियाँ :– तुलसी की सामान्यत: निम्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं :–

1. ऑसीमम सैक्टम
2. ऑसीमम वेसिलिकम (मरूआ तुलसी)
3. ऑसीमम वेसिलिकम मिनिमम
4. ऑसीमम ग्रेटिसिकम (वन तुलसी)
5. ऑसीमम किलिमण्डचेरिकम (कर्पूर तुलसी)
6. ऑसीमम अमेरिकम (काली तुलसी)
7. ऑसीमम विरिडी

ठनमें ऑसीमम सैक्टम को प्रधान या पवित्र माना जाता है। इसकी भी दो प्रधान प्रजातियाँ हैं– श्री तुलसी, जिसकी पत्तियाँ हरी होती हैं तथा कृष्णा तुलसी जिसकी पत्तियाँ नीलाभ कुछ बैंगनी रंग की होती है। श्री तुलसी के पत्र तथा शाखाएँ श्वेताभ होते हैं जबकि कृष्ण तुलसी के पत्रादि कृष्ण रंग के होते हैं। गुण, धर्म की दृष्टि से काली तुलसी को ही श्रेष्ठ माना गया है, परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि दोनों ही गुणों में समान हैं।

तुलसी का औषधीय महत्व :– भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूजनीय माना जाता है, धार्मिक महत्व होने के साथ–साथ तुलसी औषधीय गुणों से भी भरपूर है। आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसका उपयोग सर्दी–जुकाम, खांसी, दंत रोग और श्वास संबंधी रोग के लिए बहुत ही फायदेमंद माना जाता है।

तुलसी विटामिन और खनिज का भंडार है। इसमें मुख्य रूप से विटामिन सी, कैल्शियम, जिंक, आयरन और क्लोरोफिल पाया जाता है। इसके अलावा तुलसी में सिट्रिक, टारटरिक एवं मैलिक एसिड पाया जाता है जो विभिन्न रोगों के रोकथाम के लिए भी उपयोग है।

तुलसी की पत्तियों का प्रयोग तनाव दूर करने के लिए :– आज के समय में तनाव बड़ी समस्या बन गई है और इससे आराम पाने के लिए लोग गई तरह की थेरेपी अपनाते हैं। तुलसी पत्ते इस समस्या को कम करने में उपयोग पाए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन द्वारा प्रकाशित एक शोध में यह बताया गया है कि इसमं एंटीस्ट्रेस गुण होते हैं, जो स्ट्रेस से तुलसी के पत्ते आराम दिलवा सकते हैं। हमारे शरीर में कॉर्टिसोल हार्मोन की मात्रा को नियमित कर सकते हैं, जो एक तरह का स्ट्रेस हार्मोन होता है। विशेषकर तुलसी की चाय का सेवन करने से तनाव से काफी राहत मिल सकती है। साथ ही साथ

एंटीडिप्रेसेंट गुण जो आपकी याददाश्त बेहतर करने में भी सहायक हो सकते हैं।

तुलसी सर्दी जुकाम के लिए उपयोगी :– रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। सर्दी–जुकाम के साथ बुखार में भी फायदा पहुंचाती है। काली मिर्च और तुलसी को पानी में उबाल कर काढ़ा बनाएं साथ ही मिश्री डालकर इसको पीने से बुखार से आराम मिलता है। जुकाम होने पर तुलसी को पानी में उबाल कर भाप लेने से भी फायदा होता है।

चोट लगने पर तुलसी उपयोगी :– कहीं चोट लगने पर तुलसी के पत्ते को फिटकरी के साथ मिलाकर घाव पर लगाने से तुरंत आराम आ जाता है। तुलसी में मौजूद एंटी–बैक्टीरियल तत्व चोट के घाव को पकने नहीं देता और ठीक करने में मदद करता है। तुलसी पत्ते को तेल में मिलाकर लगाने से जलन भी कम होती है।

क्योंकि एंटीस्ट्रेस एंटीडिप्रेसेंट एंटीबैक्टिरियल गुणों से युक्त है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए तुलसी के फायदे :– अगर आप इसकी पत्तियाँ चबाते हैं या फिर इससे हर्बल–टी बनाकर पीते हैं तो इससे शरीर को लाभ होता है। यदि आपकी इंसान का इम्युनिटी सिस्टम मजबूत है तो आपको बीमारियाँ कम लगने के चांस रहते हैं।

थोड़ा सा जी लें

अर्चना अहिरवार
बी.एच.एस.सी.प्रथम वर्ष

सारी चिंता रखें ताक पर
चलो मटर ही छीलें।
बदले मौसम के मिजाज को,
थोड़ा सा तो जीलें।।

मटर मटरगश्ती में,
गमलों में फूला है गेंदा।
सरसों भी आने वाली है,
दुख भूला है गेंदा।।

मंद हवा में पलकें खोलें,
खुशबू की कंदीलें।
ल्धनी और चाय काफी में,
मगन जुगलबंदी हो।।

करवट लेती रागबोध की,
चुप चुप कालिंदा हो।
अंजुरी साखें नहीं, हर लहरें
आंखों से ही पी लें।।

किस–किस से कुरा कुतरें,
सूरज नया उगाएं।
दर्द उठे मीटा सा,
कोई पिछली चोट दुखाएं।।

आ गए तुम

रोशनी अहिरवाल
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

आ गए तुम !!
द्वार खुला है
अंदर आ जाओ ...
पर तनिक ठहरो
डयोढ़ी पर पड़े पायदाने पर
अपना अहं झाड़ आना ...
मधुमालती लिपटी है मुंडेर से
अपनी नाराजगी वहाँ उडेल आना ...
तुलसी के क्यारे में
मन की चटकन चढ़ा आना ...
तुलसी ...
अपनी व्यस्ततायें बाहर खूंटी पर ही
टांग आना ...
जूतो संग हर नकारात्मकता उतार आना ...
बहर किकोलते बच्चों से
थोड़ी शरारत मांग लाना ...
वो गुलाब के गमले में मुस्कान लगी है
तोड़ कर पहन आना ...
लाओ अपनी उलझने मुझे थमा दो
तुम्हारी थकान पर मनुहरों का पंखा झल दूं ...
देखो शाम विछाई है मैंने
सूरज क्षितिज पर बांधा है
लाला छिड़की है नभ पर ...
सुनो इतना मुश्किल भी नहीं नहीं जीना
विमल विनम्रता का अमृत नित पीना

जैविक खाद

ममता पटैल
बीएससी द्वितीय वर्ष

जैविक खाद क्या है ? :- पक्षियों के मल मूत्र, शरीर अवशेष, फार्म पर उगाई फसलों एवं उद्योगों के उत्पादों आदि के विघटन से निर्मित पदार्थ को जैविक खाद कहते हैं, इसको जीवांश खाद या कार्बनिक खाद भी कहा जाता है।
इससे भूमि की अवस्था में सुधार होता है, और मृदा में वायु संचार बढ़ता है।
इसके प्रयोग से विभिन्न रसायनों के दुष्प्रभाव से भूमि पर्यावरण व कृषि उत्पाद को बचाया जा सकता है।
जैविक खाद के प्रकार :-

1. **Farm yard manure**
2. **Compost**
3. **Vermi Compost**
4. **Green Manure**
5. **Biotic Manures**

1. गोबर की खाद :- गोबर की खाद में 0.5-1.5 प्रतिशत नाइट्रोजन 0.4-0.8 प्रतिशत फॉस्फोरस व 0.5-1.9 प्रतिशत पोटाश पाया जाता है। गोबर की खाद पशुओं के मल-मूत्र व विछावन और उनके व्यर्थ चारे व दाने का मिश्रण होती है।
पशुओं के गोबर मूत्र व बिछावन आदि को गड्ढों में एकत्रित किया जाता है। तथा गोबर की खाद तैयार की जाती है।
2. कम्पोस्ट खाद :- ग्रामीण क्षेत्रों में तैयार की गई कम्पोस्ट की 0.4-0.8 प्रतिशत नाइट्रोजन 0.3-0.6 फॉस्फोरस तथा 0.7-1.0 प्रतिशत पोटाश पाई जाती है। विभिन्न फसलों के अवशेष,सूखे डंठल,गन्ने की सूखी पत्तियों व फसलों के अन्य अवशेषों को गड्ढों में सड़ाकर बनाई गई खाद कम्पोस्ट खाद कहलाती है। अपशिष्ट पदार्थो को गड्ढों में भर दिया जाता है गड्ढे को भरने के पश्चात् उसको मिट्टी से ढंक देते हैं।गड्ढों में भरे अपशिष्ट पदार्थो के बीच-बीच में भी मिट्टी की परतें डाली जाती हैं। ऐसा करने से गड्ढों में सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा अपघटन की क्रिया तीव्रता से होती रहती है।
कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए विभिन्न विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं।
(1) कोयम्बदूर विधि
(2) इंदौर विधि
(3) बैंगलोर विधि
3. वर्मी कम्पोस्ट :- वर्मी कम्पोस्ट में कुल नाइट्रोजन 0.5-1.5 प्रतिशत उपलब्ध फास्फोरस 0.1-0.3 प्रतिशत व उपलब्ध सोडियम 0.06-0.3 प्रतिशत पाया जाता है।
वर्मीकम्पोस्ट एक ऐसी जैविक खाद है जो केंचुओं के द्वारा बनाई जाती है। वर्मी कम्पोस्ट के मिश्रण में कास्टिंग केंचुए सूक्ष्म-जीवाणु मल आदि पाए जाते हैं। केंचुओं की सहायता से बनाई गई इस जैविक खाद को वर्मी कम्पोस्ट कहते हैं। इस प्रकार बनाई गई खाद की प्रक्रिया वर्मी कम्पोस्टकारण कहलाती है। इस क्रिया में केंचुए मिट्टी को खाकर उसको मल के रूप में पाचन के उपरान्त बाहर निकालते रहते हैं।
ऐसा अनुमान है कि 2000 केंचुए एक वर्ग मीटर जगह की मिट्टी को खाकर एक वर्ष में 100 मीट्रिक टन ह्युमस का निर्माण करते हैं।
5. हरी खाद :- जैविक खेती में हरी खाद काएक महत्वपूर्ण स्थान है। हरी खाद वाली फसलें भूमि में उगाकर कोमल अवस्था में बुवाई के 30-35 दिन बाद गिराकर दवा दी जाती हैं।
सड़ने और गलने के पश्चात इन फसलों से भूमि के भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार होता है। भूमि में वायु संचार व पौषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है। भूमि पर हरी खाद उगाने से भूमि कटाव पर भी नियंत्रण होता है। सनई व देंचा प्रमुख हरी खाद वाली फसलें हैं।हरी खाद उगाने से भूमि में नाइट्रोजन की भी वृद्धि होती है। नाइट्रोजन की मात्रा प्रयोग की गई फसल एवं पलटने की अवस्था पर निर्भर करती है। ऐसा अनुमान है कि हरी खाद की विभिन्न फसलों से 75-150 किलो नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि को प्राप्त होती है।
कृषि में जैविक खाद का महत्व :- भारत एक कृषि प्रधान देश है।

उन्नत कृषि करने के लिये आवश्यक है कि मृदा को पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में प्रदान किये जायें।

कृषकों की दृष्टि से लाभ :–

(1) भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।

(2) सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।

(3) रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।

(4) फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।

मिट्टी की दृष्टि से लाभ :–

(1) जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।

(2) भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है।

(3) भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से लाभ :–

(1) भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है।

(2) मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।

(3) कचरे का उपयोग, खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है।

(4) फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि।

आप खास हैं–लघुकथा

कमला लोधी

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर अर्थशास्त्र

एक जाने माने वक्ता अपने हाथों में 500 रू. का नोट लिए सेमिनार हॉल में प्रवेश करते हैं। उस सेमिनार हॉल में लगभग 200 लोग बैठे हुए थे। उन्होंने 500 रू. का नोट सभी को दिखाते हुए पूछा – कौन–कौन इस 500 रू. के नोट को लेने की इच्छा रखता है ? हॉल में मौजूद लोगों के हाा धीरे–धीरे उठने लगे।

उन्होंने कहा, मैं आप ही लोगों में से किसी एक को यह 500 रू. का नोट देने वाला हूँ, लेकिन पहले आप मुझे ये कर लेने दीजिए यह कहकर उन्होंने नोट को मोड़–तरोड़ दिया।

उसके बाद उन्होंने पूछा – इसे अब भी कौन लेना चाहता है ? अभी भी लगभग सारे हाथ ऊपर थे। उन्होंने कहा ठीक है। फिर उसके बाद उन्होंने 500 रू. के नोट को फर्श पर गिरा दिया और जूते से रगड़ने लगे।

कुछ देर बाद उस नोट को दुबारा हाथ में लिया, लेकिन अब नोट बुरी तरह से तुड़–तुड़ और गंदा हो गया था। फिर उन्होंने लोगों से पूछा– इसे अब भी कौन लेना चाहता है ? इस बार भी लगभग सभी लोगों के हाथ खड़े थे।

इससे हमने बहुमूल्य चीज के बारे में सीखा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि मैंने इस नोट के साथ क्या किया। आप इसे अब भी लेना चाहते हैं, क्योंकि इससे अब भी इसका मूल्य घटा नहीं है। यह अब भी 500 रू. का ही नोट है।

''यही चीज हम सभी के साथ होती है। कई बार हम अपने जीवन में गिरते हैं कठिनाईयों से लड़ते–लड़ते थक जाते हैं। अपने गलत निर्णयों से भारी मुसीबतों का सामना करते हैं। इन सारी परिस्थितियों से जूझ कर हम अपने आपको मूल्यहीन और बेकार समझने लगते हैं लेकिन इसका कोई अर्थ नहीं है कि हमारे जीवन में क्या हो चुका है और भविष्य में क्या होगा, आप अपना महत्व कभी नहीं खो सकते।''

''आप खास हैं – इसे कभी न भूलें।''

कम्प्यूटर

डॉली अहिरवार
एम.ए.प्रथम हिन्दी

कम्प्यूटर है मेरा नाम
करता हूं मैं ढेरों काम
मुझ में है एक सी.डी. ड्राइव
सब कुछ दिखलाती है लाइव
टी.वी. जैसा मेरा मॉनीटर
काम करूं मैं सब से हटकर
साथ में रखूं एक की–बोर्ड
झटपट कर लो सब कुछ लोड
कहीं भी रहते चाचा ताऊ
झटपट मैं तुमको मिलवाऊं
काम हो चाहे घंटों का
झटपट मिनटों में निपटाऊं
सोचने में ना देर लगाता
कुछ भी चाहे पूछो तुम
मेरे बिना ना चलता काम
कम्प्यूटर है मेरा नाम
''बड़े काम की चीज है कम्प्यूटर
देता कर यह झटपट काम
करो पढ़ाई और खेलों खेल
कभी न होता है यह फेल
पर इसका रखना तुम ध्यान
अति सबे करती परेशान''

मतलबी दुनिया

डॉली अहिरवार
एम.ए.प्रथम हिन्दी

सात रंगों से सजा हुआ है,
सबके मन में वसा हुआ है।
सात रंगों से सजा है जीवन,
सात रंगों से बनी है प्रकृति।
सात रंग आंखों में बसे अब,
सोच जागे अरमान आज दिल में जगे।
जैसे इन्द्रधनुष बना है सात रंगों का,
वैसे जीवन बना है सात जन्मों का।
रंगीला है इन्द्रधनुष रंगीली है लाईफ,
रंगीला है इन्द्रधनुष रंगीला है आसमान।
बारिस में दिख जाता गर्मी में छिप जाता
इसके रंगों को देखे जो उसके मन को भावे ये।

पिता

माधुरी ठाकुर
–एम.ए.तृतीय सेमेस्टर जियोग्राफी

कभी अभिमान तो कभी,
स्वाभिमान है पिता।
अगर जन्म दिया है माँ ने।
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता।।
माँ अगर है महसूस सी लोरी।
तो कभी ना भूल पाऊंगी वो कहानी है पिता।।
पिता जागीर की वो हस्ती है।
जिसका मूल्य अमूल्य है पिता।।
तुम्हारी मुस्कान के लिए।
अपनी हर कीमत को तोलेगा।।
खुद को दिखाता है जैसे उसे किसी चीज की
जरूरत नहीं है।
पर तुम्हारी तकदीर संभालने के लिए
अपनी हाथों की लकीर तोलेगा।।
मुझे रख दिया छांव में खुद जलते धूप में
मन देखा है। एक फरिश्ता पिता के रूप में।।

मतदान की अनिवार्यता

स्नेहा खटीक
एम.ए.प्रथम वर्ष

''मतदान करना है आज के युग की माँग इसी से तो बढ़ेगी भारत देश की शान''

प्रस्तावना :- भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें मतदान की शक्ति सर्वोपरि है, मतदान ही देश की दशा तथा दिशा तय करता है। जब-जब चुनाव की रणभेदी बजी है ''चुनाव की अनिवार्यता'' का विषय बहस का विषय बना रहा और इसके पक्ष तथा विपक्षी दल इस कार्य को सजगता से कर रहे हैं।

2. मतदान का महत्व :- लोकतांत्रिक शासन में मतदाता ही सर्वोपरि है, लोकतंत्र जनता का जनता के लिए जनता द्वारा शासन है। मतदान जन शक्ति होती है जिसमें मतदाता अपनी सरकार चुनते हैं। भारत में प्रत्येक पाँच वर्षो में लोकसभा के चुनाव होते हैं जिससे यह चुना जाता है कि देश का प्रधानमंत्री कौन होगा देश को कौन चलाएगा देश का प्रतिनिधि कौन होगा। भारत में 18 वर्ष के प्रत्येक नागरिक को मताधिकार प्राप्त हो जाता है जिससे प्रत्येक वर्ष लाखों लोग मताधिकार प्राप्त करते हैं और मताधिकार से ही देश का भविष्य निर्धारित होता है।

3. मतदान सबसे बड़ा दान :- लोकतंत्र में मतदान को सबसे बड़ा दान कहा गया है, क्योंकि मंदिरों में किया गया दान हमें पुण्य देता है तथा लोकतंत्र में दिया गया दान हमें अच्छा प्रतिनिधि देता है, हमारे देश का निर्णायक देता है। मतदान हमारे देश की तस्वीर को स्पष्ट करता है।

4. मतदान क्यों है आवश्यक ? :- मतदान की आवश्यकता को समझने के लिए निम्न बिन्दुओं का वर्णन किया है :-

1- 1875 में फ्रांस में एक वोट के कारण राजतंत्र के स्थान पर गणतंत्र आया।

2- 1919 में सरदार पटैल अहमदाबाद से म्यूनसिपल कार्पोरेशन के चुनाव में एक वोट से हार गये।

3- 1998 में एक वोट से वाजपेयी सरकार गिर गई।

4- 2008 में राजस्थान से नाथ द्वारा सीट से सीपी जोशी मात्र एक वोट से हार गये।

निम्न बिन्दुओं से हम समझ सकते हैं चुनाव में एक-एक मत का क्या महत्व है।

''एक-एक मत है कीमती, इसे ना जाना भूल वोटिंग पावर आज है, सबसे बड़ा उसूल''

5. मतदान ना करने से देश का अहित यदि भारत के नागरिक मतदान करने नहीं जाते तो जो प्रतिनिधि चुनकर आते हैं उनमें कुछ गलत भी होते है। तथा देश के विकास में बाधक होते हैं। कुछ लोग मतदान के समय दिए गए अवकाश का दुरूपयोग कर स्वयं की तो हानि करते ही हैं बल्कि सम्पूर्ण देश के विकास में अवरोध बन जाते हैं।

6. उपसंहार :- मतदान की अनिवार्यता आवश्यक ही नहीं बल्कि अपरिहार्य है। भारत देश में 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष या उससे भी कम है, अत: युवा वर्ग का कर्तव्य है कि वह मतदान के लिए लोगों को जागरूक करे तथा उन्हें इसकी अनिवार्यता से अवगत कराएँ। देश हित से ही स्वयं का हित संभव है अत: अधिकार के साथ-साथ हमारा यह कर्तव्य भी है कि हम अपना अमूल्य मत देने पोलिंग बूथ तक जाये।

''मैंने किया पहला मतदान, लोकतंत्र का किया सम्मान
में सागर हूँ, थोड़ा नादान सही
पर लोकतंत्र की सच्चाई से अन्जान नहीं
चुना उसी को जो या काबिल
क्योंकि यह मेरा कर्तव्य था, कोई अरमान नहीं।।''

बेटियाँ

लक्षिका दुबे
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

भारत में सदियों से बेटियों को शिक्षा एवं समाज में बराबरी के अधिकार से वंचित रखा गया है। लड़कों को शुरू से ही बेटियों से ऊपर रखा गया है। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। बेटियाँ किसी से कम नहीं हैं वो भी बेटों की बराबरी बल्कि उनसे ऊपर ही हैं। पहले तो भारत में बेटियों को जन्म लेने से पहले ही मार दिया जाता था बेटी को दुनिया में ही नहीं आने दिया जाता था अगर बेटी से इतनी ही दु:ख है तो दु:ख के समय माँ को क्यों याद करते हो वो भी तो एक बेटी ही थी। कहीं पढ़ा था, कि हर व्यक्ति के 100 भाग्य होते हैं पर उन 100 भाग्यों में से जब 1 भाग्य अच्छा होता है तो बेटे का जन्म होता है और यदि 100 के 100 भाग्य अच्छे होते हैं तब उनके घर बेटी जन्म लेती है इसलिए ऐसा कहा जाता है कि लड़को तो भाग्य से होता है लेकिन बेटी सौभाग्य से होती है। बेटी ह्रदय है बेटी साहस है संगीत है बेटियाँ लोरी हैं, बेटियाँ कुमकुम हैं, सिंदूर हैं, हौसला है, बेटियाँ त्याग हैं, सेवा है, बेटी के बिना इस सृष्टि की कल्पना भी अधूरी है। आज एक बेटी, बेटी के बारे में ही बताएगी, आज की दुनिया में बेटियों के बारे में बोलने के लिए या उनके बारे में बताने के लिए किसी टॉपिक की, किसी कविता, श्लोक की आवश्यकता ही नहीं पड़नी चाहिए। आप लोग बोलते हैं बेटियाँ किसी से कम नहीं है तो इसका मतलब आपके दिमाग में, मन में कहीं न कहीं ये है कि बेटियाँ कम हैं सिर्फ बेटी के ऊपर कोई कविता या श्लोक, शायरी ये सब बोलने से उस व्यक्ति के मन में बेटी के बारे में जो विचार है वो कम या खत्म नहीं होंगे। आज हमें समाज और उनके विचारों को बदलने की जरूरत है। जो लोग सोचते हैं बेटियाँ बेटों से कम हैं बेटियाँ ये नहीं कर सकती बेटियाँ वो नहीं कर सकती क्यों सिर्फ बेटे ही कर सकते हैं बेटियाँ सक बुछ कर सकती हैं आज हर मां को अपनी बेटी को बचाने के लिए हर लड़ाई खुद लड़नी होगी। एक बेटी अपनी मां से बोलती है मां मुझे मत मारो ये सब जमाने वाले तो बोलेंगे इनका काम है बोलना पर मां तुम भी तो एक बेटी हो, दादी, नानी ये सब भी तो एक बेटी ही है इन्हें समझाओ ना मां मुझे मत मारो मां अगर मैं मर गई तो रक्षाबन्धन पर भाई को राखी किससे बन्धवाओगी अगर बेटी ही नहीं रही तो बहू कहा से लाओगी। एक बेटी अपनी मां से बोलती है – मां मैं तुमसे प्यार करूंगी जीवन भर तुम्हारा आभा करूंगी आने दो मुझको भी इस जग में मां मैं भी हूं अंश तुम्हारा कहलाऊंगी वंश तुम्हारा आने दो मुझको भी जग में मां मत भूलो अपने वो दिन कोख में थी तुम भी तो

एक दिन आने दो मुझको भी जग में –

बेटी ये कोख से बोल रही,
माँ कर दे मुझ पे ये उपकार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखन दे संसार।।

बिन मेरे मां तुम भैया को,
राखी किससे बन्धवावोगी।
मरती रही कोख की हर बेटी,
तो बहू कहां से लाओगी।

बेटी है बहन बेटी दुल्हन,
बेटी बिना सूना है परिवार।
बेटी ये कोख से बोल रही,
मां कर दो मुझ पे ये उपकार।

नहीं जानती मैं इस दुनिया को,
मैंने तो जाना है तुझको।
मुझे पता तुझे है फिकर मेरी,
मार नहीं सकती मुझको।

फिर क्यूँ इतनी मजबूर है तू,
मां क्यूं है तू इतनी लाचार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखन दे संसार।

मैं बेटी हूं मैं बेटा नहीं,
क्या मेरा है मां दोष यही।
मैं तो कुदरत की रचना हूं,
तेरा मान बनूंगी बोझ नहीं

तेरी ममता को मैं तरस रही,
मत छीन तू मेरा ये अधिकार।
बेटी ये कोख से बोल रही,
मां कर दे मुझ पे ये उपकार।

अगर मैं ना हुई तो मां फिर तू,
किसे दिल की बात बतायेगी।
मतलब कि इस में मां,
तू घुट-घुट के मर जाएगी।

बेटी ही समझे मां का दिल,
''अंकुश'' करले बेटी से प्यार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखन दे संसार।

बेटी ये कोख से बोल रही,
मां कर दे मुझ पे ये उपकार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखन दे संसार।।

हमारे भारत देश की बेटियाँ किसी से कम नहीं है वो बेटों से भी बढ़कर हैं बेटियों को मत मारो जीवन दो उन्हें पढ़ाओ आगे बढ़ने दो बेटियों को कुछ करने दो उनके पंख मत काटो बेटी तुम्हारा सर शर्म से झुकने नहीं देगी बल्कि अभिमान से ऊपर उठा देगी। भारत की बेटियाँ हमेशा भारत का नाम ऊँचा करेगी और अपने मां-बाप का भी देखों आपके सामने कितने आंखों देखे और सुने हुए उदाहरण हैं -

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई
- ज्यातिबा फुले
- सावित्री बाई फुले
- कल्पना चावला इत्यादि।

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई भी एक बेटी ही थी और उन्होंने अपने झांस के लिए खूब लड़ाई की और अपनी झांसी शहर के लिए अन्तिम क्षण तक जब तक उनके शरीर में प्राण रहे तब तक लड़ीं और दुश्मन के सामने सर नहीं झुकाया आज भी उनका नाम किताबों में है वह भारत की बेटी ही हैं।
- सवित्री बाई फुले भारत की प्रथम महिला थी या बेटी थी जिन्होंने बेटियों को पढ़ाना आरम्भ किया अपनी सोच बदली लोगों ने उनके ऊपर कीचड़ भी उछाला पर वो नहीं रुकी वो भी भारत की बेटी है बेटी बहुत कुछ कर सकती है।
- कल्पना चावला भी भारत की पहली ऐसी बेटी थी जिसने अंतरिक्ष पर उड़ान भरी उनकी यह उपलब्धि केवल बेटियों के प्रति प्रेरणा नहीं बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व की बात है।

बेटियाँ किसी से कम नहीं है वो हर काम कर सकती बेटों से ऊपर हैं आज कल बेटी और इसी के बारे में हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2015 में ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' आन्दोलन की शुरूआत की थी। उन्होंने भारत की सभी बेटियों के लिये ये आन्दोलन चलाया था जिससे कि लोगों की सोच में बदलाव आए और वो अपनी बेटी को पढ़ाएं। क्योंकि कई लोगों का मानना है कि बेटी को नहीं पढ़ाना है बेटी को घर में ही रखना है बेटों को बढ़ाना है पर ऐसा नहीं है आजकल बेटी को पढ़ाना चाहिए जिससे कि वो अपने पैरों पर खड़ी हो सके। आत्म निर्भर बन सके इसलिए आज के जमाने में हमें बेटी को पढ़ाना जरूरी है। आज समाज और उनके विचारों को बदलने की सोच रखनी होगी आज बेटी को अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी कुछ ऐसा करना होगा कि हर मां-बाप गर्व से कहें कि ये मेरी बेटी है या मुझे अपनी बेटी पर गर्व है।

I am not only a girl, I am Doctor.
I am not only a girl, I am Engineer.
I am not only a girl, I am leader of my life.

आज इन बेटियों को पैदा होने से पहले या पैदा होने के बाद कूड़ेदान में, नदियों, नालों में फेंक दिया जाता है उनके बारे में चार पंक्ति - मां,मां,मां,मैं भी जीना चाहती हूँ मैं भी तुम्हारे आंचल में सांस लेना चाहती हूँ मैं तुम्हारी ममता की छांव में रहना चाहती हूँ मैं भी तुम्हारी गोद में सोना चाहती हूँ मां मैं भी तो तुम्हारा ही अंश हूँ फिर तुम कैसे मुझे खुद से अलग कर सकती हो माँ तुम भी तो एक माँ की बेटी हो फिर ऐसा क्यूं माँ, माना कि तूने ये खुद से ना चाहा विवश थी तू औरों के हाथों पर थोड़ी सी तो हिम्मत करती माँ तो आप मैं भी जी पाती या फिर मार दिया तूने ये सोच कर कि जो कुछ सहा है तूने आज तक वो कुछ सहना ना पड़े मुझको क्या बेटी होना ही मेरा कसूर है, जो तू भी मुझे अपने से दूर करना चाहती है जब तू ही मेरी अपनी नहीं रही तो कौन मेरा होगा इस दुनिया में क्यूं तू मेरे जज्बातों को कुचल देना चाहती है क्यूं जिंदगी देने से पहले ही मार देना चाहती है माँ क्यूं मेरा कसूर क्या है क्या बेटी होना ही मेरी सबसे बड़ी सजा है मुझे भी तो इस दुनिया में आने दो मुझे एक मौका तो दो मैं जिंउदगी की हर-हर लड़ाई लड़ के दिखाऊँगी उस पर जीत कर दिखाऊँगी मुझे एक मौका तो दो माँ। मैं उन मां-बाप को लक्ष्य करके कहना चाहती हूँ जो अपनी बेटियों को आगे बढ़ने नहीं देते कुछ करने नहीं देते पहले से ही उनके पंख काट देते हैं उनकी इस गलत सोच को शिकार हो जाती है बेटियाँ और उनके आगे बढ़ने के कदम को रोक लेते हैं ये सोचते हैं कि बेटियाँ सिर्फ चूल्हे चौके के लिए ही बनी ऐसा नहीं है बेटियों को मत रोको उन्हें उड़ान भरने दो वो तुम्हारा सर गर्व से ऊँचा करेगी। ये आजाद भारत है पर यहां लोगों की सोच बेकार है बेटियाँ ही आजाद नहीं हैं तो ऐसे आजाद भारत का कोई फायदा नहीं। बेटियों को खूब पढ़ाओ आगे बढ़ने दो।

आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश में हिन्दी

साक्षी जैन
बी.कॉम.तृतीय वर्ष

1. प्रस्तावना :– भारत एक ऐसा देश है जिसमें अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाषा के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। म.प्र. उस रॉकोट के समान निरन्तर विकास के पथ पर बढ़ता जा रहा है। जो कि आकाश को मोदता हुआ अपनी मन्जिल पर पहुंचता है दूसरे शब्दों में कहे तो म.प्र. एक आत्मनिर्भर राज्य है जिसको विकसित करने के लिए किसी सहारे की जरूरत नहीं है जब 1947 ई. में हमारा देश व राज्य आजाद हुआ तब हर भारतीय व्यक्ति की आंखों में आत्मनिर्भरता दिखाई दी। आज हर व्यक्ति आत्मनिर्भर है। आज व्यक्ति अपने आत्मनिर्भरता से चांद को छू सकता है और म.प्र. की आत्म निर्भरता तक पहुंचने के लिए 5 स्तम्भों तक पहुंचने चाहिए या जरूरी है मांग, बढ़ती जनसंख्या, ढांचा, तकनीकी, अर्थव्यवस्था।

हिन्दी संस्कृत की बेटी, छत्तीसगढ़ की माता हिन्दी म.प्र. की भाग्यरेखा, अपनी एक पहचान हिन्दी

2. आत्मनिर्भरता में हिन्दी भाषा का योगदान :– म.प्र. एक ऐसा राज्य है जो अपनी भाषा का परहम विश्व तक लहरा चुका है हिन्दी एक ऐसी भाषा जो कि एक ऐसी भाषा है जिसको सुनने व बोलने वाला व्यक्ति एक लगाव महसूस करता है वर्तमान समय में हमारा राज्य अत्यधिक प्रगति कर चुका है किन्तु इसमें हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है आज हम इतिहास पृष्ठों को पलटकर देखें तो स्वामी विवेकानन्द जी ने जब शिकांगो में अपना भाषण दिया जो कि सम्पूर्ण हिन्दी में था जिसे सुनकर तालियों की गड़–गड़ाहट रूकने का नाम ही नहीं ले रही थी आत्मनिर्भर का आधार म.प्र. की भाषाओं का परहम विश्व में लहराया है अर्थात् मातृभाषा का परित्याग करके हिन्दी भाषा की उपासना कर हम पूर्णतया आत्मनिर्भर नहीं बन सके।

''भारत का सम्मान है हिन्दी
भारतीयों की पहचान है हिन्दी''

3. आत्मनिर्भर म.प. में हिन्दी की भूमिका :– म.प्र. में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। म.प्र. भारत की भाग्यरेखा कहलाने वाला राज्य है जो की धीरे–धीरे अपने प्रयासों से आत्मनिर्भर हुआ है। मध्यप्रदेश राज्य में हिन्दी राजकीय और सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। मध्यप्रदेश व्यापार का प्रमुख केन्द्र जो कि अन्य भाषाओं को छोड़कर हिन्दी भाषा सर्वोपरि बनती जा रही है जिसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करे। विकास के पहिए पर म.प्र. बढ़ रहा है किन्तु अंग्रेजों की ज्वारा दूर–दूर तक नहीं है। अत: मध्यप्रदेश देश की भाग्यरेखा अपनी भाषा, संस्कृति की नींव पर आत्मनिर्भर राज्य बना है जो वास्तव में हर राज्य सभी सम्मान अपने पैरों पर स्तम्भ खड़ा करके रखा है।

मध्यप्रदेश की जान है हिन्दी
मध्यप्रदेश की शान है हिन्दी

4. निष्कर्ष :– मध्यप्रदेश अपने आप में आत्म–निर्भर है म.प्र. हिन्दी भाषा की शान है और इस पर हमें गर्व है म.प्र. आज बड़ी ऊँचाई पर पहुंच गया है इसमें अपनी संस्कृति, सभ्यता और भाषा में विश्व में प्रसिद्ध है दूसरे शब्दों में म.प्र. एक आत्म निर्भर राज्य है तथा म.प्र. में जनसंख्या वृद्धि भी हो रही है हिन्दी भाषा को संस्कृत की बेटी कहा है। और हिन्दी को छत्तीसगढ़ की माता कहा है और हिन्दी को मध्यप्रदेश की भाग्यरोखा कहा है और हमारी पहचान है हिन्दी। म.प्र. निरन्तर विकास की ओर बढ़ रहा है। अत: मध्यप्रदेश एक आत्मनिर्भर राज्य है।

महारानी लक्ष्मीबाई

दीपा विश्वकर्मा
बी.एस.सी.बायो प्रथम वर्ष

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं सच्चा वीर कभी आपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार और उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थी वीरांगना लक्ष्मीबाई।

महरानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के वाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थी।

इधर सन् 1838 में गंगाधर राव को झांसी का राजा घोषित किया गया। वे विधुर थे। सन् 1850 में मनुबाई से उनका विवाह हुआ सन् 1851 में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। झांसी के कोने-कोने में आनन्द की लहर प्रवाहित हुई, लेकिन चार माह पश्चात उस बालक का निधन हो गया।

सारी झांसी शोक सागर में निमग्न हो गई। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवम्बर 1853 को चल बसे। यद्यपि महाराजा का निधन महारानी के लिए असहनीय था, लेकिन फिर भी वे घबराई नहीं, उन्होंने विवेक नहीं खोया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवन काल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया।

27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तक पुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पोलेटिकल एजेंट की सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी 7 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ। झांसी की रानी में पेंशन अस्वीकृत कर दी व नगर के राजमहल में निवास करने लगी।

यही से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंग्रेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नबाव और राजे-महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी। रानी लक्ष्मीबाई को अधिक सुलगाया तथा अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई।

नबाव वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजी मुल्ला शाहगढ़ के राजा वानपुर के मर्दनसिंह और तात्या तोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे। महारानी लक्ष्मीबाई ने बड़े धैर्य, कुशलता के साथ संघर्ष किया।

भारत की जनता में विद्रोह की ज्वाला भभक गई। समस्त देश में सुसंगठित और सुदृढ़ रूप से क्रांति को कार्यान्वित करने की तिथ 31 मई 1857 निश्चित की गई लेकिन इससे पूर्व ही क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित हो गई और 7 मई 1857 को मेरठ में तथा 4 जून 1857 को कानपुर तो 28 जून 1857 को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजों के कमांडर सर ह्यूरोज ने अपनी सेना को सुसंगठित कर विद्रोह दबाने का प्रयत्न किया।

उन्होंने सागर, गढ़ाकोटा, शाहगढ़, मदनपुर मउखेड़ा, वानपुर और तालवेहट पर अधिकार किया और नृशंसतापूर्ण अत्याचार किए। फिर झांसी की ओर अपना कदम बढ़ाया और अपना मोर्चा कैमासन पहाड़ी के मैदान में पूर्व आर दक्षिण के मध्य लगा लिया।

लक्ष्मीबाई पहले से ही सतर्क थीं और वानपुर के राजा मर्दनसिंह से भी इस युद्ध की सूचना तथा उनके आगमन की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। 23 मार्च 1858 को झांसी का ऐतिहासिक युद्ध आरम्भ हुआ। कुशल तोपची गुलाम गौस खां ने झांसी की रानी के आदेशानुसार तोपों के लक्ष्य साधकर ऐसे गोले फेंके कि पहली बार में ही अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गये।

रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी-सी सशस्त्र सेना से अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। रानी ने खुले रूप से शत्रु का सामना किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया।

वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो, अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। बहुत दिन तक

युद्ध का क्रम इस प्रकार चलना असंभव था। सरदारों का आग्रह मानकर रानी ने कालपी प्रस्थान किया। वहां जाकर वे शांत नहीं बैठी। उन्होंने नाना साहब और उनके योग्य सेनापति तात्या टोपे से संपर्क स्थापित किया और विचार–विमर्श किया। रानी की वीरता और साहस को लोहा अंग्रेज मान गए लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शौर्य का प्रदर्शन किया।

कालपी में महारानी और तात्या टोपे ने योजना बनाई और अंत में नाना साहब, शाहगढ़ के राजा वानपुर के राजा मर्दन सिंह आदि सभी ने रानी का साथ दिया। रानी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। विजयोल्लास का उत्सव कई दिनों तक चलता रहा लेकिन रानी इसके विरूद्ध थीं। यह समय विजय का नहीं था, अपनी शक्ति को सुसंगठित कर अगला कदम बढ़ाने का था।

डलहौजी की राज्य हड़पने की नीति की वजह से ब्रितानी राज्य ने दामोदर राव बालक को दत्तक पुत्र मानने से मना कर दिया और झांसी को ब्रितानी राज्यों में मिलाने का फैसला किया। उस समय रानी ने ब्रितानी राज्य वकील जान लैंग से परामर्श किया और लन्दन की अदालत में मुकदमा दायर किया। मुकदमे में बहुत बहस की गई और अंत में मुकदमे को खारिज कर दिया गया। ब्रितानी राज्य के अधिकारियों ने राज्य के खजाने को जब्त कर लिया और रानी लक्ष्मीबाई के पति के कर्ज को रानी के सालाना खर्च में से काट लिया गया। इसके साथ रानी को झांसी का किला छोड़कर रानी महल में जाकर रहना पड़ा था। लेकिन फिर भी रानी लक्ष्मीबाई ने हर कीमत पर झांसी राज्य की रक्षा करने का फैसला कर लिया था।

सेनापति सर ह्यूरोज अपनी सेना के साथ संपूर्ण शक्ति से रानी का पीछा करता रहा और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब उसने ग्वालियर का किला घमासान युद्ध करके अपने कब्जे में भी अपनी कुशलता का परिचय देती रही। 18 जून 1858 को ग्वालियर का अंतिम युद्ध हुआ और रानी ने अपनी सेना का कुशलता से नेतृत्व किया। वे घायल हो गई और अंतत: उन्होंने वीरगति प्राप्त की। रानी लक्ष्मी बाई ने स्वातंत्र्य युद्ध में अपने जीवन की अंतिम आहुति देकर जनता जनार्दन को चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया।

वायु प्रदूषण

नम्रता राय
एम.एस.सी.तृतीय सेमेस्टर

मानव द्वारा पृथ्वी पर फैलाए गए प्रदूषण के कारण मानव को ही नित नए–नए रोगों से सामना करना पड़ता है। दिन प्रति दिन पर्यावरण की ताजी हवा विविक्त, जैविक अणुओं और अन्य हानिकारक सामग्री के मिलने के कारण प्रदूषित हो रही है। वायु प्रदूषण प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है जिस पर ध्यान देने के साथ ही सभी के सामूहिक प्रयासों से सुलझाने की आवश्यकता है। इस लेख में हम वायु प्रदूषण के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा करेंगे। वायु प्रदूषण प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों में से एक है। वायु प्रदूषण के कारण ओजोन परत भी बहुत अधिक प्रभावित हो रही है। मनुष्य की हमेशा बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण उनकी आवश्यकता में भी वृद्धि हो रही है जो प्रदूषण का मुख्य कारण है। मनुष्य की दैनिक गतिविधियाँ बहुत से खतरनाक रसायनों, वातावरण को गंदा करने का कारण होती है जो जलवायु में नकाराज्मक परिवर्तन के लिये मजबूर करती है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में कई हानिकारक गैसों, कणों, पेंट और बैट्रियों का आक्रामक संचालन, सिगरेट आदि कार्बन मोनो ऑक्साइड, परिवहन के साधन कार्बन डाई ऑक्साइड और अन्य जहरीली पदार्थो को वातावरण में छोड़ते हैं। सभी तरह के प्रदूषण पर्यावरण से जुड़े हुए हैं, जो ओजोन परत को हानि पहुंचाकर सूर्य की हानिकारक किरणों पर पृथ्वी पर आमंत्रित करते हैं। वायु प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिये हमें दैनिक आधार पर अपनी क्रियाकलापों में बड़े स्तर पर परिवर्तन लाने होंगे। हमें वायु प्रदूषण के प्रभावों को कम करने के लिए पेड़ों को नहीं काटना चाहिए, सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग करना चाहिए, छिड़काव करने वाली केनों को वर्जित करना चाहिए जो वातावरण को प्रदूषित करने वाले तत्वों को रोकने में सहायक हो। वायु पृथ्वी पर जीवन का एक आवश्यक तत्व है। इसी से प्राणियों एवं जीव–जंतुओं को ऑक्सीजन प्राप्त होती है जो जीवन का आधार है और इसी से वनस्पति को कार्बन–डाई–ऑक्साइड मिलती है जिससे उसका पोषण होता है। वायुमण्डढल एक कम्बल के समान है, जिसके न होने से तापमान अधिक या अति न्यून हो जाएगा। वायु मण्डल ही हमारी अल्ट्रावायलेट किरणों से रक्षा करता है और उल्काओं को जलाकर नष्ट कर देता है। वास्तव में उपस्थित गैसों पर बाहरी प्रभाव प्राकृतिक अथवा मानवीय ही वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है। हमारी पृथ्वी के वातावरण विभिन्न प्रकार की गैसों से बना हुआ है, जिसमें मानव एवं अन्य सजीव जीव–जंतुओं के जीवन के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, जो कि वातावरण में लगभग 24 प्रतिशत है। लेकिन धीरे–धीरे पृथ्वी में हो रहे बदलाव के कारण ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है, इसके कई प्रकार की विषैली गैसें धुल रही हैं। साधारण शब्दों में कहे तो स्वच्छ वायु में रसायन, सूक्ष्म पदार्थ, धूल, विषैली गैसें, जैविक पदार्थ, कार्बन डाइ ऑक्साइड आदि के कारण वायु प्रदूषण होता है।

आप भले तो जग भला

कुमकुम असाटी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष बायलॉजी

एक विशाल कांच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ एक कुत्ता घुस गया। हजारों कांच के टुकड़ों में शक्ल देखकर वह चौंक गया। वह समझा कि ये सब हमला करें और मुझे मार डालेंगे। कुत्ता अपनी शान के प्रदर्शन के लिए भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखाई देने लगे। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आने लगी। उसको घबराहट होने लगी, तो वह और जोर-जोर से भौंकने लगा। सब कुत्ते भी और जोर-जोर से भौंकते दिखाई दिए। आखि रवह उन कुत्तों पर झपटा। जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया, अंत में चक्कर खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में दूसरा कुत्ता गया। उसे भी हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह डरा नहीं, प्यार से उसने पूंछ हिलाई तो सभी कुत्तों की भी पूंछ हिलती दिखाई दी। वह बहुत प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश होकर आगे पूंछ हिलाते चला गया।

जब मैं अपने मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ, तब इसी किस्से का स्मरण करता हूँ। इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं। ''दुनिया कांच के महल जैसी है'' अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। ''आप भले तो जग भला और आप बुरे तो जग बुरा'' अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ही ओर ध्यान देते हैं, तो दुनिया भी आप से नम्रता और प्रेम से बर्ताव करेगी। अगर आप हमेशा ही लोगों में अवगुण देखते हैं। उन्हें शत्रु समझते हैं, उन्हें कुत्तों की तरह भौंका करते हैं, तो फिर वे क्यों न आपकी ओर दौड़ेंगे।

अंग्रेजी में एक कहावत है, कि अगर आप हंसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी। लेकिन अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है, तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही सही होगा।

पर्यावरण

रूकमन अहिरवाल
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

मेरी सांसों से तेरी सांसें हैं, बस कहना है येही बात मुझे
मुझसे ही तेरी जीवन है, मत काट मुझे, मत काट मुझे
हम जैसे-जैसे कम हुई धरा से, कम हो गई तेरी आयु
तुम जैसे-जैसे मुझे काटे, प्रदूषित हो गई वायु
हवा विषैली हो रही है, पानी कम पड़ जायेगा
आने वाली नस्लों की सोचो, वो कैसे जी पायेगा
अपना न सही अपनों के लिए, सुननी होगी मेरी बात तुझे
मुझसे ही तेरी जीवन है, मत काट मुझे, मत काट मुझे
अगर हम नहीं होंगे धरा पर जीना मुश्किल हो जायेगा
हर जीव का हमसे नाता, हाहाकार मच जायेगा
अगर हम यूं ही कटते रहे, धरती बंजर हो जायेगी
फिर कैसे तरी भूख मिटेगी, फिर दुनियाँ क्या खायेगी
धरती का श्रृंगार है हमसे, जीवन का अधार है हमसे
मनव मुझको मित्र बना ले, दे दोस्ती का हाथ मुझे
मुझसे ही तेरा जीवन है, मत काट मुझे, मत काट मुझे।

देश भक्ति गीत

ममता पटैल
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष

हम युग का निर्माण करेंगे यह
संकल्प हमारा है। 2
अब नवयुग की गंगोत्री से वही
ज्ञान की धारा है।
हम युग का निर्माण करेंगे ....
धरती के कोने-कोने में
गली-गली में जायेंगे। 2
तपी हवाओं से मुरझाई कली-कली
विकसायेंगे, अंधकार कितना भी हो पर
सूरज कभी न हारा है । 2
हम युग का ....
गुरूसत्ता ने थकी मनुजता को
नूतन विश्वास दिया । 2
पतितों के उद्धार के लिए उसने सदा प्रयास किया
आज असरुता के विनाश को
चमका यही दुधारा है,
हम युग का निर्माण ....

संत की वाणी

सोनम नेमा
एम.ए.हिन्दी प्रथम सेमेस्टर

निर्धन कहे धनवान सुखी।
धनवान कहे सुख राजा को भारी।।

राजा कहे चक्रवर्ती सुखी।
चक्रवर्ती कहे सुख इन्द्र को भारी।।

इन्द्र कहे श्री राम सुखी।
श्री राम कहे सुख संत को भारी।।

संत कहे संतोष में सुख है।
बिना संतोष दुनिया दुखारी।।
संकलित अंश

"शिक्षा"

राधा अहिरवाल
बी.ए.प्रथम वर्ष

शिक्षा जान लैयो रे शिक्षा मन लैयो रे
जीवन राम भजन के लाने शिक्षा लैयो रे
वाल्मीकि जी कथा सुनाये सून रये नर और नारी रे।
राजतिल्क की भई तैयारी कैकई बात
बिगड़ी शिक्षा जान लैयो रे शिक्षा मान लैयो
रे जीवन राम भजन के लाने शिक्षा लैयो रे
पिता की आज्ञा मान राम ने वन की
करी तैयारी आजकल तो अपने पिता की
सनमुख दे गारी रे
शिक्षा जान लैयो रे शिक्षा मन लैयो रे
जीवन राम भजन के लाने शिक्षा लैयो रे
भाई को वन मे जात देख के लक्ष्मण
ने कारी तैयारी रे
आज–काल तो भाई–भाई मे चले मुकदमा भारी रे
प्ति की वन में जात देख के सीता ने करी तैयारी रे
आजकल तो अपने पति खो धोखा दे रई नारी रे
शिक्षा जान लैयो रे शिक्षा मन लैयो रे
जीवन राम भजन के लाने शिक्षा लैयो रे
वाल्मीकि जी कथा सुनाये सून न रये नर और नारी रे।

गीत

आयुषी जैन
एम.एस.सी.फिजिक्स तृतीय सेमेस्टर

चली हवा पश्चिम की जब से
हम भूल गये परवैया को
जाने किसकी नजर लगी है
हमरी सोन चिरैया का।
कोसों दूर समर्पण में हम, बड़ों का आदर भूल गये
कविरा ने जो सौपी हमको, वो झीनी चादर भूल गये
शहर में आकर भूल गये हम
गांव के प्यारे भैया को।
जाने किसकी – – – – – – – –
जात–पात में बंटकर हमने, अपनी ही लड़ काटी है।
लोकतंत्र में भूखा सोना, यह कैसे परिपाटी है
गड़े जा रहे महल–अटारी, छोड़ के प्रीत मटैया को।
जाने किसकी – – – – – – – –
जन–गण–मन हिंदी की जय–जय
बस नारों में रह जाती है।
परभाषा के महाज्वार में हिंदी क्यों बह जाती है।
भाषा रिश्तों को खोया है
हमने आज रूपैया में।
जाने किसकी – – – – – – – –

नशा एक अभिशाप

आलिया बानो
बी.कॉम.द्वितीय वर्ष

रूपरेखा

(1) प्रस्तावना
(2) नशे की लत का अर्थ
(3) नशाखोरी के कारण
(4) भारत में नशा और युवा वर्ग
(5) नशे का मानव जीवन पर दुष्प्रभाव
(6) युवाओं को नशे से दूर रखने के उपाय
(7) उपसंहार/निष्कर्ष

''जन जन का यही संदेश,
नशा मुक्त हो अपना देश''

(1) प्रस्तावना :– किसी भी देश का भविष्य उस देश के युवाओं पर निर्भर करता है। युवाओं का नशा मुक्त होना ही देश की एक बड़ी सफलता मानी जाती है। युवा यदि चाहें तो अपनी कड़ी मेहनत और लगन से अपने साथ–साथ अपने देश का भविष्य एवं विकास को आसमान की बुलन्दियों तक पहुंचा सकता है। देश को सफल बनाने में देश युवाओं का ही योगदान होता है।

''नशा जो करता है इन्सान, बन जाता वो हैवान,
ना रहती इज्जत उसकी ना रहता धर्म ईमान।''

(2) नशे की लत का अर्थ :– यह एक ऐसी बुराई है जो व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर से खोखला कर देती है। नशे कई तरह के होते हैं। जिसमें शरबा और ड्रग्स मुख्य है। देश की आबादी का लगभग 70 से 75 प्रतिशत युवा ये नशा करता है। देश में प्रत्येक 3 में से 1 व्यक्ति इसका शिकार बन चुका है। सरल शब्दों में जब कोई व्यक्ति किसी नशीली चीज का सेवन बार–बार या रोज करता है तो वह उस चीज का आदि हो जाता है।

''नशा एक अभिशाप है फिर भी
लोग इसमें बढ़–चढ़कर भाग लेता है।''

(3) नशाखोरी के कारण :– इसके कई कारण हो सकते हैं इसका प्रमुख कारण तनाव को माना जाता है। आजकल व्यक्ति तनाव को दूरे करने के लिये इसका सेवन करते हैं। क्यूंकि ये तुरंत आनंद देता है तथा जल्दी ही तनाव मुक्त कर देता है। आज के समय में बच्चे भी इसके आदी हो चुके हैं। किशोरावस्था में जो बच्चे हैं। उन्हें इसका उपयोग करना अच्छा लगता है तथा व्यक्ति अपनी निजी जिन्दगी से परेशान होकर इसका सेवन शुरू करदेता है। इसके और भी कई कारण हैं तथा प्रकार हैं।

''नशे का पास बुलाओगे तो
अपनी मौत को गले लगाओगे।''

(4) भारत में नशा और युवा वर्ग :– भारत को सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश माना गया है। परन्तु भारत देश की लगभग 70 से 75 प्रतिशत युवा नशे के आदि होते जा रहे हैं। इसके साथ साथ ये अपना ही नहीं बल्कि देश के भविष्य को भी दाव पर लगा रहे हैं। देश में वर्तमान में 12 करोड़ से भी ज्यादा लोग नशा कर रहे हैं। जिसमें से 20 प्रतिशत महिलायें भी इसमें शामिल हैं। सिर्फ युवा ही नहीं बल्कि बच्चे, वृद्ध, महिलायें, शिक्षित, अशिक्षित, अमीर, गरीब सभी व्यक्ति नशे के आदि हो चुके हैं।

''सब मिलकर इतनी जन–जागरूकता फैलायें,
नशे के कारण फिर किसी का घर चिराग न बुझने पाये।''

(5) नशे का मानव जीवन पर दुष्प्रभाव :– नशा बुह ही बुरी चीज है। इससे पीड़ित व्यक्ति ही इसके बारे में सटीक टिप्पणी कर

सकता है। व्यक्ति दिन राम मेहनत करके जो कमाता है। उस पैसे से वह पल भर की मौज में उड़ा देता है। इससे कई घरों में चूल्हे नहीं जल पाते। इससे पारिवारिक हानि के साथ-साथ देश को भी हानि होती है। सामाजिक तथा आर्थिक तंगी जैसे दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं। नशे की हालत में गाड़ी चलाकर एक्सीडेंट करना ये आम बात हो गयी है। नशे की हालत में व्यक्ति अपने परिवार की महिलाओं के साथ मारपीट तथा अन्य महिला के साथ योन शोषण तक कर देता है।

''सबकी है यही पुकार,
नशे का करो बहिष्कार।''

(6) युवाओं को नशे से दूर रखने के उपाय :- युवाओं को नशे से दूर रहन के लिये अपने आपको तनाव मुक्त रखना होगा तनाव से दूर रहने के कई तरीके हैं। जिसमें शिक्षा तथा खेलकूद प्रमुख हैं। माता-पिता को यह बात का विशेष यान रखना चाहिये कि उनके बच्चे की संगत कैसी है। अच्छी संगत तथा अच्छे संस्कार व्यक्ति को नशे जैसी चीजों से दूर रखते हैं। व्यक्ति को अपने बच्चों के साथ मित्र की तरह बर्ताव करना चाहिए जिससे बच्चे तनाव मुक्त रहें और नशे से दूर रहें।

''नशे को बढ़ावा
अपनी मौत को बुलावा।''

(7) उपसंहार :- एक तरफ ये देश के युवाओं की जवानी को दीमक की तरह चाट रहा है। वहीं दूसरी तरफ ये सामाजिक सुरक्षा तथा विकास पर भी हावी हो रहा है। अत: देश की सरकार को अपने राजस्व की लालच छोड़कर देश से नशीले पदार्थों को बाहर फेंक निकालना चाहिये। इससे सिर्फ व्यक्ति को ही नहीं देश को भी नुकसान हो रहा है। महिला स्मोकर्स के मामले में देश दूसरे नम्बर पर है। नशा करने वाले व्यक्ति की न घर में और न ही समाज में इज्ज़त रहती है। नशे के आनंद में वह अपना सम्पूर्ण जीवन दांव पर लगाता है।

''कुछ पल का नशा सारी उम्र सजा।''

हेलमेट पहनने के लिए

रितु लोधी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

- उधारी वाले नहीं पहचान पाते।
- दुश्मन नहीं पहचान पाते।
- पुलिस परेशान नहीं करती।
- गंजापन छुपा सकते हो।
- घर वापसी के समय उल्टा करके आलू-प्याज-टमाटर रख लो।
- चश्में की कोई जरूरत नहीं।
- किसी को नमस्ते करने की जरूरत नहीं
  क्योंकि करोगे तो पहचानेगा नहीं।
- गाड़ी बिगड़ने पर उसे स्टूल बना लो।
- आपत्तिकाल में यमराज भी नहीं पहचान पएगा और
  आपको छोड़कर आगे बढ़ जाएगा। और कितने फायदे लोगे ..... ?

कम से कम अब तो हेलमेट पहन लो
ये बोझ नहीं आपकी सुरक्षा के लिए है
।। हेलमेट पहनिये, सुरक्षित चलिए ।।

स्वच्छ भारत अभियान

महिमा राठौर
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना निकाली है, जिसका नाम 'स्वच्छ भारत अभियान' रखा गया है। इस अभियान के तहत सभी देशवासियों को इसमें शामिल होने के लिए कहा गया है।

यह अभियान अधिकारिक रूप से 1999 से चल रहा है, पहले इसका नाम 'ग्रामीण स्वच्छता अभियान' था, लेकिन 1 अप्रैल 2012 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस योजना में बदलाव करके इस योजना का नाम 'निर्मल भारत अभियान' रख दिया और बाद में सरकार ने इसका पुर्नगठन करते हुए इसका नाम पूर्ण 'स्वच्छता अभियान' कर दिया था। स्वच्छ भारत अभियान के रूप में 24 सितंबर 2014 को केन्द्रीय मंत्रीमंडल से इसको मंजूरी मिल गई।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत

स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गांधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को किया। उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। साफ–सफाई के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है। क्योंकि गांधी जी का सपना था, कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ और निर्मल दिखाई दे। इस बात को मध्य नजर रखते हुए प्रधानमंत्री जी ने उन्हीं के जन्मदिवस पर इस अभियान की शुरूआत दिल्ली के राजघाट से की थी। देश की सफाई एकमात्र सफाईकर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है।

क्या इसमें नागरिके ां की कोई भूमिका नहीं है, हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।

(.......... नरेन्द्र मोदी)

स्वच्छ भारत से जुड़ा महात्मा गांधी जी का सपना

महात्मा गांधी जी ने भारत को एक निर्मल और स्वच्छ देश बनाने का सपना देखा था। अपने सपने के संदर्भ में गांधी जी ने कहा था कि स्वच्छता स्वतंत्रता से भी ज्यादा जरूरी है, क्योंकि स्वच्छता ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का एक अनिवार्य भाग है।

स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान के मुख्य उद्देश्य के लक्ष्य को पाने के लिए 5 साल की योजना बनाई है। जिसके अंतर्गत हमारे पूरे देश को स्वच्छ करने का लक्ष्य लिया गया है।

(1) इस अभियान का प्रथम उद्देश्य है कि देश का कोना–कोना साफ सुथरा हो।
(2) लोगों को बहर खुले में शौच करने से रोका जाए।
(3) भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घरों में शौचालय का निर्माण किया जाये।
(4) हर एक गली में कम से कम एक कचरा पात्र आवश्यक रूप से लगाया जाये।

डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

रूपाली जैन
एम.एस.सी.तृतीय सेमेस्टर

ना जाने क्यों कुछ हीरे ही मिलते हैं,
कोयले की खदानों में।
जो परिपाटी को तोड़ते हैं,
लाते हैं बदलाव जमाने में।

ऐसी ही शख्सियत के धनी थे और हैं,
क्योंकि वे राज करते आज भी हर दिल में,
उनके पुरूषार्थ से सब अचंभित हैं,
खिले थे कभी कमल की तरह कीचड़ में।

देश को मिसाइल की सौगात उन्होंने ही दी है।
लगा दिया पूरा दमखम अपने इस कृत में।
वैज्ञानिक ही, नहीं आदर्शो की पुस्तक कह सकते हैं,
अपने संदेशों से बदलाव लाए वे कई जीवन में,
हर क्षेत्र में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है
परिश्रम, सूझबूझ, मानवता का अनुपम ज्ञान दिया है।

प्रगति की राह पर विज्ञान

ऋतु जैन
एम.एस.सी. फिजिक्स तृतीय सेमेस्टर

किसी ने सोचा न था कभी,
आज हम पैदल चल रहे हैं।
एक दिन ऐसा भी आएगा,
लेग हवा में उड़ पाएंगे।
यह सब कुछ ही तो,
है विज्ञान के आविष्कार।

प्रयास हर प्रकार के किए जा रहे हैं,
लोग अंतरिक्ष में जा रहे हैं।
दूसरी दुनिया खोज रहे हैं,
नए आविष्कार हो रहे हैं।
यह और कुछ नहीं,
सिर्फ हैं विज्ञान के आविष्कार।

शिक्षा हो चुकी है उन्नत,
सब आज इंटरनेट पर चल रहा है।
घंटों का काम अब,
मिनटों में होने लगा है।

इंसान के बिना विज्ञान,
विज्ञान के बिना इंसान अधूरा है।
विज्ञान का मतलब,
समाज में फैले रूढ़िवाद को खत्म करना है।

विज्ञान इस समाज,
इस दुनिया की आत्मा है।
विज्ञान के बगैर प्रकृति अधूरी है।

राष्ट्रीय चरित्र

रजनी लोधी
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

किसी महान ऋषि का कथन है धन गया कुछ नहीं गया स्वास्थ्य गया कुछ गया चरित्र गया तो सब कुछ गया व्यक्ति को महान उसका चरित्र बनाता है खराब चरित्र मनुष्य को गर्त में ढकेल देता है प्राचीन समय में मनुष्यों में ईमानदारी परोपकार एवं चरित्र परिश्रमी,सत्य निष्ठा गुण पाये जाते थे। किन्तु वर्तमान में इन गुणों के अभाव के कारण अच्छे राष्ट्र निर्माण का सपना बिखरता जा रहा है।

राष्ट्र चरित्र का निर्माण अच्छी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। पूर्व में विद्यार्थियों को संत महत्वपूर्ण व्यक्तियों, ऋषियों के चरित्र को बताया जाता था। जिससे वे अपने चरित्र को बेहतर कर राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान देते थे। किन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दोषों के कारण चरित्र सुदृढ़ न होने के कारण विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में पूर्व योगदान नहीं दे पा रहे हैं। राष्ट्र और उसके चरित्र को सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है किस राष्ट्र के चरित्र का निर्माण उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों की चरित्र से होता है उसी प्रकार किसी राष्ट्र का चरित्र उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों के चरित्र को ऊपर उछला निर्माण किया जा सकता है।

ओजोन परत

दीक्षा सेन
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

''ओजोन को मत होने दो कष्ट वरना प्रकृति हो जायेगी नष्ट।''
''ओजोन परम पृथ्वी का रक्षक है बीमारियों से बचाने का कवच है।''

रूपरेखा :–

(1) प्रस्तावना
(2) ओजोन परत का निर्माण
(3) पृथ्वी का सुरक्षा कवच ओजोन परत
(4) ओजोन परत में छिद्र
(5) ओजोन परत के क्षरण का कारण
(6) ओजोन परत के संरक्षण हेतु प्रयास
(7) ओजोन परत के क्षरण के प्रभाव
(8) उपसंहार

विवरण

प्रस्तावना :– ओजोन परत पृथ्वी के वायुमंडल की एक परत है जिसमें ओजोन गैस की सघनता अपेक्षाकृत अधिक होती है। ओजोन परत के कारण ही धरती पर जीवन संभव है।

क्योंकि ओजोन की परत सूर्य से हामरे पृथ्वी पर आने वाले हानिकारक पराबैंगनी किरणों को पूरी तरह से अवशोषित कर लेती है और उन्हें पृथ्वी के अन्दर आने से रोकती है।

ओजोन परत के इसी फायदे की वजह से हमारा पृथ्वी पर आज जीवन पनप रहा है।

ओजोन परत का निर्माण :– ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों के कारण निर्मित होती है। यह पराबैंगनी किरणें जब ऑक्सीजन के अणु पर पड़ती है तब यह ऑक्सीजन के दो परमाणुओं को अलग–अलग कर देती हैं। जब ये दोनों परमाणु अलग हो जाते हैं तो यह ऑक्सीजन के दूसरे अणु से मिलकर ओजोन का निर्माण करते हैं।

ओजोन परत की मोटाई भौगोलिक दृष्टि और मौसम के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। ओजोन परत की खोज वर्ष 1913 में फ्रांस के भौतिकविद फैबरी–चार्ल्स और हेनरी बुसोन ने की थी।

पृथ्वी का सुरक्षा कवच ओजोन परत :– ओजोन परत को पृथ्वी का सुरक्षा कवच कहा जाता है। लेकिन पृथ्वी पर लगातार बढ़ रहे प्रदूषण के कारण इस कवच की मोबई धीरे–धीरे कम होती जा रही है। जैसा कि स्पष्ट है कि ओजोन का एक अणु ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं से मिलकर बना होता है। इसका रंग हल्का नीला होता है और इसमें एक विशेष प्रकार की गंध आती है। भूतल से लगभग 50 किमी. तक की ऊँचाई पर वायुमण्डल में ऑक्सीजन हीलियम ओजोन और हाइड्रोजन गैस की परतें पाई जाती हैं। जिसमें ओजोन पृथ्वी के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती है यह परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी पर मानव जीवन की रक्षा करती है।

ओजोन परत में छिद्र :– ओजोन परत के क्षरण की जानकारी सर्वप्रथम वर्ष 1960 में मिली थी। एक अनुमान के अनुसार वायुमण्डल में ओजोन की मात्रा प्रतिशत 0.5 प्रतिशत की दर से कम हो रही है।

- वर्ष 1985 में वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया कि अण्टार्कटिका महाद्वीप के ऊपर ओजोन परत में छिद्र हो गया है और यह लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे अण्टार्कटिका के ऊपर वायुमण्डल में ओजोन की मात्रा 20–30 प्रतिशत कम हो गई है।
- अण्टार्कटिका के अतिरिक्त ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि देशों के ऊपर भी वायुमण्डल में छिद्र दिखाई दिए हैं।

ओजोन परत के क्षरण का कारण :– वर्तमान में ओजोन परत का क्षरण बहुत तेजी से हो रहा है, जिसके लिए प्राकृतिक कारणों के साथ–साथ मानवीय कारण भी उत्तरदायी हैं, जो निम्न हैं :–

- *CFC* ओजोन परत के क्षरण का एक प्रमुख कारण ओजोन परत में जो विघटन होता है, उसके लिए यह उत्तरदायी होती है।
- सफाई में प्रयोग किए जाने वाले विलयों में कार्बन टेट्राक्लोराइड पाया जाता है, जो ओजोन परत के लिए हानिकारक होता है।
- वाहनों व उद्योगों से विमुक्त होने वाली विषाक्त गैसें तथा घरेलू सामग्री से उत्पन्न गैसें।
- *HCFC*, मिथाइल क्लोरोफार्म तथा मिथाइल ब्रामाइड जैसे रासायनिक पदार्थ भी ओजोन परत के क्षरण के लिए उत्तरदायी है।

ओजोन परत के संरक्षण हेतु प्रयास :- जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण एवं ग्लोबल वार्मिंग को दखते हुए बीसवीं शताब्दी में संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य वैश्विक संगठनों ने पर्यावरण की सुरक्षा की बात करनी शुरू की ओजोन परत के क्षय के विषय में पहली बार वर्ष 1976 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की प्रशासनिक परिषद में विचार विमर्श किया गया।

वहीं भारत, ईरान, पाकिस्तान तथा खाड़ी देश आदि के लिए वर्ष 2028 से इस गैस के उत्सर्जन में कमी करने का प्रावधान किया गया।इसके लिए वर्ष 2047 तक वर्ष 2024-26 के स्तर से 85 प्रतिशत तक कमी लाने का प्रावधान किया गया।

ओजोन परत के क्षरण के प्रभाव :- समतापमण्डल में ओजोन अणुओं की कमी से अधिक मात्रा में पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंचती हैं, जो जीवन के सभी रूपों को कई तरह से हानि पहुंचा सकती है। ये त्वचीय कैंसर की दर बढ़ा सकती हैं, साथ ही उसे रूखा, झुर्रियों भरा और असमय बूढ़ा भी कर सकती हैं।

- ये मनुष्यों तथा जन्तुओं में तेज विकार, विशेषत: मोतियाबिन्द को बढ़ा सकती है।
- ये मनुष्य तथा जन्तुओं की रोगों से लड़ने की रोध-प्रतिरोधक क्षमता को भी कम कर सकती हैं।
- पराबैंगनी किरणें पौधों की पत्तियों का आकार छोटा कर सकती हैं तथा अंकुरण का समय भी बढ़ा सकती हैं।
- यह मक्का, चावल, सोयाबीन, मटर, गेहूं जैसी फसलों से प्राप्त होने वाल अनाज की मात्रा कम कर सकती हैं।
- प्लास्टिक के फर्नीचर, पाइप आदि सूर्य का प्रकाश पड़ने पर तेजी से खराब होंगे।

उपसंहार :- ओजोन परत का क्षय रोकने के लिये हमें कोई आवश्यक उपाय करने होंगे। इसके लिए सर्वप्रथम हमें जनसंख्या को स्थिर बनाए रखने की आवश्यकता है, क्योंकि जनसंख्या के बढ़ने से भौतिकवादी संस्कृति के विकास को अत्यधिक बढ़ावा मिलेगा जिससे औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

इसलिए पूरे विश्व में अधिक-से-अधिक पौधें लगाकर और उन्हें सुरक्षा प्रदान कर तथा लोगों में जागरूकता बढ़ाकर ओजोन परत के संरक्षण में सहयोग किया जा सकता है। यदि सम्पूर्ण मानव जगत मिल-जुलकर पर्यावरण के साथ मित्रवत व्यवहार करते हुए ओजोन परत का हितैषी बन जाए तो निश्चित ही आने वाले चार-पांच दशकों में ओजोन परत के छिद्र भसर जाएंगे।

रामायण की शिक्षा का विद्यार्थी जीवन में महत्व

करूणा तिवारी
बी.ए.द्वितीय वर्ष

1. बन्दऊ गुरू पद पदुम परागा, सुरूचि सुमास सरस अनुरागा।
अमिय मूरिमय चूरन चारू, शमन सकल भव रूज परिवारू।।

अर्थ- मैं गुरूदेव के चरणों की रज की वन्दना करता हूँ जो सुन्दर स्वाद, सुगन्धि तथा अनुराग मय है।
वह अमृत है बूटी का सुन्दर चूर्ण है जिससे सम्पूर्ण संसाररूपी रोगों का नाश हो जाता है।

2. श्री गुरू पद नख मन गन जोती,सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती।

अर्थ- गुरू के चरणें के नखों की ज्योति मणि-समूह के प्रकाश के समान है।
उसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य-दृष्टि हो जाती है।

3. बिन सतसंग विवके न होई,रामकृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगति मुद मंगल मूला,सोई फल सिधि सब साधन फूला।।

अर्थ- बिना सत्संग के ज्ञान नहीं होता,और यह सत्संग श्रीरामजी की कृपा के बिना मिलना सहज नहीं है।
सतसंगति आनन्द-मंगल की जड़ है,सिद्धि उसका फल है और सब साधन तो सके फूल हैं।

4. नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं, संत मिलन समय सुख जग नाहीं।
पर उपकार बचन मन काया, संत सहज सुभाऊ खगराया।।

अर्थ- जगत में दरिद्रता यानी गरीबी के समान कोई दुख नहीं है तथा संतो के समान जगत में कोई सुख नहीं है।
क्योंकि मन, वचन और शरीर से परोपकार करना ही संतों का सहज स्वभाव है।
महान संत या शिक्षक आपको अच्छे विचार देते हैं, जिससे आप समाज की भलाई के लिए काम करते हैं।

5. धीरज, धरम, मित्र भरू नारी। आपद काल परखिये चारी।।

अर्थ- बुरे समय में यह चार चीजें हमेशा परखीं जाती हैं,धैर्य,मित्र,पत्नी और धर्म।

6. जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू।सो तेहि मिलय न कछु सन्देहू।।

अर्थ- सत्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्य का सूर्य उदय जरूर होता है।
गुरू बिना ज्ञान न होत है, गुरू बिना दिशा अजान। गुरू बिन इन्द्रिय न सधें, गुरू बिन बढ़े न शान।।

Amazing facts of chemistry

हर्षिता खरे
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष

1. पानी जमने पर फैलता है। एक आईस क्यूब का आयतन इसे बनाने में प्रयुक्त तरल से अधिक है।
2. मरकरी और ब्रोमीन ही ऐसे तत्व हैं जो कमरे के तापमान पर ठोस से द्रव में बदलते हैं। यदि आप अपने हाथों में गैलियम की एक गाठ रखते हैं तो यह उनकी गर्मी से पिघलता है।
3. अगर आप एक कप में पानी लें और उसमें एक चम्मच नमक डालें तो पानी का स्तर बढ़ने की बजाय कम होता जाता है।
4. मानव शरीर में 200 ग्राम या 0.4 पौंड नमक होता है।
5. अब आप 1/2 लीटर पानी और 1/2 लीटर एल्कोहल मिलाते हैं तो मिश्रण 1 ग्राम से कम होता है।
6. पानी के $H2O$ को रासायनिक शब्दों में हाइड्रोजन मोनोआक्साइड कहते हैं।
7. अंधेरे में रेडियोधर्मी तत्व चमकते हैं।
8. ग एकमात्र ऐसा अक्षर है जो आवर्त सारणी में मौजूद नहीं है।
9. बिजली गिरने पर $O3$ या ओजोन उत्पन्न होती है। यह वातावरण की ओजोन परत को मजबूत रखता है।
10. ऑक्सीजन गैस का कोई रंग नहीं होता लेकिन ठोस व तरल में $O2$ नीला दिखाई देता।
11. तरल हवा पानी की तरह नीली होती है।
12. हीलियम का भार वायु से कम है इसलिए हीलियम हवा में तैर सकती है। अत: हीलियम के गुब्बारे हवा में तैरते हैं।
13. मंगल ग्रह पर जंग और आयरन की मात्रा अधिक होने के कारण मंगल लाल दिखाई देता है।
14. शरीर में 1 प्रतिशत पानी कमी होने से प्यास लगती है।

ऐ मंजिल मुझे तेरा ख्याल आया हैं

अर्पणा दुबे
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष बायो ग्रुप

सोच-सोच करमेरा मन डगमगाया है,
जकड़ा हुआ हूं जंजीरों में
आज इनको तोड़ने का विचार आया है
दिख रहा है नया सा रास्ता कोई

ऐ मंजिल मुझे शायद तेरा ख्याल आया है
पता नहीं कब तक चल पाऊंगा इस रास्ते पर
फिर भी मैंने कदम बढ़ाया है
मैं जानता हूँ मुश्किलें बहुत होगी

पर उनका सामना करने का मैंने साहस पाया है
बना रहूंगा अडिग जब आयेंगी मुश्किलें
न डरूँगा उनसे न कदम डगमगाऊँगा अपने
ठान लिया है सफल होने का

ऐ मंजिल चूम लूँगा एक दिन तुझे
संघर्षो ने कुछ यों मुझे तैयार किया है
सहम जाए तूफां भी देखकर ऐसा बदलाव किया है
आज आगे बढ़ने का विचार आया है
ऐ मंजिल मुझे शायद तेरा ख्याल आया है।

माँ

आरती लोधी
बी.एस.सी.प्रथम वर्ष

एक प्यारा सा एहसास, एक गहरा सा विश्वास है । माँ ।
सागर जावन का आधार है। माँ ।
मुश्किलों का सहारा, उलझनों का समाधान है । माँ ।
जब बहने लगे आंसू तो, खुशी का फूल है । माँ ।
जब टूटने लगे हौसला तो, एक नया तेज है। माँ ।
जब बुझने लगे शमा तो, एक नया ही प्रकाश है । माँ ।
वात्सल्य, करूणा, दया का खजाना है । माँ ।
जीवन की शुरूआत और सफलता का राज है । माँ ।
सृष्टि का श्रृंगार,धन का भंडार है। माँ ।
की देवी, शक्ति का रूप है। माँ ।
पत्थर सी कठोर, और फूलों सी सुंदर है । माँ ।
धरती से विशाल, पर्वत से ऊँची है । माँ ।
समुद्र से गहरी,बिजली सी तेज है । माँ ।
अश्कों पर मोती, जख्मों पर मरहम है। माँ ।
पराजय पर विजय, मौत पर जिंदगी है। माँ ।
माँ तू केवल माँ है तेरी कोई उपमाँ नहीं ।।''

अनमोल वचन

सोनम नेमा
एम.ए.प्रथम

आंखों में क्या है ?

पिता की आंखों में	–	फर्ज
माता की आंखों में	–	ममता
भाई की आंखों में	–	प्यार
बहिन की आंखों में	–	स्नेह
अमीर की आंखों में	–	घमण्ड
गरीब की आंखों में	–	आशा
मित्र की आंखों में	–	सहयोग
दुश्मन की आंखों में	–	बदला
सज्जन की आंखों में	–	दया

मध्य प्रदेश का भूगोल एक नजर में

मोहनी लोधी
बी.ए.द्वितीय वर्ष अर्थशास्त्र

- मध्यप्रदेश का गठन 1 नवम्बर 1956 को हुआ।
- मध्यप्रदेश का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आया।
- मध्यप्रदेश की भौगोलिक स्थिति – 216 उत्त्री अक्षंश 26.54 उत्तरी अक्षांश 74 पूर्वी देशांतर से 82.47 पूर्वी देशांतर के स्थित है।
- मध्यप्रदेश का क्षेत्रफल 3,08,245 वर्ग कि.मी. है।
- मध्यप्रदेश की भारत के कुल क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत की बराबर है।
- मध्यप्रदेश की सीमाएं 5 राज्यों से घिरा है
  (उत्तर में उत्तर प्रदेश पूर्व से छत्तीसगढ़ पश्चिम में राजस्थान व गुजरात तथा दक्षिण में महाराष्ट्र)
- मध्यप्रदेश पूर्व की सीमा रेखा–उत्तरी से दक्षिण 605 कि.मी. से पश्चिम 870 कि.मी.
- मध्यप्रदेश की राजधानी – भोपाल
- मध्यप्रदेश के जिले 51
- मध्यप्रदेश के संभाग 10
- मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा बड़ा राज्य है।
- मध्यप्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से छठवाँ राज्य है।
- मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से –

सबसे बड़ा संभाग – जबलपुर
सबसे छोटा संभाग – नर्मदापुरम्
सबसे छोटा जिला – छिंदवाड़ा
सबसे बड़ी तहसील – इंदौर
सबसे छोटी तहसील – अजयगढ़ (पन्ना)

- मध्यप्रदेश की साक्षरता – 70.6 प्रतिशत
- सर्वाधिक साक्षरता – जबलपुर (82.5 प्रतिशत)
- सबसे कम साक्षरता अलीराजपुर (37.2 प्रतिशत)
- मध्यप्रदेश लिंगानुपात 2011–9301 1000 प्रति हजार
- पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या
- सबसे अधिक लिंगानुपात – 1023 बालाघाट
- सबसे कम लिंगानुपात – 838 भिण्ड
- मध्यप्रदेश का एक मात्र हिल स्टेशन – पचमढ़ी (होशंगाबाद)
- मध्यप्रदेश का प्रथम पर्यटन नगर – शिवपुरी
- मध्यप्रदेश का प्रथम रत्न परिष्कृत केन्द्र – जबलपुर
- मध्यप्रदेश की जीवन रेखा – नर्मदा नदी 1312 कि.मी.
- मध्यप्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय – डॉ.0 हरिंसिंह गौर वि.वि. सागर
- मध्यप्रदेश की सबसे ऊंची चोटी – धूपगढ़ पचमढ़ी (1352 मीटर)

दैनिक जीवन में रसायन का महत्व

खुशी दुबे
प्रथम वर्ष

रसायनों के कारण ही कृषि में क्रांतिकारी प्रगति हो रही है। अनेक प्रकार के उर्वरकों आदि जिनसे खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और फसलों का विनाश करने वाले होते हैं।

रसायन शब्द का अर्थ इसका शाब्दिक विन्यास रस + आयन है इसका शाब्दिक अर्थ है रसों (द्रवों) का अध्ययन है। यह एक भौतिक विज्ञान है जिसमें पदार्थो के परमाणुओं, अणुओं किस्टलों (खो) और रासायनिक प्रक्रिया के दौरान मुक्त हुए या प्रयुक्त हुए ऊर्जा का अध्ययन किया जाता है। संक्षेप में रसायन विज्ञान रासायनिक पदार्थो का वैज्ञानिक अध्ययन है।

रसायन विज्ञान की खोज

भारतवर्ष में अथर्ववेद के युग में भगवान शंकर ने की थी। सो भगवान शंकर ने अथर्व वेद का ज्ञान दिया है। जिसमें आयुर्वेद के बारे में बताया गया है। (जड़ी बूटियों के रस) रस+आयन आयुर्वेद में रसायन चूर्ण होते हैं जो अर्क निकाल करके बनाए जाते हैं।

केमिस्ट्री शब्द की उत्पत्ति

आयुर्वेद के बारे में अनुसार जो जरा (बुढ़ापा) और लोगों के रोगों को नष्ट करे उसे रसायन कहा जाता है। रसायन शब्द रस आयन से मिलकर बना है।

इसका शाब्दिक अर्थ है रस प्राप्ति का मार्ग। उत्तम गुणों से युक्त रस आदि सात धातुओं को प्राप्त करते हैं उन्हें रसायन कहते हैं।

रसायन का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। परंपरागत रूप से रसायन विज्ञान को पांच मुख्य उप विषयों में विभाजित किया गया है। कार्बनिक, विश्लेषणात्मक, भौतिक अकार्बनिक और जैव रसायन।

कैमिस्ट्री की उत्पत्ति

शब्द की उत्पत्ति मिस्त्र देश के प्राचीन नाम कीमिया से हुई है इसका अर्थ है कालारंग लेवासिए (अपींळपश डर्रीेळीशी) को रसायन विज्ञान का जनक माना जाता है।

आधुनिक काल

इस काल का विकास 17वीं शताब्दी के अंतिम वर्षो मं हुआ या इस काल को दो भागों में बांटा गया था पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्ध भागों में विभाजित किया गया था :–

(1) पूर्वरार्ध :– यह 1800 से 1900 तक माना जाता है। रसायन की प्रगति इसी काल में हुई थी। परमाणुवाद, एवेगेडो की परिभाषा परिकल्पना व्हीलर द्वारा कार्बनिक यौगिक यूरिया का विकास, तत्वों का वर्गीकरण, आर्वत सारणी बनाई गयी तथा रसायन वितान के विकास की नींव डाली गयी। इस काल में डाल्टन ने सन् 1808 में परमाणु वाद दिया था।

(2) उत्तरार्द्ध :– यह सन् 1901 से अब तक काल माना गया है। इस युग का प्रारंभ मैडम प्यूरी रदरफोर्ड और एव बोहर ने परमाणु की खोज की इन्होंने रसायन को नए रूप में प्रस्तुत किया है। मास्टले, शोले डाल्टन भामा आदि हैं।

''रसायन एक महत्वपूर्ण है जो हमारे जीवन के लिये बहुमूल्य है।''

बहुउद्देशीय नदी-घाटी परियोजना

शिखा राय
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष

क्रमांक	परियोजना	नदी	राज्य
(1)	भाखरा बांगल परियोजना	सतलज नदी	पंजाब
(2)	इंदिरा गाँधी नहर परियोजना	सतलज-प्यास	राजस्थान
(3)	हीराकुंड बांध परियोजना	महानदी	ओडिसा
(4)	तुंगभद्रा परियोजना	तुंगभद्रा नदी	आंध्रप्रदेश
(5)	नागार्जुन सागर परियोजना	कृष्णा नदी	आंध्रप्रदेश
(6)	फरक्का परियोजना	भागीरथी नदी	पश्चिम बंगाल
(7)	काकरापारा परियोजना	ताप्ति नदी	गुजरात
(8)	उकाई परियोजना	ताप्ति नदी	गुजरात
(9)	रिहन्द परियोजना	रिहन्द नदी	उत्तरप्रदेश
(10)	इडुक्की परियोजना	पेरियार नदी	केरल
(11)	टिहरी बांध परियोजना	भागीरथी	उत्तराखंड
(12)	कोयना परियोजना	कामना नदी	महाराष्ट्र
(13)	सलाल परियोजना	चिनाव नदी	कश्मीर
(14)	स्वर्ण रेखा परियोजना	स्वर्ण रेखा नदी	झारखंड
(15)	शिवसमुद्रम परियोजना	कावेरी नदी	कर्नाटक
(16)	मेहूर बांध परियोजना	कावेरी नदी	तमिलनाडू
(17)	तेनूघाट बांध परियोजना	दामोदर नदी	झारखंड
(18)	दामोदर घाटी परियोजना	दामोदर नदी	झारखंड
(19)	सरदार घाटी परियोजना	नर्मदा नदी	गुजरात
(20)	दुलहस्ती परियोजना	चिनाव नदी	कश्मीर
(21)	अलमाटी बांध परियोजना	कृष्णा नदी	कर्नाटक
(22)	ममूराक्षी परियोजना	मयूरक्षी नदी	पश्चिम बंगाल

महत्वपूर्ण आविष्कार एवं आविष्कारक

शिवांगी शुक्ला
बी.एस.सी.द्वितीय वर्ष

आविष्कार	आविष्कारक
इलेक्ट्रॉन की खोज	जे.जे.थॉमसन
प्रोट्रॉन की खोज	गोल्डस्टीन
न्यूट्रॉन की खोज	जेम्स चैडविक
नाभिक की खोज	रदरफोर्ड
डायनेमो	माइकेल फैराडे
परमाणु सिद्धांत	जॉन डाल्टन
रेडियो सक्रियता	हेनरी बेक्केरेल
रेडियम की खोज	मैडम क्यूरी
डायनामाइट	अल्फ्रेड नोबेल
झकस्केल	एस.पी.सोरेन्सन
हाइड्रोजन	हैनरी केवेन्डिरा
हीलियम	लोकियर
नाइट्रोजन	रदरफोर्ड
ऑक्सीजन	शीले और प्रीस्टले
अक्रिय गैस, आर्गन	रैमजे और रैले
थोरियम	बर्जीलियस
टेलीविजन	जे.एल.बेयर्ड
बैरोमीटर	टोरिसेली
रेल इंजन	जार्ज स्टीफेंसन
ग्रामोफोन	एडिसन
दूरबीन	गैलेलियो
भाप इंजन	जेम्स वाट
विद्युत चुंबकीय प्रेरण	फैराडे
एक्स किरण	रोन्टेजन
लघुगणक	जॉन नेपियर

एक भारत श्रेष्ठ भारत

मेघा पाण्डेय
बी.ए.द्वितीय वर्ष

''अनेकता में एकता ही है, असली पहचान,
एक भारत श्रेष्ठ भारत कहलाए भारत महान।''

विविधता में एकता ही भारत देश की पहचान है, इसलिए हमारा भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। आदिकाल से ही हमारे राष्ट्र के लिए (एकता) को सबसे बड़े हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया है। एकता के बल पर ही हमारे देश ने मुगलों से लेकर अंग्रेजी तक के शासन को खत्म करने में विजय पाई। यही नहीं भारत की आजादी के समय जिस तरह हमारे राष्ट्र के सभी लोगों ने एकजुट होकर संघर्ष किया था और विजय हासिल की थी। यह भारत की एकता का सबसे बड़ा उदाहरण है। भारत में जाति, धर्म, पहनावा बोली, संस्कृति, रीति, रिवाज, परंपरा में काफी विविधता होने के बावजूद भी हमारे देश की एकता की मिसाल दी जाती है। वहीं भारत में एकता की इसी पहचान को बरकरार रखने के लिए और देश के राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार सरदार वल्लभ भाई पटेल के द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखंडता वाले ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' के निर्माण की नींव को पक्का करने के साथ राष्ट्र के सभी राज्यों की संस्कृति को समझने और आपसी संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के प्रयास से मोदी सरकार ने एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना की शुरूआत की है। यह योजना बड़े ही अच्छे ढंग से देश के भिन्न-भिन्न राज्यों को आपस में जोड़ सकती है। हम सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि हमें इस ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' योजना का हिस्सा बनकर इसमें बढ़ चढ़ कर भाग ले।

''एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना की शुरूआत''

भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' एक नयी और प्रभावशाली योजना एवं पहल है। जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की 140 वीं वर्षगांठ (31 अक्टूबर, 2015) के शुभ अवसर पर की गयी थी। इस योजना का उद्देश्य मौजूदा सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में एकता को बढ़ावा देना हे। इसका उद्देश्य उन भारतीयों के बीच संबंधों को सुधारणा है। जो पूरे देश में अलग-अलग भागों में रह रहे हैं। ये पहल लोगों को लोगों से जोड़ेगी वास्तव में भारत में एकता को बढ़ावा मिलेगा।

एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना का शुभारंभ सरकार द्वारा भारत के राज्यों के लिए किया गया है। जिसके अनुसार प्रत्येक वर्ष एक राज्य द्वारा किसी अन्य राज्य का चुनाव किया जाएगा और उस राज्य की भाषा, इतिहास, संस्कृति, ज्ञान विज्ञान आदि को अपनायेगा और उसको पूरे देश के सामने रखेगा।

इसके अगले वर्ष किसी अन्य राज्य का चुनाव किया जाएगा। इस प्रकार इस योजना को पूरे देश में चलाया जाएगा। जिस कारण राष्ट्र आपस में एक दूसरे से संगठित हो सकेंगे और एक दूसरे की भाषा को समझ सकेंगे और एक जिस वजह से अनेकता में एकता का विकास होगा।

''राज्यों को राज्यों से मिलाते चल जाएं देश को विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाएं।''

इस कार्यक्रम के जरिये सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की समृद्ध संस्कृति, विरासत, खान-पान, पहनावा, हस्तकला, संस्कृति, परम्परा, भाषा, रीति, रिवाजों से देश के लोगों को रूबरू कराया इस अभियान में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग राज्यों को जोड़ीदार बनाया गया। जैसे- उत्तराखंड और कर्नाटक, राजस्थान और असम आदि। जैसे इस साल उत्तराखंड, कर्नाटक की संस्कृति, भाषा, खानपान, पहनावा, रहन-सहन, पर्यटन, रीति-रिवाज, व्यवसाय आदि के बारे में जानेगा और समझेगा।

प्रतिवेदन : खेल विभाग-2022-23

कु. प्रिया थापा क्रीड़ाधिकारी

हर वर्ष की भांति उच्च शिक्षा म.प्र. शासन के आदेशानुसार प्राचार्य डॉ. जी.पी. चौधरी के मार्गदर्शन में महावि. में खेल की गतिविधियों का आयोजन किया गया।महावि. में सर्वप्रथम महावि. स्तर का आयोजन कुल 4 विधाओं के अंतर्गत किया गया जिसमें बैडमिंटन,शतरंज, फुटबॉल,खो-खो,व्हालीवॉल, कबड्डी, बास्केटवॉल इत्यादि विधायें सम्पन्न हुई। कुश्ती, हॉकी, क्रिकेट,जूडो, योगा एवं एथलेटिक्स निम्न विधाएँ आगामी माह में आयोजित की जाती हैं।महावि. की छात्राओं ने जिला स्तरीय खो-खो, शतरंज एवं बैडमिंटन जैसी प्रतियोगिता में विजेता प्राप्त की। खो-खो विधा में कु. प्रिया साहू, फुटवाल में कु. राजुल यादव, कु. भारती तिवारी, सुमन पटैल शतरंज में शिवानी पटैल ने राज्य एवं अन्तर्विश्वविद्यालय स्तर में भाग लिया।महावि. स्तर पर चयनित छात्राओं ने जिला स्तर, संभाग स्तर एवं राज्य स्तर पर आयोजित होने वाली विभिन्न खेल प्रतियोगिता में भाग लिया।महावि. में जिला स्तरीय खो-खो कबड्डी एवं व्हालीवॉल प्रतियोगिताएँ सम्पन्न कराई गई प्रतियोगिता सम्पन्न कराने में क्रीड़ा समिति एवं समस्त महावि. परिवार ने सहयोग प्रदान किया। आगामी माह में महावि. द्वारा जिला स्तरीय जूडो, हॉकी एवं संभाग स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी।

जिला स्तर शतरंज में – कु. शिवानी पटैल, अनुरागिनी रावत, अनुप्रिया रावत, सायना खान, सूरज सुमन

बैडमिंटन में – खुशी दुबे, महक खरे, अंकिता मिश्रा, वैष्णवी लोधी

व्हालीवॉल में – कु. करिश्मा दुबे, दीक्षा यादव, काजल सोनी, शिवानी पटैल, सुमन पटैल, रानू लोधी, अलका दुबे

बास्केटवॉल में – मोहिनी लोधी,मानषा देवलिया,सुमन पटैल,रानू लोधी,रंजनी लोधी,सरिता लोधी,अंजली सुमन, दीक्षा यादव

फुटवॉल में – भारती तिवारी, रंजनी लोधी, राजुल यादव, दीक्षा यादव, मोहिनी लोधी, सुमन पटैल, जानकी पटैल, मानषा देवलिया, दीपाली रजक, शाफिया अखतर, अर्चना अहिरवार, रानू लोधी

कबड्डी में – रंजनी लोधी, भारती तिवारी, मोहिनी लोधी,निशा लोधी, खुशी राजपूत, रविना राजपूत, अंजली राजपूत, सविता लोधी, दीपा लोधी, दिशा लोधी खो-खो में-करिश्मा दुबे,मोहिनी पटैल,वैष्णवी लोधी,प्रियपा साहू, प्राची साहू, अर्चना अहिरवार, रोहिणी पटैल, अलका दुबे,काजल सोनी,आरती चक्रवर्ती,दिशा लोधी।खेल प्रतियोगिता के आयोजन में महावि. के प्राचार्य डॉ. जी.पी. चौधरी की प्रभारी होने के कारण आभारी हूँ उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं समस्त स्टाफ का सहयोग हमेशा मिलता रहेगा ऐसी अपेक्षा करती हूँ।

सपनों में उड़ान भरो

सौरभ खरे

कुछ काम करो
न मन को निराश करो
पंख होगे मजबूत
तुम सपनों में साहस भरो

गिरोगे लेकिन फिर से उड़ान भरो
सपनों में उड़ान भरो
तलाश करो मंजिल की
न व्यर्थ जीवनदान करो

जग में रहकर कुछ नाम करो
अभी शुरूआत करो
सुयोग बीत न जाए कही
सपनों में उड़ान भरो

समझो खुद को लक्ष्य का ध्यान करो
यूँ ना बैठकर बीच राह में मंजिल का इंतजार करो
संभालो खुद को यूं ना विश्राम करो
सपनों में उड़ान भरो

हमारा महाविद्यालयः विकास पथ की ओर

डॉ.पी.एल.जैंन विभागध्यक्ष

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में 2019-2022 तक राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान भोपाल द्वारा मल्टीपरपज आडोटोरियम के लिये 1 करोड़ की राशि उपलब्ध कराई गई है। जिसका निर्माण हो गया है 40 लाख रूपये से कम्प्यूटर उपलब्ध कराये गये जिन्हें अभी *NR2* में रखा गया है साथ ही 60 लाख रूपये से दो कक्षों का निर्माण किया जा रहा है जो निर्माणाधीन है एक कक्ष का पुस्तकालय के लिये तथा दूसरा कक्ष भौतिक शास्त्र के लिये विस्तार किया जा रहा है।

म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा 3 करोड़ 86 लाख से 06 अध्यापन कक्ष का निर्माण किया जा रहा है जो प्रगति पर है।

नगर पालिका दमोह द्वारा लगभग 120 मी. नाले का निर्माण किया गया है।

महाविद्यालय में निर्माण कार्य

विश्व बैंक द्वारा महाविद्यालय को लगभग 48 लाख के फर्नीचर उपकरण उपलब्ध कराये गये हैं।

प्रतिवेदन : कम्प्यूटर विभाग

डॉ.पी.एल.जैंन
प्रभारी कम्प्यूटर विभाग

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह 2003 में वित्तीय मद द्वारा बी.ए./बी.एस.सी./बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन के साथ बी.सी.ए. पाठ्यक्रम पढ़ाये जा रहे हैं। इस वर्ष बी.सी.एस.-17, बी.ए./बी.एस.सी./बी.कॉम. में 860 छात्रायें अध्ययनरत हैं।नई शिक्षा नीति 20 के अंतर्गत कम्प्यूटर विभाग में डी.टी.पी., बेव डिजायनिंग, टेली के पाठ्यक्रम (वोकेशनल) पढ़ाये जा रहे हैं। जिसमें लगभग 600 छात्रायें अध्ययनरत हैं। साथ ही कम्प्यूटर मेन्टेनेन्स में डिप्लोमा के लिए आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। विश्वविद्यालय में अनुमति उपरान्त प्रारंभ किया जायेगा।बी.ए./बी.एस.सी./ बी.कॉम./ बी.एच.एस.सी. तृतीय वर्ष की लगभग 1650 छात्राओं को फाउंडेशन पढ़ाया जा रहा है।

प्रतिवेदन : गृह विज्ञान विभाग

डॉ. आराधना श्रीवास
सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान)

प्रतिवर्षानुसार महाविद्यालय प्रेरणा पुस्तिका का प्रकाशन 2022 में करने जा रहा है जो कि पूरे महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है प्रेरणा पुस्तिका के द्वारा महाविद्यालय की छवि आईने की तरह चमक कर सामने आती हैं। महाविद्यालय में गृह विज्ञान विभाग एक बड़े विभाग के रूप में जाना जाता है। गृह विज्ञान संकाय में बी.एच.एस.सी., एम.एच.एस.सी. एवं बी.ए. गृह विज्ञान की छात्राएँ यहाँ अध्ययन करती हैं। गृह विज्ञान विषय दमोह जिले में एकमात्र हमारे महाविद्यालय में है जिससे छात्राएँ लाभान्वित हो रही है। विभाग में डॉ. आराधना श्रीवास विभागाध्यक्ष, श्रीमती प्रीति वर्मा सहायक प्राध्यापक, श्रीमती सुरेखा बड़ौले सहायक प्राध्यापक एवं श्रीमती पूजा दुबे लैब अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यरत हैं।

गृह विज्ञान विभाग में सभी छात्राएँ अनुशासित होकर स्नेहभाव से नियमित रहकर गृह विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करती हैं। नई शिक्षा नीति वर्ष 2020 से लागू की गई है। जिसमें ओपन इलेक्टिव विषय में रंगाई एवं छपाई, प्राथमिक चिकित्सा उपचार एवं नर्सिंग एवं वस्त्र विज्ञान कॉलेज की छात्राओं को अध्ययन कराया जाता है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत वोकेशनल विषय के रूप में पोषण एवं नैदानिक आहार विषय गृह विज्ञान विभाग के द्वारा ही छात्राओं को पढ़ाया जा रहा है।

गृह विज्ञान विभाग में कुल 1700 छात्राएँ अध्ययन कर रही हैं तथा अपन लक्ष्यों को प्राप्त कर रही हैं। विभाग की पी.जी. छात्राओं के इस वर्ष परिणाम 100 प्रतिशत रहे हैं। वहीं यू.जी. की छात्राएँ भी अधिकतम अंकों से पास हुई हैं।

अध्ययन के अलावा भी छात्राएँ एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्पोर्ट्स एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेती हैं। दिन-प्रतिदिन प्राध्यापक एवं छात्राएं विभाग को विकास के पथ पर अग्रसर है। हम सभी को समय-समय पर महाविद्यालय के प्राचार्य का मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिलता रहता है।

प्रतिवेदन
मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह

डॉ.अवधेश कुमार जैन
संयोजक

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय दमोह में मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत दिनांक 1 नवंबर को प्रातः 8.00 बजे प्रभातफेरी का आयोजन संयुक्त रूप स्टेडियम से आरंभ हुआ जो शहर के विभिन्न स्थानों से होते हुए महाविद्यालय में समापन हुआ ।इसी के साथ प्रातः 11.30 बजे से आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश विषय पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी के मार्गदर्शन में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया । उन्होंने मध्यप्रदेश के गौरवमयी अतीत एवं वर्तमान में उभरते औद्योगिकीकरण मध्यप्रदेश के संदर्भ में पर विस्तृत चर्चा की डॉ एन पी नायक ने मध्यप्रदेश की स्थापना की इतिहास को प्रस्तुत किया। डॉ पी एल जैन ने आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के अंतर्गत लघु और कुटीर उद्योगों के संबंध में चर्चा की। डॉ अवधेश जैन ने आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के चार स्तंभों में स्वास्थ्य और शिक्षा एवं मध्यप्रदेश के साहित्य पर अपनी बात रखी। इसके पश्चात मध्यप्रदेश गान का आयोजन किया गया।

दिनांक 5 नवंबर को मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के अंतर्गत मध्यप्रदेश के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में 6 टीमों ने भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान हिमानी सोनी प्रियल साहू की टीम ने द्वितीय स्थान शिवानी शुक्ला तृतीय स्थान पांडे ने प्राप्त किया । इसके पश्चात बुंदेली संस्कृति पर आधारित दो नाटक अनपढ़ किसान जिसमें साक्षी पटेल अंशिका ठाकुर सृष्टि पटेल सोहेला फातिमा ठाकुर ने अभिनय किया।

दूसरा नाटक बुंदेली ब्याव जो बुंदेली शादी पर आधारित था जिसमें विवेचना, सोनी करुणा तिवारी, शिवानी विश्वकर्मा प्रगति पाठक हीरा विश्वकर्मा ने प्रस्तुत किया इसी के साथ लोक नृत्य में बुंदेली राई करुणा तिवारी अर्चना अहिरवाल और रोशनी लोधी ने संयुक्त रूप से अपनी प्रस्तुति दी। इसी के साथ में अंजलि विश्वकर्मा साक्षी चक्रवर्ती ने बधाई की प्रस्तुति दी इसी के साथ भाषण प्रतियोगिता में दुर्गेश विश्वकर्मा प्रथम सावित्री द्वितीय अंशिका ठाकुर तृतीय स्थान निबंध प्रतियोगिता में आलिया बानो साक्षी जैन प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान पर रही और अंत में लोक वाद्य यंत्र प्रतियोगिता में रोशनी ठाकुर तथा रागिनी पटेल ने हारमोनियम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवम बड़ी संख्या में छात्रायें उपस्थित रहीं।

प्रतिवेदन-युवा उत्सव 2022-23

डॉ.रेखा जैन
युवा उत्सव प्रभारी

युवा उत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय मे युवा उत्सव का आयोजन किया गया। युवा उत्सव के आयोजन हेतु प्राचार्य डॉ जी.पी.चौधरी की अध्यक्षता में युवा उत्सव प्रभारी डॉ. रेखा जैन ने बैठक आयोजित की जिसमें महाविद्यालय स्तर पर युवा उत्सव आयोजन का प्रारूप तैयार किया गया।

दिनांक 13/10/22 एवं 14/10/22 को महाविद्यालय स्तर पर युवा उत्सव का आयोजन किया गया जिसमें 22 विधाएं स्पॉट पेंटिंग रंगोली, पोस्टर,कोलाज क्ले मॉडलिंग एकल गायन वाद विवाद,प्रश्न मंच,एक नृत्य समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त छात्राओं ने जिला स्तर मैं छतरपुर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया में भाग लिया।

युवा उत्सव प्रतियोगिताओं के समापन के पश्चात प्राचार्य डॉ.जी.पी चौधरी ने प्रमाण पत्र प्रदान किये। युवा उत्सव प्रतियोगिता समस्या संपन्न कराने में सभी प्राध्यापको।। सह प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक एवं अतिथि विद्वानों एवं महाविद्यालय परिवार का सहयोग रहा। इस प्रतियोगिता की स्पॉट पेंटिंग में बृजनंदनी पटैल,पोस्टर निर्माण में कु. प्रिया बिल्थरे, कार्टूनिंग में रागनी पटैल,वक्तृता में अंजनी प्रजापति,वाद विवाद के पक्ष में शिवानी पटैल,तथा विपक्ष में कु. रिद्धी जैन,रंगोली में कु. नेहा ठाकुर,एकल नृत्य में रोशनी सेन,एकल गान में वैशाली रजक,समूह गायन में मेघा पाण्डेय,चंपा राठौर,महिमा गर्ग,विवेचना सोनी,तथा कोलाज में सोनम शर्मा विजयी रहीं ।

प्रतिवेदन
आजादी का अमृत महोत्सव

डॉ.अवधेश कुमार जैन
संयोजक

मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग मंत्रालय बल्लभ भवन भोपाल के आदेशानुसार स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत विविध प्रतियोगितायें एवं परिचचायें सुचारू रूप से संपादित हो रही है। इनमें परिचिर्चा स्वतंत्रता आंदोलन के स्थानीय नायक/ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी की अध्यक्षता एवं डॉ केपी राठौर सेवानिवृत्त प्राध्यापक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह के मुख्य आतिथ्य एवं शहर के गणमान्य नागरिक पत्रकार श्री गणेश अग्रवाल के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ।

इस अवसर पर डॉ राठौर ने स्वाधीनता आंदोलन के अमर शहीदों के साथ ही दमोह जिले के वीर सेनानियों के विविध संस्मरण का उल्लेख करते हुए छात्राओं को संबोधित किया। प्राचार्य डॉ जीपी चौधरी ने स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानियों के योगदान पर विस्तृत चर्चा करते हुए सभी को त्याग और समर्पण की भावना को आत्मसात करने की जरूरत पर जोर दिया।

कार्यक्रम संयोजक डॉ अवधेश जैन ने दमोह जिले के अमर शहीद हिण्डोरिया के राजा ठाकुर किशोर सिंह सिंग्रामपुर के राजा देवी सिंह,कारीजोग के राजा पंचम सिंह,दमोह के श्री यशवंत सिंह ठाकुर, शहीद प्रेमचंद जैन उस्ताद के योगदान पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ एन पी नायक ने अमर शहीदों को नमन करते हुए उनके मार्ग पर चलने की सभी के लिए प्रेरणा दी। इसी के साथ महाविद्यालय में विविध प्रतियोगिताओं चित्रकला में हर्षिता खरे,प्रियंका पटैल,मानसी राजपूत,निबंध प्रतियोगिता में निशा अहिरवाल,अरूणी मंसूरी,सोनम शर्मा,कविता लेखन,में ममता पटैल,कल्लों लोधी,रेखा लोधी,प्रेरक कहानी प्रतियोगिता में अभिलाषा लोधी,राधा कुर्मी, संगीता कुर्मी,फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में दीपांशी जैन,करूणा तिवारी,अंशिका ठाकुर,पोस्टर प्रतियोगता में फिरदोस बानों,राधा लोधी,आयुषी पारोचे,रंगोली प्रतियोगिता में नेहा गौड़,अंजो गौड़,साक्षी पटैल,भाषण प्रतियोगिता में करूणा तिवारी,प्रिया बिल्थरे,शिवानी असाटी,ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया ।इसमें भाषण प्रतियोगिता में कु. करूणा तिवारी ने दमोह जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

पुस्तकालय प्रतिवेदन

डी.पी.मेहरोलिया
ग्रंथपाल

शासकीय कमला नेहरू कन्या महाविद्यालय, दमोह स्थित यह पुस्तकालय एक सुदृढ़ पुस्तकालय है। पुस्तकालय किसी भी संस्था की रीढ़ होती है। किसी ने कहा है- **"An hur speut in the library; always brings a reward."**पुस्तकालय, पुस्तक क्रय किये बिना भी अध्ययन की सुविधा प्रदान कराने वाला केन्द्र होता है। जहां आप तरह तरह की पुस्तकें केवल थोड़ा सा समय व्यतीत करके पढ़ सकते हैं और ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

यह पुस्तकालय पाठ्यक्रमों की पुस्तकों के अलावा अन्य प्रकार की ज्ञानवर्धक पुस्तकों से सुसज्जित है, जैसे सामान्य ज्ञान, ऐतिहासिक,धार्मिक, राजनैतिक,खेलकूद आदि विषयों की पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं।इस पुस्तकालय में लगभग 32,000 पुस्तकों का संग्रह है, साथ ही एक स्वतंत्र कक्षा में ई-लायब्रेरी संचालित है, जिसका आई.टी., पासवर्ड लेकर शिक्षणगण और छात्राऐं निःशुल्क विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का अध्ययन कर रहे हैं।ई-लायब्रेरी में इन्फिलिब नेट की सदस्यता है, जिसकी बेवसाइट एन.लिस्ट पर हजारों पुस्तकों का भंडार है और कई तरह के जर्नल्स उपलब्ध हैं।पुस्तकालय के आटोमेशन का कार्य भी चल रहा है और कुछ महीनों में ही यह कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा।इस पुस्तकालय में उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन की अनुसूचित जाति एवं जनजाति की छात्राओं को प्रतिवर्ष 1500/- रूपये की पुस्तकें एवं रू 500/- की स्टेशनरी वितरित करने की महत्वाकांक्षी योजना भी चल रही है,जिसका लाभ छात्राऐं उठा रही हैं।अंत में आशा है पुस्तकालय का पाठकगण अधिक से अधिक उपयोग करके ज्ञान अर्जित करेंगे, जिससे पुस्तकालय के इस विचार की सार्थकता सिद्ध होगी।

महाविद्यालय में कार्यरत
अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्रमांक	प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक	पद	विषय
1.	डॉ.जी.पी.चौधरी	प्राचार्य	
2.	डॉ.पी.एल.जैन	प्राध्यापक	भौतिक शास्त्र
3.	डॉ.श्रीमती रेखा जैन	प्राध्यापक	भूगोल
4.	डॉ.श्रीमती अरूणा एम.जैन	प्राध्यापक	इतिहास
5.	डॉ.एन.पी.नायक	प्राध्यापक	वाणिज्य
6.	डॉ.अवधेश जैन	प्राध्यापक	हिन्दी
7.	डॉ.के.के.उमाहिया	प्राध्यापक	वाणिज्य
8.	डॉ.डी.के.नेमा	सह.प्राध्यापक	वाणिज्य
9.	डॉ.मुदिता प्रवीण श्रीवास्तव	सह.प्राध्यापक	समाजशास्त्र
10.	श्रीमती मालती नायक	सहा.प्राध्यापक	अंग्रेजी
11.	डॉ.आराधना श्रीवास	सहा.प्राध्यापक	गृहविज्ञान
12.	श्रीमती प्रीति वर्मा	सहा.प्राध्यापक	गृहविज्ञान
13.	श्रीमती सुरेखा बड़ोले	सहा.प्राध्यापक	गृहविज्ञान
14.	श्री दीपक कुमार सैनी	सहा.प्राध्यापक	वनस्पतिशास्त्र
15.	श्रीमती नयनतारा	सहा.प्राध्यापक	वनस्पतिशास्त्र
16.	डॉ.ब्रजेन्द्र सिंह कुसमरिया	सहा.प्राध्यापक	रसायनशास्त्र
17.	डॉ.पूजा जैन	सहा.प्राध्यापक	रसायनशास्त्र
18.	डॉ.असलम खान	सहा.प्राध्यापक	अर्थशास्त्र
19.	डॉ.अपर्णा गोस्वामी	सहा.प्राध्यापक	अर्थशास्त्र
20	कु.जया अहिरवार	सहा.प्राध्यापक	अर्थशास्त्र
21	डॉ.राधा ताम्रकार	सहा.प्राध्यापक	भौतिकशास्त्र
22	श्री ब्रजेश मौर्य	सहा.प्राध्यापक	राजनीतिशास्त्र
23	श्री प्रणव मिश्रा	सहा.प्राध्यापक	प्राणीशास्त्र
24	कु.भारती चौरसिया	सहा.प्राध्यापक	भूगोल
25	डॉ अयाज खान	सहा.प्राध्यापक	उूर्द
26	श्री देवीप्रसाद मेहरोलिया	ग्रंथपाल	-----

क्रमांक	अतिथि विद्वान	पद	विषय
30.	डॉ.शिरीन खान	अतिथि विद्वान	रसायन शास्त्र
31.	डॉ. ममता संघी	अतिथि विद्वान	हिन्दी
32.	श्री पंकज जैन	अतिथि विद्वान	हिन्दी
33.	कु. प्रिया थापा	अतिथि विद्वान	क्रीड़ा
34	डॉ. हरप्रीत सिंह कंधारी	अतिथि विद्वान	अर्थशास्त्र
35	श्रीमती अनुभा तिवारी	अतिथि विद्वान	अंग्रेजी
36.	श्री राजेश पौराणिक	अतिथि विद्वान	गणित
37.	डॉ. संगीता जग्गी	अतिथि विद्वान	राजनीति शास्त्र
38.	डॉ. अजय कुमार सिंह	अतिथि विद्वान	इतिहास
39.	डॉ. प्रिया तिवारी	अतिथि विद्वान	अर्थशास्त्र
40.	श्रीमति शिखा यादव	अतिथि विद्वान	रसायन
41.	श्री संतोष प्रजापति	अतिथि विद्वान	रसायन
42.	डॉ उमेश दीपकर	अतिथि विद्वान	समाजशास्त्र
43.	डॉ. आभा अग्रवाल	अतिथि विद्वान	वनस्पति
44.	डॉ. हरनाम सिंह राय	अतिथि विद्वान	वाण्जिय
45.	डॉ.चंद्रशेखर राठौर	अतिथि विद्वान	जूलाजी
46.	श्री दिनेश कुमार पटैल	अतिथि विद्वान	बादनी
47.	डॉ. संतोष भार्गव	अतिथि विद्वान	संस्कृत
48.	अनुभा सोधिया	अतिथि विद्वान	भौतिक

कार्यालयीन-कर्मचारी

1.	श्रीमती सोमी सिंह	सहा.ग्रेड ।।।
2.	श्री आर्यन सिंह राजपूत	सहा.ग्रेड ।।।
3.	श्री सत्यम दास	सहा.ग्रेड ।।।
4.	श्री आर्यन प्रताप सिंह राजपूत	सहा.ग्रेड ।।।

तकनीकी-कर्मचारी

1.	श्री एस.के.सिसोदिया	प्रयोगशाला तकनीशियन
2.	श्री रामलाल शर्मा	प्रयोगशाला तकनीशियन
3.	श्रीमती कुवंरवती भारती	प्रयोगशाला तकनीशियन

प्रयोगशाला परिचारक

1.	श्री सिद्धेलाल अहिरवार	प्रयोगशाला परिचारक
2.	श्री भगवत पटैल	प्रयोगशाला परिचारक
3.	श्री संतोष कुमार दुबे	प्रयोगशाला परिचारक
4.	श्रीमती विनीता बरेले	प्रयोगशाला परिचारक

तकनीकी-कर्मचारी		
1.	श्री रज्जन प्रसाद खंगार	भृत्य
2.	श्री सिद्धार्थ चौधरी	भृत्य

जनभागीदारी मद से कार्यरत्-कर्मचारी		
1.	श्री धनीराम दुबे	
2.	श्री सौरभ खरे	
3.	श्री विकास लखेरा	
4.	श्री हरीश कुमार दुबे	
5.	श्री केशव अहिरवार	
6.	कु.अंकिता दुबे	
7.	श्री राजकुमार दुबे	
8.	श्री शिवेंद्र सोलंकी	
9.	श्रीमती पूजा दुबे	
10.	श्री हरि सिंह	
11.	श्री पवन चौरसिया	
12.	श्री चतुर्भुज पटेल	
13.	श्रीमती पिंकी वाल्मीक	
14.	श्रीमती आशा बसोर	

शासकीय कमला नेहरू महिला महाविद्यालय,दमोह (म.प्र.)

महाविद्यालय परिवार

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.जी.पी.चौधरी एवं समस्त स्टाफ

प्रेरणा

मुद्रक-पी.के.प्रिंटर्स दमोह मो.9425196903